युवक

वर्ष - 03, अंक - 12, फरवरी, 2019

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील
श्रीधाम वृंदावन

सलाहकार सम्पादक
डॉ. प्रणवीर चौहान

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

वाइस प्रेसीडेंट
(सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरव सिंह

युवक

स्थानीय सम्पादक (मुंबई)
सोमदत्त शर्मा, फोन: 0992066585

ब्यूरो ऑफिस
लखनऊ **ब्रजगोपाल 'चंचल', फोन: 07669231877**
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क 340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)
बंगला नं. 4, जीवनी मंडी,
आगरा-282004, उत्तर प्रदेश
पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**

लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com

जरूर पढ़ें
दुखद घटना

22 गोली का जवाब तो गोली ही है

पुलवामा में सीआरपीएफ के 44 जवानों को देश ने एक आतंकी कार्रवाई में खो दिया है। जाहिर है कि सारे देश में इस घटना को लेकर भारी गुस्सा है, आक्रोश है। 125 करोड़ भारतीय स्तब्ध हैं, शोकाकुल हैं और जवाबी कारवाई के लिए आतूर हैं। अब इस भयावह हमले का गहराई से विश्लेषण भी चालू हो गया है। यह विश्लेषण तो कई दिनों तक चलता ही रहेगा। कहा यह जा रहा है कि खुफिया सूत्रों ने हमले की आशंका एक दिन पहले ही व्यक्त कर दी थी, फिर भी सुरक्षाबल ने इस ओर ध्यान क्यों नहीं दिया। जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल सतपाल मलिक ने भी माना है कि प्रशासन की तरफ से इस मामले में चूक हुई है। उन्होंने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में एक साथ जवानों की मूवमेंट नहीं होनी चाहिए थी।

शॉकिंग खबर
चिंताजनक

24 भयंकर हादसों में मुँह फेर कब तक सोते रहेंगे हम?

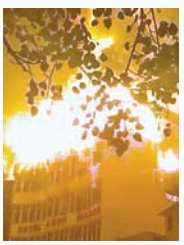

23 दिसम्बर,1995 को हरियाणा के मंडी डबवाली और 13 जून,1997 को राजधानी के उपहार सिनेमाघर में हुए दिल-दलहाने वाले अग्निकांडों के बाद 12 फरवरी,2019 की तिथि भी इन्हीं मनहूस तिथियों की सूची में शामिल हो गई है कराजधानी के खासमखास बाजार करोल बाग के होटल अर्पित पैलेस में 12 फरवरी को तड़के भीषण आग गई। आग की चपेट में आने से 17 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई।

जरूर पढ़ें
राजनीति

26 फिर आया इंदिरा-राजीव गांधी की शहदात...

राफेल डील विवाद पर दो तरह की बातें साफ तौर पर देखने में आ रही है। पहली, कुछ नेता अपने विरोधियों पर खुलकर गटर छाप और असभ्य भाषा का इस्तेमाल करके निशाना साध रहे हैं। दूसरी, कांग्रेस के कुछ नेता फिर से चुनाव से ठीक पहले जनता की सहानुभूति बटोरने के लालच से इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की शहादत को भुनाने में लग गए हैं।

आश्चर्यजनक
विडम्बनापूर्ण

10 अब संस्कृत हुई सांप्रदायिक

देश का वातावरण इस हद तक विषाक्त हो चुका है कि अब संस्कृत भाषा को भी सांप्रदायिकता के चश्मे से देखा जा रहा है। अब केन्द्रीय विद्यालयों में प्रतिदिन सुबह होने वाली प्रार्थना पर भी निशाना साधा जा रहा है। कहा जा रहा है कि यह संस्कृत प्रार्थना धर्मनिरपेक्ष भारत में नहीं होनी चाहिए। अब वो दिन दूर नहीं है जब केन्द्रीय विद्लाय के ध्येय वाक्य पर भी सवाल खड़े किए जाएंगे।

शख्सियत
इंटरव्यू

12 मैं आसानी से हार नहीं मानता

पिछले दिनों ही सम्पन्न हिन्दू साहित्य उत्सव में, कहानी-इतर श्रेणी में मूलतः अनपढ़ श्री व्यापारी को उनकी अंग्रेजी भाषा में रचित पुस्त इंटरेगेटिंग माई चांडाल लाइफ-एक दलित की आत्मकथा को अनुवादक प्रो. शिप्रा मुखर्जी के साथ जब पुरस्कृत किया तो उनके नैन सजल हो गए। उनके जीवन के कुछ अविस्मरणीय अनुभव।

46 मेरे पापा सिर्फ आप हैं (कहानी)
50 कविता

जवानों की खातिर

पुलवामा में हुए आतंकी हमले की पृष्ठभूमि में सरकार का यह फैसला खासा अहम है कि कश्मीर में तैनात अर्धसैनिक बलों के जवान अब दिल्ली-श्रीनगर, श्रीनगर-दिल्ली, जम्मू-श्रीनगर और श्रीनगर-जम्मू आने-जाने के लिए हवाई सफर कर सकेंगे। पुलवामा में सड़क मार्ग से गुजर रहे सीआरपीएफ के काफिले पर जैशे-ए-मोहम्मद के एक फिदायीन आतंकी हमले के चलते 40 जवानों के शहीद होने के गम से देश अभी उबर नहीं पाया है। हमले के बाद यह भी कहा गया कि सीआरपीएफ ने जवानों के लिए हवाई यात्रा की इजाजत मांगी थी, लेकिन वह संभव नहीं हो पाया।

यह भी कि अगर जवानों को हवाई सफर की सुविधा मिल गई होती तो देश को इतना बड़ा सदमा नहीं झेलना पड़ता। गृह मंत्रालय ने हालांकि इजाजत मांगने संबंधी खबरों का खंडन किया, लेकिन यह सच है कि अर्धसैनिक बलों के जवान सामान्य स्थितियों में हवाई सफर के लिए अधिकृत नहीं थे। फिलहाल एक साल के लिए की गई इस व्यवस्था के मुताबिक केंद्रीय सशस्त्र अर्धसैनिक बलों के जवान छुट्टियों पर ही नहीं, ड्यूटी पर भी आने-जाने के लिए इस सुविधा का इस्तेमाल कर सकेंगे। इस फैसले से न केवल अर्धसैनिक बलों, बल्कि पूरे देश में यह संदेश जाएगा कि सरकार के लिए अर्धसैनिक बलों की सुरक्षा का सवाल भी सेना की सुरक्षा जितना ही अहम है। इस लिहाज से यह एक जरूरी फैसला है। मगर, जिन हालात में जवानों का कश्मीर में सड़क मार्ग से जाना इतना असुरक्षित हो गया है, उन्हें जल्दी बदलने की जिम्मेदारी भी इन जवानों पर ही है। जम्मू-कश्मीर में सक्रिय आतंकी शक्तियों में यह संदेश हरगिज नहीं जाना चाहिए कि वे भारतीय सुरक्षा बलों को सड़क से हटाने में सफल हो गए हैं।

हां, हवाई सफर की सुविधा जवानों की ऊर्जा और उनका समय बचाती है, लिहाजा इसे आगे भी जारी रखा जाए और उनकी शक्ति का उपयोग लोकल दबिश बढ़ाने में किया जाए। ध्यान रहे, सेना और अर्धसैनिक बलों के जवानों को घाटी में बेहद कठिन लड़ाई लड़नी पड़ रही है। यह वैसी लड़ाई नहीं है जिसमें दुश्मन की पहचान तय होती है। सीमा के अंदर चलने वाली इस लड़ाई में उन्हें बेकसूर नागरिकों की भीड़ में छुपे दुश्मनों का सामना करना है। ऐसे में सरकार तो अपना काम करेगी ही, देश के सामान्य नागरिकों की भी यह जिम्मेदारी है कि कश्मीर के आम लोगों पर गुस्सा जताकर वहां सुरक्षा बलों के काम को और मुश्किल न बनाएं। आम कश्मीरी इस देश के बाकी भू-भाग से जितना अपनापन महसूस करेगा, आतंकी तत्वों को अलग-थलग करके उन पर अंकुश लगाने में उतनी ही आसानी होगी। सुरक्षा बलों का मनोबल बढ़ाना और उनके साथ डट कर खड़े रहना अभी जितना जरूरी है, कश्मीर का माहौल सुधारने में अपना योगदान करना उससे कम जरूरी नहीं है। ■

पुलवामा में हुए आतंकी हमले की पृष्ठभूमि में सरकार का यह फैसला खासा अहम है कि कश्मीर में तैनात अर्धसैनिक बलों के जवान अब दिल्ली-श्रीनगर, श्रीनगर-दिल्ली, जम्मू-श्रीनगर और श्रीनगर-जम्मू आने-जाने के लिए हवाई सफर कर सकेंगे।

डॉ. वंदना पालीवाल

यही तो हैं सार्थक जीवन की राहें

ऐसा व्यक्ति शायद ही कोई मिले जिसे जीवन में किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं झेलने पड़े हों। कुछ पाकर खो देने का डर, कुछ न पा सकने का भय, जिन्दगी के पटरी से उतर जाने की चिन्ता- जिन्दगी इन्हीं छोटी-छोटी चिन्ताओं और ऐसे छोटे-छोटे डरों से घिरी रहती है। एक नहीं, अनेकों के जीवन में ऐसे अवसर आते हैं जब वे टूट जाते हैं। लेकिन जिस वक्त हम ठान लेते है कुछ नया करना है, तभी जन्म लेता है साहस।

गुरु स्वरूप श्रीवास्तव

ऐसे बहुत से साहसिक व्यक्तित्व हैं जिन्होंने दुखों को सहा, अभावों को जिया लेकिन हिम्मत नहीं हारी, आशा नहीं त्यागी और वे न केवल जिन्दा रहे अपितु एक शानदार, सार्थक जिन्दगी जी गये। सब अच्छा होगा, यह सोच लेने से ही सब ठीक नहीं हो जाता। ना ही बुरा सोचते रहने से ही सब बुरा हो जाता है। सोच का असर पड़ता है, पर अंत में जो बात मायने रखती है वो यह कि आप करते क्या हैं? क्या होना चाहते हैं? क्या पाना चाहते हैं? लेखक विलियम आर्थर वार्ड कहते हैं, निराशावादी हवा की गति की शिकायत करता है। आशावादी उसके बदलने की उम्मीद रखता है, लेकिन यथार्थवादी हवा के साथ नाव का तालमेल बिठाता है।

दुख और सुख तो जीवन से इस प्रकार जुड़े हैं जैसे कि सूरज का उगना और अस्त होना और जो इस सत्य को नहीं स्वीकारते हैं वे सही सोचते हैं कि दुख केवल उनके ही हिस्से में आया है। यदि हम चारों ओर देखें तो इतने सारे लोग दुखी हैं कि उस पर गौर करें तो आपका दुख दुख नहीं रह जायगा। एक चीनी कहावत है, मुझे अपने पास जूते न होने का अफसोस तभी तक ही था जब तक कि मैंने एक ऐसे व्यक्ति को नहीं देख लिया जिसके कि पांव ही नहीं थे। वस्तुतः हमारे पास ऐसा बहुत कुछ है जो अनेकों के पास नहीं है, लेकिन हम हमारी कमी, हमारे कष्ट में इतना खो जाते हैं कि जो है उसको नहीं देख पाते और जो नहीं है या खो गया है उसी का रोना रोते रहते हैं। कोई दिन होता है, जब कुछ अच्छा नहीं होता।

गलतियों पर गलतियां होती चली जाती हैं। रात में आराम के वक्त भी दिन भर का तनाव और हड़बड़ी पीछा नहीं छोड़ते। जरूरत होती है हमें उस बुरे दिन को भूलने की, पर हम नहीं कर पाते। हम आने वाले दिन के लिए भी शंकाओं से घिर जाते हैं। लेखिका एल. एम मॉन्टगोमेरी लिखती हैं, क्या यह सोचना बेहतर नहीं है कि आने वाला कल, एक नया दिन है, जिसमें फिलहाल कोई गलती नहीं हुई है।

जीवन को वही जी सकता है, वही इसका उपभोग कर सकता है जो संघर्ष के लिये तत्पर हो, जिसमें साहस और दृढ़ता हो। संकट और मुसीबतें तो आयेंगी, उन्हें कोई नहीं रोक सकता, हां हम उनका मुकाबला अवश्य कर सकते हैं। यह सामना करना ही तो जीवन को जीना है। जर्मन विद्वान गेटे ने इसीलिए कहा था- तुम जो भी करना या सपना लेना चाहते हो, उसे आरंभ करो। साहस में प्रतिभा, शक्ति व जादू है। आरंभ करो, काम पूरा हो जाएगा। द्वितीय महायुद्ध में हीरोशिमा और नागासाकी नगरों पर आणविक बमों की बौछार से बरबाद हुई अर्थ व्यवस्था से उबरकर पुनः सक्षम एवं उन्नत राष्ट्र बनकर जापान ने बता दिया कि वह सकारात्मक सोच और आशावादी चिन्तन का धनी है। सचमुच साहस एवं कुछ नया करने की जिजीविषा ही है जो हमें मंजिलों तक ले जाती है। कोई भी संकल्प बिना हौसले के पूरा नहीं होता। पत्थरों को आपस में रगड़ते हुए इंसान चिनगारियों से डरा होता तो आग न पैदा होती। बुद्ध ने घर छोड़ने का साहस न दिखाया होता या महावीर राजमहलों के सुखों में ही खोये रहते तो हम अज्ञान से ही घिरे रहते। अंग्रेजों से टकराने की हिम्मत थी, तभी हमें आजादी मिली। जिन्दगी के हर लम्हें में, हर मोड़ पर, हर जर्रे में साहस, हिम्मत और कुछ नया करने का जज्बा जरूरी है। हिम्मत और साहस ऐसे नायाब गुण है, जिनके जरिये हर राह आसान होती है, हर सफर तय करना मुमकिन होता है। श्रीराम भक्त हनुमान का व्यक्तित्व कड़ी से कड़ी चुनौतियों का आत्म-विश्वास के साथ सामना करने व उन पर विजय पाने का प्रतीक है। सीता की खोज में लंका जाने के लिये सौ योजन अथवा चार सौ कोस लम्बे समुद्र को लांघने का प्रश्न उठने पर सम्पूर्ण वानर सेना में चुप्पी छा जाने पर जामवन्त ने हनुमान का आत्मविश्वास जगाया, उनके साहस और हिम्मत को ललकारा। तब एकाएक हनुमान में साहस जागा, तब हनुमान की क्रियाशीलता देखिये। इतनी लम्बी दूरी के समुद्र को लांघते देख मेनाक पर्वत ने समुद्र के बीच से ऊपर उठकर राम-दूत हनुमान से तनिक विश्राम करने का अनुरोध किया, किन्तु हनुमान ने इस रूप में यह अनुरोध ठुकरा दिया- हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम।।

अविराम गति से समुद्र लांघकर सुरसा, लंकिनी आदि की बाधाओं को पार कर, रावण के योद्धाओं से संग्रामकर, रावण के पूंछ जला देने पर सारी लंका

अपराध, शोक, असफलता, अभाव के बावजूद भी हमें जीवन से प्यार होता है, हम जीना चाहते हैं, हम मरना नहीं चाहते, हम गहरी काली रात को भी सहन करते हैं कि क्योंकि हम जानते हैं कि सुबह अवश्य होगी। आशा हमें संकटों से जुझने एवं संघर्षशील होने की शक्ति देती है।

जलाकर सीताजी से मिलकर हनुमानजी ने सफल अभियान किया था। अमेरीका के राष्ट्रपति रहे जिमी कार्टर एक मूंगफली बेचने वाले पिता के पुत्र थे और युवावस्था में अमेरीकी सैनिक अकादमी से प्रशिक्षण पाकर नियुक्ति हेतु साक्षात्कार बोर्ड के समक्ष उपस्थित हुए तो उनसे पूछा गया कि अपने सहपाठियों में मेरिट में उनका कौन-सा स्थान था। कार्टर 900 साथी प्रशिक्षणार्थियों की कक्षा में 53 वें उच्च स्थान पर थे, यानी 847 विद्यार्थी उनसे कम श्रेष्ठ व जूनियर थे, अतः वे गर्व से बोले कि 53वें उच्च स्थान पर थे। लेकिन बोर्ड के मानद सदस्य ने तपाक से उनसे प्रश्न किया- अव्वल या श्रेष्ठतम क्यों नहीं? और अपनी घुमावदार कुर्सी को घुमाकर उनके सामने से अपना चेहरा हटा लिया। जिमी कार्टर को इस घटना से सबक मिला और आशावादी बनकर सकारात्मक सोच, साहस एवं कठिन परिश्रम के बल पर हर क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करने का निश्चय किया। तथा अन्ततः अमेरीका के प्रथम नागरिक और राष्ट्राध्यक्ष बने। पश्चिमी एशिया शांति प्रयास के लिये नोबल पुरस्कार से भी नवाजे गये। कहने का तात्पर्य यही है कि हमें व्यक्तित्व निर्माण और जीवन में सफलता के लिये आशावादी, सकारात्मक सोच, साहस, हिम्मत और निरंतर श्रमशील रहने की आवश्यकता है। हमारे शरीर की प्रत्येक कोशिका की संरचना ही ऐसी है कि वह जीवित रहने के लिये संघर्ष करती रहे। हमारा शरीर हमेशा संघर्ष को तैयार रहता है, यह उसकी स्वाभाविक प्रक्रिया है लेकिन मन की निर्बलता उसे कमजोर बना देती है। जीवन एक ऐसा दीपक है जिसका उद्देश्य ही प्रकाश बिखेरना है, जीवन एक वरदान है, एक उपहार है, इसको आनंद के साथ, साहस के साथ जीना ही श्रेयस्कर है। हमारा परिवेश हमारी कामयाबी पर असर डालता है। पर यही सब कुछ नहीं होता। इतिहास ऐसे लोगों की सफलता से भरा है, जिन्होंने अभावों से निकलकर बुलंदियों को छुआ है। घाना के लेखक इजरायलमोर अइवोर कहते हैं, ह्यपेंसिल के आसपास क्या है, इससे कहीं अधिक मायने हैं, जो उसके भीतर है। हमारी योग्यता हमारे आसपास से कहीं अधिक होती है। उसी से परिवेश बदलता है। अपराध, शोक, असफलता, अभाव के बावजूद भी हमें जीवन से प्यार होता है, हम जीना चाहते हैं, हम मरना नहीं चाहते, हम गहरी काली रात को भी सहन करते हैं कि क्योंकि हम जानते हैं कि सुबह अवश्य होगी। आशा हमें संकटों से जुझने एवं संघर्षशील होने की शक्ति देती है। अतः जीवन को जीने हेतु आशा में आस्था अपरिहार्य है। चेतना एवं नई प्रेरणा सहित स्वयं में आस्था के साथ आगे बढ़ें सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुये तो निश्चय ही आप अच्छा अनुभव करेंगे। और यही तो है जीवन को जीने की राह, जीवन को जीने का मर्म। ■

लेखक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कला प्रेमी एवं सामाजिक चिंतक हैं

हिन्दी भारत की अदालतों में भी प्रतिष्ठित हो

संयुक्त अरब अमीरात याने दुबई और अबूधाबी ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अरबी और अंग्रेजी के बाद हिंदी को अपनी अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल कर लिया है। इसका मकसद हिंदी भाषी लोगों को मुकदमे की प्रक्रिया, उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में सीखने में मदद करना है। न्याय तक पहुंच बढ़ाने के लिहाज से यह कदम उठाया गया है। अमीरात की जनसंख्या 90 लाख है। उसमें 26 लाख भारतीय हैं, इन भारतीयों में कई पढ़े-लिखे और धनाढ्य लोग भी हैं लेकिन ज्यादातर मजदूर और कम पढ़े-लिखे लोग हैं।

मनोज कुमार

जिलों में राज्य सरकारें अपना काम-काज अंग्रेजी में करती हैं

कितने दुख की बात है कि आजादी के 72 साल बाद भी हमारे दूर-दराज के जिलों में राज्य सरकारें अपना काम-काज अंग्रेजी में करती हैं। हिन्दी विश्व की एक प्राचीन, समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है, यह हमारे अस्तित्व एवं अस्मिता की भी प्रतीक है, यह हमारी राष्ट्रीयता एवं संस्कृति की भी प्रतीक है। भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। इस महत्वपूर्ण निर्णय के बाद ही हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रचारित-प्रसारित करने के लिए 1953 से सम्पूर्ण भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाता है। राजभाषा बनने के बाद हिन्दी ने विभिन्न राज्यों के कामकाज में आपसी लोगों से सम्पर्क स्थापित करने का अभिनव कार्य किया है। लेकिन अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण आज भी हिन्दी भाषा को वह स्थान प्राप्त नहीं है, जो होना चाहिए। चीनी भाषा के बाद हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। भारत और अन्य देशों में 70 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। पाकिस्तान की तो अधिकांश आबादी हिंदी बोलती व समझती है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी लाखों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। फिजी, सुरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद जैसे देश तो हिंदी भाषियों द्वारा ही बसाए गये हैं। हिन्दी का हर दृष्टि से इतना महत्व होते हुए भी भारत में प्रत्येक स्तर पर इसकी इतनी उपेक्षा क्यों? शेक्सपीयर ने कहा था-दुर्बलता! तेरा नाम स्त्री है। पर आज शेक्सपीयर होता तो आम भारतीय एवं सरकारों के द्वारा हो रही हिन्दी की उपेक्षा के परिप्रेक्ष्य में कहता-दुर्बलता! तेरा नाम भारतीय जनता एवं शासन व्यवस्था है। क्योंकि दुनिया में हिन्दी का वर्चस्व बढ़ रहा है, लेकिन हमारे देश में ऐसा नहीं होना, इन्हीं विरोधाभासी एवं विडम्बनापूर्ण परिस्थितियों को ही दर्शाता है।

इन लोगों के लिए अरबी और अंग्रेजी के सहारे न्याय पाना बड़ा मुश्किल होता है। इन्हें पता ही नहीं चलता कि अदालत में वकील क्या बहस कर रहे हैं और जजों ने जो फैसला दिया है, उसके तथ्य और तर्क क्या हैं? ज्वलंत प्रश्न है कि विदेशों में बसे भारतीयों की इस तकलीफ का ध्यान रखने का निर्णय लिया गया है तो भारत में ऐसे निर्णय क्यों नहीं लिये जाते? प्रश्न यह भी है कि विदेशों में ही क्यों बढ़ रही है हिन्दी की ताकत? झकझोरने वाला प्रश्न यह भी है कि राष्ट्र भाषा हिन्दी को आजादी के 72 वर्ष बीत जाने पर भी अपने ही देश में क्यों घोर उपेक्षा का सामना करना पड़ रहा है? हिन्दी की उपेक्षा राष्ट्रीय शर्म का विषय है, जबकि विश्व में हिन्दी की ताकत बढ़ रही है। भारत सरकार के प्रयत्नों से हिन्दी को विश्वस्तर पर प्रतिष्ठापित किया जा रहा है, यह सराहनीय बात है। लेकिन भारत में उसकी उपेक्षा कब तक होती रहेगी, यह प्रश्न भी सरकार के लिये सोचनीय होना चाहिए है।

हिन्दी को कानून की भाषा बनाने का जो काम भारत में सबसे पहले होना चाहिए था, वह काम संयुक्त अरब अमारात कर रहा है, इसके लिये अबू धाबी के शेख मंसूर अल नाह्यान बधाई के पात्र हैं, उनके इस निर्णय का स्वागत ही नहीं करना चाहिए, उससे कुछ सीख भी लेनी चाहिए। भारत की अदालतों में आजादी के 70 साल बाद भी भारतीय भाषाओं का इस्तेमाल नहीं होता। सर्वोच्च न्यायालय तो अभी भी अंग्रेजी में ही सारे काम-काज के लिये अड़ा हुआ है। वहां मुकदमों की बहस अंग्रेजी में ही होती है। जहां बहस अंग्रेजी में होती है, वहां फैसले भी अंग्रेजी में ही आते हैं। अभी सुना है कि उनके हिंदी अनुवाद की बात चल रही है। बात केवल कानून के सर्वोच्च संस्थान की ही नहीं है, बल्कि समस्त सरकारी कामकाज भी अंग्रेजी में ही होता है, उच्च शिक्षा भी अंग्रेजी में ही दी जा रही है, यहां तक प्राथमिक-माध्यमिक शिक्षा में भी अंग्रेजी का ही बोलबाला है, कैसे हम अपनी भाषा को प्राथमिकता देंगे? कब भारत के भाग्य निमार्ता हिन्दी को जनभाषा, राजकाज की भाषा एवं कानून की भाषा का दर्जा देकर बधाई के पात्र बनेंगे? भारत एक है, संविधान एक है। लोकसभा एक है। सेना एक है। मुद्रा एक है। राष्ट्रीय ध्वज एक है। लेकिन इन सबके अतिरिक्त बहुत कुछ और है जो भी एक होना चाहिए। बात चाहे राष्ट्र भाषा की हो या राष्ट्रगान या राष्ट्रगीत- इन सबको भी समूचे राष्ट्र में सम्मान एवं स्वीकार्यता मिलनी चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार को चाहिए कि वह ऐसे आदेश जारी करे जिससे सरकार के सारे अंदरुनी काम-काज भी हिन्दी में होने लगे और अंग्रेजी से मुक्ति की दिशा सुनिश्चित हो जाये। अगर ऐसा होता है तो यह राष्ट्रीयता को सुदृढ़ करने की दिशा में एक अनुकरणीय एवं सराहनीय पहल होगी। ऐसा होने से महात्मा गांधी, गुरु गोलवलकर और डॉ. राममनोहर लोहिया का सपना साकार हो सकेगा। देश की जनता भी हिन्दी को उचित सम्मान दें एवं उसे अपने जीवन में प्रतिष्ठापित करें। भारतीय जनता की दुर्बलता एवं सबसे बड़ी कमजोरी रही है कि हिन्दी को उसका उचित स्थान और सम्मान नहीं मिल पाया है। नेता हो या जनता-हिन्दी की यह दुर्दशा एवं उपेक्षा सोचनीय है। अत्यन्त सोचनीय है। खतरे की स्थिति तक सोचनीय है कि आज का तथाकथित नेतृत्व दोहरे चरित्र वाला, दोहरे मापदण्ड वाला बना हुआ है। उसने कई मुखौटे एकत्रित कर रखे हैं और अपनी सुविधा के मुताबिक बदल लेता है, यह भयानक स्थिति है। इसी कारण हिन्दी को आज भी दोयम दर्जा हासिल है।

विदेशमंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के प्रयासों से विदेशों में हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ रही है, एक नया विश्वास जगा है कि वैश्विक स्तर पर हिंदी को मान्यता दिलाने के सरकार के प्रयास सफल होते दिखाई पड़ रहे हैं। विश्व हिन्दी सम्मेलन 1975 से लेकर भोपाल में आयोजित 2018 के सम्मेलन तक बार-बार यह प्रश्न खड़ा होता रहा है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी कब अधिकारिक भाषा बनेगी? हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी राष्ट्र एवं राज भाषा हिन्दी का सम्मान बढ़ाने एवं उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को नयी ऊंचाई देने के लिये अनूठे उपक्रम किये हैं। हिन्दी को उसका गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिये नरेन्द्र मोदी एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी के प्रयत्नों को राष्ट्र सदा स्मरणीय रखेगा। क्योंकि मोदी ने सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण देकर न केवल हिन्दी को गौरवान्वित किया बल्कि देश के हर नागरिक का सीना चौड़ा किया। सबसे पहले 1977 में हिंदी में भाषण दिया था अटल बिहारी बाजपेयी ने। उस वक्त वे जनता पार्टी सरकार में विदेश मंत्री थे और यूएन में भारत की अगुवाई कर रहे थे। संयुक्त राष्ट्र में किसी भी भारतीय के पहले हिंदी भाषण का पूरे देश में जोरदार स्वागत हुआ था। उनके भाषण की जगह-जगह चर्चा होती थी। इसके बाद उन्होंने सन 2002 में भारत के प्रधानमंत्री के रूप में दोबारा इस अंतरराष्ट्रीय मंच से हिंदी में अपनी बात रखी थी। लेकिन प्रश्न यह है कि दोनों ही सक्षम नेताओं ने हिन्दी को अपने ही देश में क्यों उपेक्षित रहने दिया। क्या कारण है कि आजादी के 70 साल बाद भी सरकारें अपना काम-काज अंग्रेजी में करती हैं, यह देश के लिये दुर्भाग्यपूर्ण एवं विडम्बनापूर्ण स्थिति है।

सच्चाई तो यह है कि देश में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को जो सम्मान मिलना चाहिए, वह स्थान एवं सम्मान अंग्रेजी को मिल रहा है। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं की सहायता जरूर ली जाए लेकिन तकनीकी एवं कानून की पढ़ाई के माध्यम के तौर पर अंग्रेजी को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। क्योंकि इससे राष्ट्रीयता कमजोर होती है। राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय प्रतीकों की उपेक्षा एक ऐसा प्रदूषण है, एक ऐसा अंधेरा है जिससे ठीक उसी प्रकार लड़ना होगा जैसे एक नन्हा-सा दीपक गहन अंधेरे से लड़ता है। छोटी औकात, पर अंधेरे को पास नहीं आने देता। राष्ट्र-भाषा को लेकर छाए धूंध को मिटाने के लिये कुछ ऐसे ही ठोस कदम उठाने ही होंगे। विकास की उपलब्धियों से हम ताकतवर बन सकते हैं, महान नहीं। महान उस दिन बनेंगे जिस दिन हिन्दी को उचित स्थान एवं सम्मान देंगे। ■

अब संस्कृत हुई सांप्रदायिक

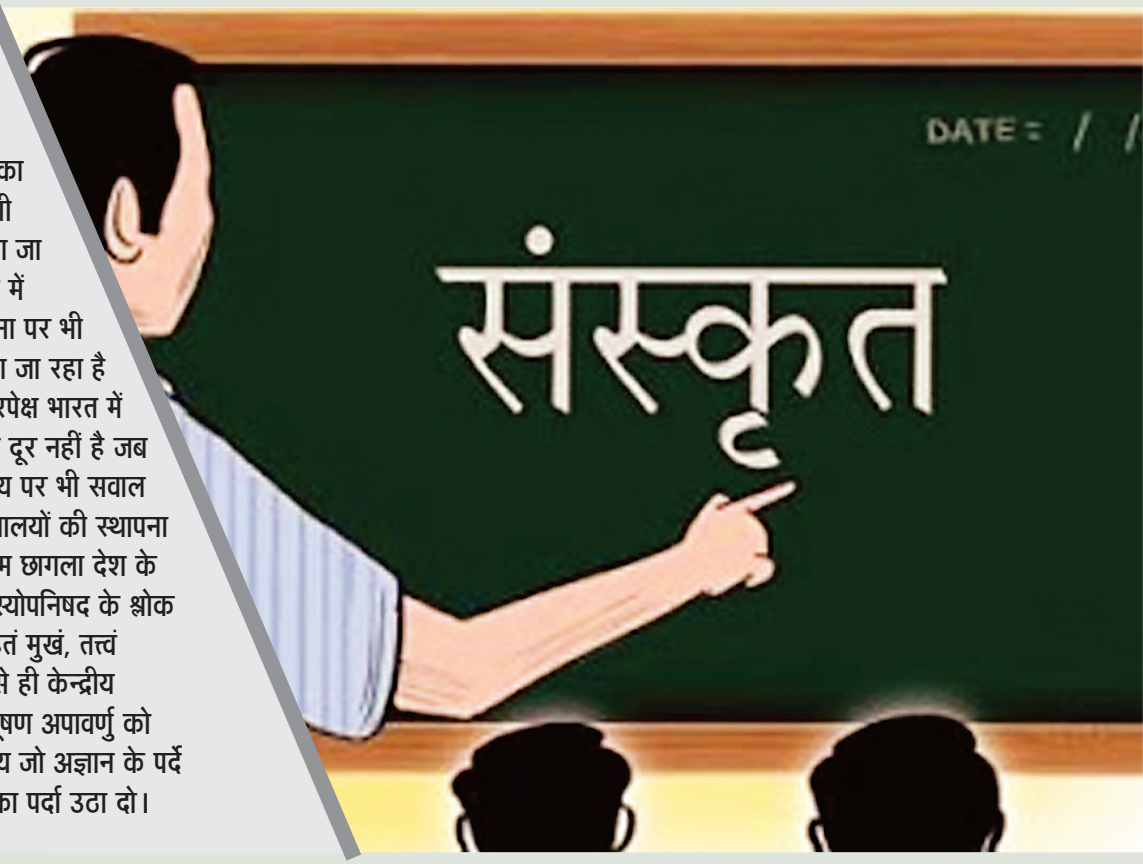

देश का वातावरण इस हद तक विषाक्त हो चुका है कि अब संस्कृत भाषा को भी सांप्रदायिकता के चश्मे से देखा जा रहा है। अब केन्द्रीय विद्यालयों में प्रतिदिन सुबह होने वाली प्रार्थना पर भी निशाना साधा जा रहा है। कहा जा रहा है कि यह संस्कृत प्रार्थना धर्मनिरपेक्ष भारत में नहीं होनी चाहिए। अब वो दिन दूर नहीं है जब केन्द्रीय विद्यालय के ध्येय वाक्य पर भी सवाल खड़े किए जाएंगे। केन्द्रीय विद्यालयों की स्थापना तब हुई जब कि मोहम्मद करीम छागला देश के शिक्षा मंत्री थे। उन्होंने ईशावास्योपनिषद के श्लोक हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखं, तत्त्वं पूषन्नपातृणु सत्यधर्माय दृष्टये से ही केन्द्रीय विद्यालयों का ध्येयेवाक्य तत्वंपूषण अपावर्णु को चुना जिसका अर्थ होता है सत्य जो अज्ञान के पर्दे से ढंका है उसपर से अज्ञान का पर्दा उठा दो।

विनय शर्मा

इस प्रार्थना के विरोध में सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका भी दाखिल हुई है। अब याचिकाकर्ता को कौन बताए कि इस्लामिक देश इंडोनेशिया की जलसेना का ध्येय वाक्य जलेष्वेव जयामहे यानी जल में ही जीतना चाहिए। जब उस इस्लामिक मुल्क को संस्कृत से परहेज नहीं है, तब भारत में संस्कृत की प्रार्थना पर बवाल किस खड़ा किया जा रहा है। भारतीय सेना के तीनों अंगों के ध्येय वाक्य भी संस्कृत में हैं। तो क्या ये सब सांप्रदायिक हैं? कहना न होगा कि अब देश में जनता का सेक्यूलरिज्म की ओवरडोज पिलाई जा रही है। हरेक चीज में मीनमेख निकालना कहां तक उचित माना जाएगा। देशभर में 1128 केंद्रीय विद्यालय हैं, जिनमें एक जैसी यूनिफॉर्म और एक जैसे ही पाठ्यक्रम होता है। इस तरह से ये दुनिया की सबसे बड़ीस्कूल चेन बन जाती है। रोज लगभग 12 लाख बच्चे यही प्रार्थना करते हैं। पिछले साढ़े पांच दशकों में करोड़ों छात्र केन्द्रीय विद्यालय से यही प्रार्थना करके निकले और देश और विदेशों में भी नाम कमा रहे हैं। वे भावनात्मक रूप से इस प्रार्थना से जुड़ें हुए हैंक्या याचिकाकर्ता ने अपनी बेहूदी याचिका के माध्यम से भारत के करोड़ों नागरिकों की भावना पर ठेस नहीं पहुँचाया है?

क्या उनपर राष्ट्रद्रोह का आपराधिक मुकदमा नहीं चलाया जाना चाहिए? इन स्कूलों ने देश को एक से बढ़कर एक प्रतिभाएं दी हैं। इसे शुरू करने के मूल में विचार ही यह था ताकि केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के बच्चों को विशेषकर सेना, रेलवे, डाकघरों, संचार विभाग, अनुसन्धानशालाओं आदि में कार्यरत कर्मियों की ट्रांसफर की स्थिति में नए शहर में जाने पर केन्द्रीय विद्यालय में दाखिला आसानी से मिल जाए और हर केन्द्रीय विद्यालय का पाठ्यक्रम एक ही प्रकार का होने के कारण उनकी पढ़ाई में व्यवधान न उपस्थित हो।

केंद्रीय विद्यालयों में कराई जा रही प्रार्थनाएं वेदों और उपनिषदों से हैं। इसे पूरे विश्व में सभी ने स्वीकार किया है। हमारे मूल संविधान में भी रामायण, महाभारत और उपनिषदों के श्लोकों और चित्रों को ही समाहित तो किया गया है। इसको दोनों सदनों की लाइब्रेरी के अलावा इसे तीन मूर्ति भवन की लाइब्रेरी में भी देखा जा सकता है। मूल प्रति की कवर कमल के पुष्पों के कोलाज से बनी है। प्रथम पृष्ट पर मोहन जोदड़ों का रेखाचित्र है और प्रत्येक पृष्ट को प्रसिद्ध चित्रकार नन्दलाल बसु ने रामायण और महाभारत के प्रसंगों की चित्रकारी का हर पृष्ट के दोनों ओर के चौड़ें सुन्दर बोर्डर तैयार किए हैं।

ये अच्छी बात है कि बीजद के सांसद बी.मेहताब ने पिछले सप्ताह लोकसभा में पूछा कि क्या संस्कृत में कुछ बोलना सेक्युलर नहीं है? उन्होंने सभी केंद्रीय विद्यालयों में संस्कृत की प्रार्थना को अनिवार्य करने पर निचले सदन में कुछ लोगों के इसका विरोध करने के बाद यह मुद्दा उठाया। सुप्रीम कोर्ट में दाखिल याचिका में कहा गया है कि केंद्रीय विद्यालयों में होने वाली प्रार्थना हिंदुत्व को बढ़ावा देती है। मानकर चलिए अब वह दिन भी आने वाला है, जब केन्द्रीय विद्लाय के ध्येय वाक्य- 'तत् त्वं पूषन् अपावृणु' (हे ईश्वर, आप ज्ञान पर छाए आवरण को कृपापूर्वक हटा दें) परभी प्रश्नचिन्ह लगने लगेंगे। वेदों को भी असंवैधानिक कह दिया जाय तो आश्चर्य नहीं हैक क्योंकि, यह ध्येय वाक्य संस्कृत में है, इसलिए इसमें भी धर्मनिरपेक्षता आड़े आती दिखने लगेगी। देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु के जीवन काल में ही 15 दिसम्बर 1963 को केन्द्रीय विद्यालय संगठन स्थापित हुआ था। उस वक्त के शिक्षामंत्री भी महान शिक्षाविद् मोहम्मद करीम छागला थे। तब देश में भाजपा या एनडीए की सरकारों का कहीं नामोनिशान भी नहीं थी। जिस प्रार्थना को सांप्रदायिक माना जा रहा है, उसे सन 1963 से देश और देश से बाहर चल रहे सभी केन्द्रीय विद्यालयों में गाया जा रहा है। इसे गाते हुए किसी भी शिक्षक या विद्यार्थियों को तो कोई आपत्ति नहीं हुई। अब इस प्रार्थना को हिन्दुत्ववादी कहने की हिमाक्त की जा रही है। केन्द्रीय विद्यालयों में गायी जाने वाली प्रार्थना है- "असतो मा सदगमय।

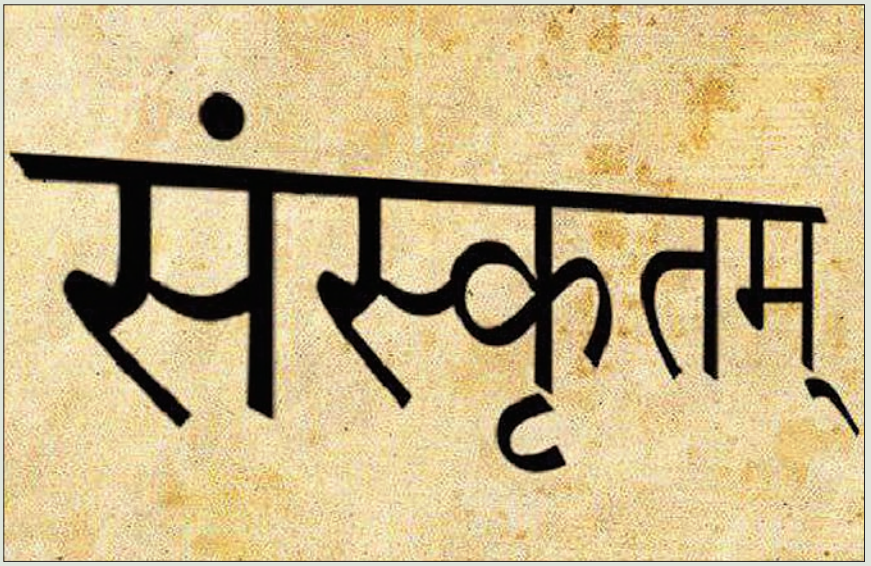

तमसो मा ज्योतिर्गमय"मृत्योमार्मृतमगमय। अर्थात् (हमें) असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो॥ इस प्रार्थना में हिन्दू या हिन्दुत्व कहां से आ गया है? यह समझ नहीं आता। केन्द्रीय विद्यालय के प्रतीक चिन्ह पर एक ध्येय वाक्य है, ततत्व पूषण अपावृणुक यह ध्येय वाक्य यजुर्वेद के ईशावास्योपनिषद के 15 वें श्लोक से लिया गया है। जिस संगठन का ध्येय वाक्य ही सत्यदर्शन पर आधारित हो, उसे हिन्दुत्वादी कहने का अर्थ है कि बाकी सभी असत्यवादी है?

जरा गौर कीजिए कि केन्द्रीय विद्यालयों में होने वाली प्रार्थना में हिन्दूत्व देखना या इसका संविधान सम्मत न मना जाना और साल 2005 में उठी मांग कि राष्ट्र गान से सिंध शब्द को निकाल देना चाहिए की मांग में कोई फर्क नहीं है। सिंध शब्द के स्थान पर राष्ट्रगान में कश्मीर को शामिल करने की मांग की गई थी। तर्क ये दिया गया था कि चूंकि सिंध अब भारत का हिस्सा नहीं रहा, तो इसे राष्ट्रगान में नहीं होना चाहिए। शायद ही संसार के किसी अन्य देश में राष्ट्रगान का इस तरह से अपमान होता हो, जैसा हमारे देश में होता आया है। आपको याद होगा कि चंद बरस पहले प्रयाग से एक बेहद शर्मनाक मामला सामने आया था। वहां पर एमए कॉन्वेंवट नामक स्कूल में राष्ट्रगान पर रोक थी। जब मामले ने तूल पकड़ा तो पुलिस ने स्कूल प्रबंधक जिया उल हक को गिरफ्तार कर लिया। क्या इस तरह का आपको उदाहरण किसी अन्य देश में मिलेंगे? कतई नहीं। स्कूल में राष्ट्रगान नहीं होने देने के पीछे प्रबंधक जिया उल हक का तर्क था कि राष्ट्रगान में भारत भाग्य विधाता शब्दों का गलत प्रयोग किया गया है। उन्हें इन शब्दों से घोर आपत्ति है। हक के अनुसार भारत में रहने वाले सभी लोगों के भाग्य का विधाता भारत कैसे हो सकता है। यह इस्लाम के विरुद्ध है। धर्मनिरपेक्ष के नाम पर ऐसी राष्ट्रविरोधी हरकतें हमारे देश के राष्ट्रभक्त नागरिक कबतक बर्दाश्त करते रहेंगे?

हमारे यहां पहले भी राष्ट्रगान में संशोधन की मांग उठती रही है। पर क्या राष्ट्रगान में संशोधन हो सकता है? क्या राष्ट्रगान में अधिनायक की जगह मंगल शब्द होना चाहिए? क्या राष्ट्रगान से सिंध शब्द के स्थान पर कोई और शब्द जोड़ा जाए? पहले भी सिंध शब्द को हटाने की मांग हुई थी, इस आधार पर की कि चूंकि सिंध अब भारत का भाग नहीं है, इसलिए इसे राष्ट्रगान से हटाना चाहिए। ऐसी बेहूदगी बात क्यों की जाती है। अरबी लोग जब हिंदुस्तान आये तो सिन्धु नदी को पार कर आये अरबी में स को ह बोलते हैं इसलिए सिन्ध की जगह हिन्द कहकर उच्चारण किया। हिन्द के जगह सिंध कैसे नहीं होगा। साल 2005 में संजीव भटनागर नाम के एक सिरफिरे शख्स ने सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिकादायर की थी, जिसमें सिंध भारतीय प्रदेश न होने के आधार पर जन-गण-मन से निकालने की मांग की थी। इस याचिका को 13 मई 2005 को सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश आर.सी. लाखोटी की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने सिर्फ खारिज ही नहीं किया था, बल्कि संजीव भटनागर की याचिका को छिछली और बचकानी मुकदमेबाजी मानते हुए उन पर दस हजार रुपए का दंड भी लगाया था।

इस बीच केन्द्रीय विद्यालयों की प्रार्थना पर जिस तरह से बवाल खड़ा किया जा रहा है, उससे साफ है कि देश में कुछ शक्तियां देश को खोखला करने की दिशा में संलग्न हैं। इन्हें कभी भी माफ नहीं किया जा सकता। संस्कृत भारतीय उपमहाद्वीप की अति प्राचीन समृद्ध और महत्वपूर्ण भाषा है। यह विश्व की भी सबसे प्राचीन भाषा है। जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि आधुनिक भारतीय भाषाएँ जैसे, हिंदी, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, नेपाली, आदि इसी से उत्पन्न हुई हैं। इन सभी भाषाओं में यूरोपीय बंजारों की रोमानी भाषा भी शामिल है। बौद्ध धर्म (विशेषकर महायान) तथा जैन मत के भी कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में लिखे गये हैं। इतनी समृद्ध भाषा को सांप्रदायिक कहने वाला इंसान सामान्य तो नहीं ही होगा। ■

मैं आसानी से हार नहीं मानता

इतिहास भूल सकता है, लेकिन मैं नहीं भूलूंगा, बंगाल के प्रथम दलित लेखक मनोरंजन व्यापारी

पिछले दिनों ही सम्पन्न हिन्दू साहित्य उत्सव में, कहानी-इतर श्रेणी में मूलतः अनपढ़ श्री व्यापारी को उनकी अंग्रेजी भाषा में रचित पुस्त इंटेरोगेटिंग माई चांडाल लाइफ-एक दलित की आत्मकथा को अनुवादक प्रो. शिप्रा मुखर्जी के साथ जब पुरस्कृत किया तो उनके नैन सजल हो गए। उनके जीवन के कुछ अविस्मरणीय अनुभव।

जब आप पुरस्कार गृहण कर रहे थे, तो आंखों में आंसू स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। उस क्षण आपके मानस में क्या घटित हो रहा था?

मैंने कभी नहीं सोचा था कि जीवन में मुझ जैसा नक्सलवादी के रूप में जेल यात्रा करने वाला अपराधी, रिक्शा चालक और अब रसोइया कभी इतने नामी-गिरामी लेखकों और प्रभावशाली छवियों वाले लोगों के साथ, इस प्रकार मंचासीन होगा। वास्तव में हिन्दू ने इतिहास रखा है, जिसने मुझ जैसे बेजुबान को मुखर आवाज दी।

आपके लिए इतिब्रिते चंडाल जीबोन (माई चंडाल लाइफ) लिखना कितना कठिन रहा है?

लेखन मेरे लिए नैसर्गिक प्रक्रिया रही है क्योंकि मैं अपनी स्वयं कहानी का बयान करता रहा हूं। यदपि मैंने कभी स्कूल में पढ़ाई नहीं की, फिर भी सीखने की बड़ा जिज्ञासा रही है। मेरी मान्यता है कि पढ़ा-लिखा होना मानव के स्वशक्तिकरण (सेल्फ एम्पॉवरमेंट) का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। मेरा जन्म से ही दलित होना दूसरों से मेरे सम्बंधों को इस सीमा तक परिभाषित करता है कि वे कुछ सीमा से आगे नहीं बढ़ पाते। यदपि लेखक के रूप में मुझे मान्यता मिली है, लेकिन व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में स्थिति वैसी की वैसी है। इस पुरस्कार को प्राप्त करने के समारोह के सम्पन्न होने के उपरांत मैं एक बार पुनः अपने मूल कार्य, हैलन कैलर मूक एवं बाधिर संस्थान, कोलकाता में रसोइए के कार्य में संलग्न हो जाऊंगा, जहां मैं सब्जियों को धोता, छीलता और काटता हूं। 150 बच्चों के लिए भोजन बनाता हूं और खिलाता हूं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मुझे अपनी पुस्तकों को पूरा करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ा है।

आपकी बहन की मृत्यु भूख के कारण हो गई, आपको अपराधी घोषित कर जेल यात्रा करनी पड़ी, फिर भी आप अपना मानसिक संतुलन कैसे बनाए रख सके?

मैं जिद्दी और संघर्षशील व्यक्तित्व का धनी रहा हूं। मैं उस प्रत्येक अवसर का लाभ उठाना चाहता और उठाता हूं, जो मेरे सामने आता है, फिर चाहे लोग कितने ही व्यंग क्यों न करें और मुझे धूल चटाने का कितना ही प्रयास क्यों न करें। मेरा आत्मविश्वास ही मेरा स्वाभिमान है और उसी के सहारे मैं आगे बढ़ता रहूंगा, क्योंकि मैं आसानी से हार नहीं मानता।

जीवन की किसी विशेष घटना का स्मरण करें, जिसने आपके जीवन की राह ही बदल दी?

इस क्रम में मैं वह क्षण का स्मरण करता हूं, एक दिन बंगला की सुप्रसिद्ध लेखिका महाश्वेता देवी, मेरे रिक्शे में यात्री के रूप में बैठ गई। रास्ते में मैंने उनसे बंगला भाषा के शब्द जिजीविषा (जीवन जीने की ललक) का अर्थ पूछा। वह मेरी रूचि देखकर और जीवन की कहानी सुनकर आश्चर्यचकित हो गईं और मुझसे अपनी पत्रिका वर्तिका के लिए लिखने लिए कहा, यदपि उन्होंने मेरा एक ही लेख प्रकाशित किया, लेकिन उन्होंने मुझे लेखक के रूप में खड़ा कर दिया और मुझे कलम की ताकत से परिचय कराया। तत्पश्चात मीनीक्षी मुखर्जी ने मेरे एक लेख का अंग्रेजी में अनुवाद किया, जिसका शीर्षक था क्या बंगला में भी कोई दलित लेखक है? यह इकोनोमिक एवं पोलिटिकल वीकली में प्रकाशित हुआ था, जिसने मुझे बड़ी प्रसिद्ध दिलाई। और जब प्रो. शिप्रा मुखर्जी ने मेरी आत्मकथा अंग्रेजी भाषा में पाठकों के सामने प्रस्तुत की तो मुझे भरपूर लोक प्रसिद्धि मिली। लेकिन यह मेरे मस्तिष्क में भली-भांति स्थापित हो चुका है कि मैं जहां रहता हूं कार्य करता हूं, मैं आज भी छोटी जाति का (शूद्र) अछूत, स्पर्श न करने योग्य हूं।

आपकी अगली योजना क्या है?

मेरे स्मरणों का दूसरा भाग भी अंग्रेजी में अनूदित हो चुका है और शीघ्र ही पाठकों के सम्मुख आ जाएगा। ये दोनों खंड उन सभी घटनाओं/क्रियाकलापों का वर्णन प्रस्तुत करने हैं जो मेरे साथ घटी है- भूख, वंचित, अपमान एवं संघर्ष और इन सभी के बीच मेरे जीवन में आगे बढ़ते रहने और कार्य करते रहने की लालसा रही है। मेरा अगला उपन्यास पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित परिवारों से संबंद्ध होगा, जिन्हें प्रथमतः दंडकारण्य की विपरीत परिस्थितियों से परिपूर्ण परिवेश में स्थापित किया गया था और अंततः मरीचाकपी द्वपीप समूह में जा बसे जो सुंदरबन क्षेत्र में स्थित है। दलित होना और दलितों की त्रासदी मेरे लेखन के केंद्र बिन्दु हैं। जैसे वंचितों की कठिनाइयां, जिन्हें इतिहास तो भूल सकता है, लेकिन मैं कभी नहीं भूलूंगा। ■

डॉ. जीएस पालीवाल जी द्वारा लिए गए साक्षात्कार पर आधारित

सोशल मीडिया पर धार्मिक झूठ के संदेश

आज अज्ञान और गलत ज्ञान जम कर फैल रहा है और विज्ञान पिछड़ रहा है। नतीजा यह है कि लोग चुटकुलों से जीवन जीना सीख रहे हैं।

युवक एडिटोरियल टीम

फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप ने झूठ का प्रचार करने में धर्मों को भी शांत कर दिया है। हर धर्म के अपने झूठ को ही अंतिम सत्य साबित करने में 100-200 या इस से भी ज्यादा साल लगे हैं पर इन हाईटैक कंपनियों झूठ को सच मानने की आदत सप्ताहों में उलझा दी।

धर्मों की खबर फैलाने में लंबा समय लगता था। जिस ने झूठ गढ़ा उसे अपने आसपास के 10-20 लोगों को झूठ दूत बना कर दूसरी जगह भेजना पड़ता था जिस में महीनों लगते थे। इन टैक प्लैटफार्मों पर झूठ तैयार करो और धर्मों में दुनिया के कोनेकोने में पहुंचा दो। अगर वहां झूठ को सच मानने वाले मिले तो वह वायरल हो कर कुछ ही दिनों में सदासदा के लिए सच बन जाता। फर्क यह रहा है कि धार्मिक झूठ ने पक्की जमीन ली थी। उसे जिस ने माना अंतिम सत्य मान लिया और उसे झूठ कहने वाले का सिर काट दिया या अपना कटवा लिया पर झूठ को झूठ नहीं माना। हाईटैक झूठ की पोल भी उतनी ही तेजी से खुलने लगी और अब फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप के लिए खतरे की घंटी बज रही है कि उन पर भरोसा किया जाए या नहीं।

अमेरिकी चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया का जम कर फायदा उठाया क्योंकि वहां के गोरों को डर था कि काले, भूरे, सांवले, पीले लोग देश पर कब्जा न कर लें। भारत में 2014 में विकास और अच्छे दिनों के पीछे दलितों, पिछड़ों की बढ़ती तादाद और ताकत डरा रही थी। दोनों जगह चुनावों में स्पेशल मीडिया पर जम कर झूठ फेंका गया। अब टैक कंपनियां थोड़ी सावधान हुई है। फेसबुक ने अब संदेश पढ़ने शुरू कर दिए हैं और उस ने अकाउंट बंद करने शुरू कर दिए हैं जो भ्रामक झूठ या घृणा फैलाने में माहिर थे। मतलब यह है कि अब फेसबुक की चिट्ठी डाकिया पढ़ने लगा है और यदि उसे लगे कि उस में गलत बातें हैं तो चिट्ठी भी दबा सकता है, भेजने वाले या पाने वाले को बैन कर सकता है। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप और गूगल अब सरकारों से ज्यादा ताकतवर हो गए हैं। वे पार्टियों के ऊपर है। वे जनता के अकेले मार्गदर्शक हैं और उन्हें जनता के भले की नहीं अपने पैसों की चिंता है। वे पैसा मिले तो हर झूठ को फैला देंगे, न मिले तो सच को झूठों के अंबार के नीचे दबा देंगे। लोग इस की भारी कीमत चुकाने लगे हैं। आज अज्ञान और गलत ज्ञान जम कर फैल रहा है और विज्ञान पिछड़ रहा है। नतीजा यह है कि लोग चुटकुलों से जीवन जीना सीख रहे हैं, पौर्न से साथी बच रहे हैं, मोबाइल के कैमरे से खींची अंतरंग तसवीरों को इन टैक प्लैटफार्मों से फैसलाने की धर्मांतरण दे कर अपनी बात मनवा रहे हैं। इन का असर गलत सरकार चुनने से ले कर घर, परिवार और संबंधों में गलतफहमी पैदा करने तक पर पड़ रहा है। ■

जीवन में आया ज्यादा सुख, अब रुलाने पर उतारू हो गया है

दुनिया जानती है जापानी काम के दीवाने हैं और हमारे यहाँ काम से ज्यादा परेशान होने की परम्परा नहीं है। भारतीय किसी भी दुर्घटना से ज्यादा दिन परेशान नहीं रहते। अति उत्सव प्रेमी हम लोगों का चौबीस घंटे रंगीला, हठीला व हंसीला मनोरंजन किया जा रहा है। जिंदगी में खुशियां कम हैं और दुख ज्यादा। ह्यपर उपदेश कुशल बहुतेरे को आधार कार्ड मानकर, हजारों प्रवाचक सुबह से शाम तक करोड़ों लोगों को समझाते रहते हैं कि भजन करो, प्रसाद खाओ और खुश रहो। डॉक्टर कहते रहते हैं खुश रहना चाहिए। जीवन में प्रसन्न रहने के सूत्रों पर हजारों किताबें, जिंदगी की लाइब्रेरी की दुखभरी अलमारियों में दफन धूलभरी किताबें बनकर ही रह गई हैं। तनाव की नाव है कि मस्ती के गहरे पानी में भी डूबती नहीं है। जिस छोटे से देश से हमारे बड़े से देश में बुलेट ट्रेन आ रही है उन्होंने बड़ी शालीनता से बताया है कि तनाव दूर करने का सही तरीका केवल हँसना नहीं है। वहां हुए एक सर्वे के अनुसार खुशी ही नहीं दुख के आंसुओं से भी जीवन में तनाव घटता है। संभवत: जापानियों को सर्वे के बाद पता चला लेकिन हमें तो पहले से पता है कि दुख के कुछ आँसू क्या, खुल कर रोने से जिंदगी का तनाव कम हो जाता है, शरीर जीभर आराम कर लेता है और आंखें धुल जाती हैं उनका खुलकर व्यायाम भी होता है।

संतोष उत्सुक

दुनिया जानती है जापानी काम के दीवाने हैं और हमारे यहाँ काम से ज्यादा परेशान होने की परम्परा नहीं है। भारतीय किसी भी दुर्घटना से ज्यादा दिन तक परेशान नहीं रहते। अति उत्सव प्रेमी हम लोगों का चौबीस घंटे रंगीला, हठीला व हंसीला मनोरंजन किया जा रहा है। जीवन में स्थायी सुख का मौसम है। लेकिन कभी कभी शरीर में ख्याल आता है कि कहीं लोग फूहड़ तरीकों से हंस-हंस कर ऊबने तो नहीं लग गए हैं। सुनने में आया है कि अब तो बच्चे भी मुस्कुराते हुए पैदा होने लगे हैं। उन्हें पता है विकासजी हर मकान के अतिथिकक्ष में विराजमान हैं, समाज में लोग सफल हैं, जिंदगी का दंगल जीत रहे हैं, एक दूसरे के साथ हंस रहे हैं, पार्टी कर रहे हैं, फेस बुक ईमानदारी से पढ़ने रोज क्लास में बैठते हैं। ह्यफुर्सत है किसको रोने की दौर ए बहार में.....। क्या उनके भीतर भी तनाव कहीं न कहीं ज्वालामुखी की तरह शांत है? डॉक्टर यह भी तो मानते हैं कि कभी कभी तो रोना ही चाहिए। हमेशा माना जाता रहा कि दुख का गीत संगीत ही जिंदगी का असली गीत संगीत होता है। एक लाफ्टर थेरेपिस्ट द्वारा स्थापित क्राइंग क्लब वाले तो लोगों को पहले से रुला रहे हैं। कहीं वे यह तो नहीं मानते कि हंस कर या दिखा कर कि हम खुश हैं, सब ठीक चल रहा है मान लेने से बात नहीं बनती। शायद यही जानकर जापान में ह्यटीयर टीचर्सह्न तैयार किए जा रहे हैं जो संस्थानों में जाकर लोगों को रोने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। वही सर्वे समझाता है कि तनाव घटाने में रोना, हंसने व सोने से ज्यादा मददगार है। अब तनाव झेल रहे, खुश मगर रोना भूल चुके व्यक्तियों को अलग अलग तरीकों से रुलाए जाने के प्रयास होंगे। हो सकता है शुरू-शुरू में लोग मुफ्त में रोने को तैयार ही न हों। कुछ आकर्षक उपहार लेकर ही रोना के लिए तैयार होंगे, फिर शुरू करेंगे और जब यह व्यवसाय सफल हो जाए तो रोने के सैशन का हिस्सा होने के लिए कीमत अदा किया करेंगे। तनाव के प्रकार के अनुसार उनके दिल को बाहर से छूकर, दिमाग की छत पर प्यार से हाथ फेरकर या फिर जोर से मार कर रुलाया जाएगा। उन्हें केएल सहगल या मुकेश के रुलाऊ गीत नियमित रूप से सुनने की सलाह दी जाएगी। करोड़ों लोगों को आनंद देने वाले राजस्थान के आंगन में पनपी रूदाली परम्परा समझाती है कि रोना भी एक कला है। कहीं लगता तो है जापान की टीयर थैरेपी रुदाली की प्रयोगशाला में उगी है। अब जमाना पुराने आजमाए हुए नुस्खों को कैश करने का भी तो है। यहां यह शंका परेशान करती है कि दूसरों को रुला कर सफल होने की कोशिश करने वाला बंदा रोएगा क्या। रोने से तो इंसान भावुक होना शुरू हो जाएगा और अगर सचमुच यह तकनीक सफल हो गई, दुख तकलीफ देने वाला पदार्थ आंसू बनकर बह निकला और व्यक्ति में सशक्त भावनाएँ प्रबल हो गईं तो वो इस मारकाटू प्रतियोगी दुनिया में कैसे आगे बढ़ेगा। रुला कर तनाव दूर भगाने वालों का धंधा चल निकला तो हंसाने वाले क्या करेंगे क्यूंकि बताते हैं कि हंसाना बहुत मुश्किल काम है। क्या खुशी और गम के आंसू अलग अलग आकार, रंग व प्रवृत्ति के होते हैं। अब हौले हौले यह अनुभूति होने लगी है कि जीवन में आया ज्यादा सुख, रुलाने पर उतारू हो गया है। ■

आर्थिक मोर्चे पर बढ़ता भारत

पेश कर रहा सुनहरी और सुदृढ़ तस्वीर

नरेन्द्र मोदी सरकार ने अर्थव्यवस्था को विकसित देशों की तर्ज पर बढ़ाने की कोशिशें की है। स्टार्टअप, मेक इन इंडिया और बुलेट ट्रेन की नवीन परियोजनाओं को प्रस्तुति का अवसर मिला। नोटबंदी और जीएसटी को लागू किया गया, भारत में भी डिजिटल इकॉनमी स्थापित करने के प्रयास हुए। एक बार फिर विश्व बैंक ने भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था घोषित किया है। जबकि उसने वर्ष 2021 तक वैश्विक अर्थव्यवस्था में गिरावट का पुवार्नुमान जारी किया है। हमारी अर्थव्यवस्था का दुनिया की उभरती अर्थव्यवस्था एवं मंदी से अप्रभावित अर्थव्यवस्था होना, देश के लिये एक सुखद अहसास है और भारत की सुनहरी एवं सुदृढ़ तस्वीर की प्रस्तुति है। लेकिन एक बड़ा प्रश्न है कि इस लोक-लुभावनी तस्वीर के बावजूद न तो बढ़ती महंगाई नीचे आ रही है और न ही डॉलर के मुकाबले रुपये की फिसलन रुक रही है।

2030

तक भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा बाजार होगा, उसके आगे केवल चीन और अमेरिका होंगे।

2017

में चीन की विकास दर 6.9 प्रतिशत रही थी जबकि भारत की उस वर्ष में जीडीपी वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत थी।

मधुसूदन भट्ट

विश्व बैंक की ग्लोबल इकोनॉमिक प्रोस्पैक्टस रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर वित्त वर्ष 2017 के 6.7 प्रतिशत से बढ़कर 2018 में 7.3 प्रतिशत रहने का अनुमान है। वर्ष 2021 तक के तीन वर्षों में इसके 7.5 फीसदी बने रहने का पूवार्नुमान जारी किया गया है। वास्तव में किसी और बड़ी अर्थव्यवस्था की विकास दर 7 फीसदी को भी पार नहीं कर पाएगी। यह पूवार्नुमान एवं घोषणा नरेन्द्र मोदी सरकार के आर्थिक सुधारों, नीतियों एवं योजनाओं का परिणाम है। रिपोर्ट में मोदी सरकार की ओर से किए गए ढांचागत सुधारों की सराहना भी की गई है। सरकार के नीतिगत आर्थिक सुधारों के प्रभाव अब दिखने लगे हैं और अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो रही है। इससे निजी उपभोग मजबूत रहने और निवेश में तेजी जारी रहने की उम्मीद है। हम भारत की अर्थव्यवस्था को आठ प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ते देखना चाहते हैं तो इसके लिये हमें उद्योग और सेवा क्षेत्र का भी सहारा लेना होगा, खेती को भी प्रोत्साहित करना होगा। क्योंकि दुनिया के किसी भी हिस्से में खेती का विकास अपेक्षित दर से ज्यादा नहीं हो रहा है। यदि हम गरीबी से पिंड छुड़ा कर समृद्धि का जीवन जीना चाहते हैं तो हमें अपनी सोच एवं नीतियों को बदलना ही होगा। उद्योग, खेती, रोजगार, स्वनिर्भरता, ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना होगा, ताकि वे आर्थिक वृद्धि के इंजन बन सकें। इसके लिये मोदी सरकार के प्रयास और उन प्रयासों की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर टंकार एवं खनक उनके लिये एक अच्छी खबर है, क्योंकि यह चुनावी वर्ष है।

सरकार किसी भी दल की हो, भले ही योजनाकारों के नाम भी बदल जाये, और आर्थिक नियोजन के स्तर पर विश्व बैंक भले ही हमारी अर्थव्यवस्था को तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का खिताब दे दे, लेकिन फिर भी सभी की चिन्ता केवल यह दिखती है कि डॉलर की तुलना में रुपये का अवमूल्यन कैसे रुके, कैसे महंगाई एवं बेरोजगारी पर नियंत्रण स्थापित हो। यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि जो अमेरिका मंदी से रूबरू हो रहा है और अपने समय की सबसे बड़ी बेकारी को सह रहा है, फिर भी देखिये कि आर्थिक रूप से उभरते और मंदी से अप्रभावित रुपया डॉलर की तुलना में अवमूल्यन की ओर बना है। लगातार बढ़ती महंगाई के चलते आम आदमी अभावों का शिकार हो रहा है। जनता को पूरी तरह बाजार के रहमो-करम पर छोड़ देने की सरकार की नीति आम आदमी की जिन्दगी को बदहाल बना रही है। चीन की विकास दर वर्ष 2017 में 6.9 प्रतिशत रही थी जबकि भारत की उस वर्ष में जीडीपी वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत थी। भारत अब आने वाले वर्षों में चीन को पछाड़ सकता है। विश्व बैंक ने अपनी रिपोर्ट में भारत जैसी उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को सचेत करते हुए कहा है कि उन्हें भविष्य में कुछ मुश्किलें झेलने के लिए भी तैयार रहना होगा। इन देशों की सरकारों को अपना कर्ज प्रबंधन मजबूत बनाने के साथ आर्थिक सुधारों को तेजी से लागू करना होगा। भारत 2030 तक दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा बाजार होगा, उसके आगे केवल चीन और अमेरिका होंगे। इस स्थित किो पाने के लिये सरकार को रोजगार के अवसर बढ़ाने पर भी ध्यान देना होगा। विशेषतरू गांवों पर आधारित जीवनशैली को बल देना होगा। जबकि आजादी के बाद से जितनी भी सरकारें आयी हैं उन्होंने शहरीकरण पर बल दिया है। एक विडम्बनापूर्ण सोच देश के विकास के साथ जुड़ गयी है कि जैसे-जैसे देश विकसित होता जायेगा वैसे-वैसे गांव की संरचना टूटती जायेगी। जिन्हें शहर कहा जा रहा है वहां अपने संसाधना से बहिष्कृत लोगों की बेतरतीब, बेचैन अैर विस्थापित भीड़ ही होगी। जो अर्थव्यवस्था को मजबूती देने की सबसे बड़ी बाधा है। मजबूत अर्थव्यवस्था का अर्थ उन्नत जीवनशैली होना जरूरी है। लेकिन आर्थिक वृद्धि दर से निर्धारित होने वाला यह अर्थतंत्र क्या देश की जनता को गरिमापूर्ण जीवन दे पाया है, क्या रोजगारों का समुचित प्रबंध कर पाया है, क्या उन्नत खेती को स्थापित किया गया है। कहीं ऐसा तो नहीं हो रहा है कि आर्थिक वृद्धि दर और जीडीपी के मानकों से चलती यह अर्थव्यवस्था अनेक क्षेत्रों में उत्पादित माल- स्टील, सीमेंट, बिजली आदि को खपाने का जरिया है। आर्थिक योजनाकारों का कोई भी नक्शा इन्हीं दबावों और आर्थिक लॉबियों और सब मिला कर मौजूदा अर्थव्यवस्था से बड़े स्तर पर लाभान्वित होने वाले उद्योग-व्यापार समूहों की चिन्ताओं से तय होता है। ऐसा होता है इसीलिये महंगाई पर नियंत्रण नहीं हो पा रहा है, रोजगार सीमित होते जा रहे हैं, किसान आत्महत्या कर रहे हैं। तभी विश्व बैंक ने अपनी रिपोर्ट में भारत जैसी उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को सचेत भी किया है।

> **सदियों की गुलामी और स्वयं की विस्मृति का काला पानी हमारी नसों में अब भी बह रहा है। इन हालातों में भारत ने कितनी सदियों बाद खुद को आगे बढ़ता देखा है। इसलिए आम जनता को गुमराह करने वाली राजनीति को समझना होगा। इन मानसिकताओं से उबरे बिना हम वास्तविक तरक्की की ओर अग्रसर नहीं हो सकते।**

नरेन्द्र मोदी सरकार ने अर्थव्यवस्था को विकसित देशों की तर्ज पर बढ़ाने की कोशिशें की है। स्टार्टअप, मेक इन इंडिया और बुलेट ट्रेन की नवीन परियोजनाओं को प्रस्तुति का अवसर मिला। नोटबंदी और जीएसटी को लागू किया गया, भारत में भी डिजिटल इकॉनमी स्थापित करने के प्रयास हुए। भारत की विदेशों में साख बढ़ी। लेकिन घर-घर एवं गांव-गांव में रोशनी पहुंचाने के बावजूद आम आदमी अन्य तरह के अंधेरों में डूबा है। भौतिक समृद्धि बटोर कर भी न जाने कितनी तरह की रिक्तताओं की पीड़ा भोग रहा है। गरीब अभाव से तड़पा है तो अमीर अतृप्ति से। कहीं अतिभाव, कहीं अभाव। शहरी बस्तियां बस रही है मगर आदमी उजड़ता जा रहा है। भाजपा सरकार जिनको विकास के कदम मान रही है, वे ही उसके लिए विशेष तौर पर हानिकारक सिद्ध हुए हैं। इस पर गंभीर आत्म-मंथन करके ही हम भारत की बढ़ती आर्थिक वृद्धि दर एवं जीडीपी का नया धरातल तैयार कर नया भारत निर्मित कर सकेंगे।

केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ) के अनुमान के अनुसार 2018-19 में प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय 11.1 फीसदी वृद्धि के साथ 1,25,397 रुपए पर पहुंच जाएगी जो 2017-18 में 1,12,835 रुपए थी। आर्थिक मोर्चे पर विशेष रूप से बैंकिंग क्षेत्र में भी जहां सुधार के संकेत सामने आए, वहीं राजकोषीय घाटे के संदर्भ में केन्द्रीय वित्त मंत्री अरुण जेतली ने स्पष्ट रूप से कहा है कि सरकार राजकोषीय घाटा पाटने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक के कोष का इस्तेमाल नहीं करेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि राजकोषीय घाटा पाटने की दिशा में मोदी सरकार का रिकार्ड पूर्व की सरकारों से कहीं बेहतर रहा है। तमाम उतार-चढ़ावों के बावजूद देश की अर्थव्यवस्था की तस्वीर निष्कंटक बन रही है। रिजर्व बैंक के कोष का उपयोग बैंकों की सहायता अथवा गरीबी निवारण के कार्यक्रमों पर किया जा सकता है, ऐसा संकेत स्वयं जेतली ने किया है। संकट के दिनों में इसकी अत्यधिक उपयोगिता रहती है। जो भी निर्णय किए जाएं, वह राजनीति से प्रेरित नहीं, बल्कि राष्ट्रहित में होने चाहिएं। आवश्यकता है कि राष्ट्रीय अस्मिता के चारों ओर लिपटे अंधकार के विषधर पर मोदी सरकार अपनी पूरी ऊर्जा और संकल्पशक्ति के साथ प्रहार करे तथा वर्तमान की हताशा में से नये विहान और आस्था के उजालों का आविष्कार करे। सदियों की गुलामी और स्वयं की विस्मृति का काला पानी हमारी नसों में अब भी बह रहा है। इन हालातों में भारत ने कितनी सदियों बाद खुद को आगे बढ़ता देखा है। इसलिए आम जनता को गुमराह करने वाली राजनीति को समझना होगा। इन मानसिकताओं से उबरे बिना हम वास्तविक तरक्की की ओर अग्रसर नहीं हो सकते। ■

क्या है सिंधु जल समझौता?

क्या भारत इस संधि को वाकई तोड़ सकता है?

जम्मू-कश्मीर की जनता को आशा है कि भारत, पाकिस्तान के साथ की गई सिंधु जल संधि को समाप्त कर देगा। सभी पक्षों, यहां तक कि पर्यवेक्षकों का भी मानना है कि इस संधि को समाप्त करना एक परमाणु बम गिराने के समान होगा क्योंकि अगर जल संधि तोड़ दी जाती है तो भारत से बहने वाले दरियाओं के पानी को पाकिस्तान की ओर जाने से रोका जा सकता है जिसके मायने होंगे पाकिस्तान में पानी के लिए हाहाकार मचना और यह सबसे बड़ा बम होगा पाकिस्तानी जनता के लिए और वह आतंकवाद को बढ़ावा देने की अपनी नीति को बदल लेगा। हालांकि चाहे इस संधि को समाप्त करने का जितना भी दबाव हो, भारत इसे एकतरफा खत्म भी नहीं कर सकता है क्योंकि ऐसा संधि के प्रावधानों के कारण है। जबकि यह भी सच्चाई है कि अगर वह संधि को तोड़ देता है तो भी पाकिस्तान की ओर बहने वाले पानी को थामने को उसे बीसियों साल लग जाएंगे।

सौरभ सिंह

वर्ष 1960 के सितम्बर महीने में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. पंडित जवाहर लाल नेहरू और पाकिस्तान के सैनिक शासक फील्ड मार्शल अयूब खान के बीच यह जल संधि हुई थी। इस जल संधि के मुताबिक, भारत को जम्मू-कश्मीर में बहने वाले तीन दरियाओं- सिंध, जेहलम और चिनाब के पानी को रोकने का अधिकार नहीं है। अर्थात्, जम्मू कश्मीर के लोगों के शब्दों में भारत ने राज्य के लोगों के भविष्य को पाकिस्तान के पास गिरवी रख दिया था। यह कड़वी सच्चाई भी है। इन तीनों दरियाओं का पानी अधिक मात्रा में राज्य के वासी इस्तेमाल नहीं कर सकते। इससे अधिक बदनसीबी क्या होगी कि इन दरियाओं पर बनाए जाने वाले बांधों के लिए पहले पाकिस्तान की अनुमति लेनी पड़ती है।

असल में जनता का ही नहीं, बल्कि अब तो नेताओं का भी मानना है कि इस जल संधि ने जम्मू-कश्मीर के लोगों को परेशानियों के सिवाय कुछ नहीं दिया है। नतीजतन सिंधु जल संधि को समाप्त करने की मांग करने वालों में सबसे प्रमुख स्वर राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री डा. फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला का भी है। वे पिछले कई सालों से इस मांग को दोहरा रहे हैं यहां तक कि अपने शासनकाल में वे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जम्मू-कश्मीर के तीन दिवसीय दौरे के दौरान भी फारूक अब्दुल्ला इस मांग का राग अलापने से नहीं चूके थे। उनकी मांग जायज भी थी क्योंकि पाकिस्तान तथा पाक कब्जे वाले कश्मीर की ओर बहने वाले जम्मू-कश्मीर के दरियाओं के पानी को पीने तथा सिंचाई के लिए एकत्र करने का अधिकार जम्मू-कश्मीर को नहीं है। और अब जबकि सीमाओं पर युद्ध के बादल मंडराने लगे हैं तथा राज्य में पिछले 30 सालों से पाकिस्तान समर्थक आतंकवाद मौत का नंगा नाच खेल रहा है इस जल संधि को तोड़ने की मांग बढ़ी है। यही नहीं सेना तो कहती है कि पाकिस्तान के साथ युद्ध लड़ने की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी अगर भारत जल संधि के परमाणु बम को पाकिस्तानी जनता के ऊपर फोड़ देता है। अर्थात् अगर वह जल संधि को तोड़ कर पाकिस्तान की ओर बहने वाले पानी को रोक लेता है तो पाकिस्तान में पानी के लिए हाहाकार मच जाएगा और बदले में भारत जम्मू-कश्मीर से पाकिस्तान को अपना हाथ पीछे खींचने के लिए मजबूर कर सकता है।

इस सच्चाई से पाकिस्तान भी वाकिफ है कि भारत का ऐसा कदम उसके लिए किसी परमाणु बम से कम नहीं होगा। यही कारण है कि वह इस जल संधि के तीसरे गवाह कह लीजिए या फिर पक्ष, विश्व बैंक के सामने लगातार गुहार लगाता आ रहा है कि वह भारत को ऐसा करने से रोके। हालांकि यही एक कड़वी सच्चाई है कि भारत के लिए ऐसा कर पाना अति कठिन होगा, विश्व समुदाय के दबाव के चलते। लेकिन आम नागरिकों का मानना है कि अगर देश को पाकिस्तानी आतंकवाद से बचाना है तो उसे अंतरराष्ट्रीय दबाव के आगे झुकना स्वीकार नहीं करना होगा। नागरिकों के मुताबिक, अगर भारत पाकिस्तानी चालों के आगे झुक जाता है तो कश्मीर में फैला आतंकवाद कभी भी समाप्त नहीं होगा।

परिणामस्वरूप इस जलसंधि को लेकर अक्सर नई दिल्ली में होने वाली वार्षिक बैठकों से पहले यह स्वर उठता रहा है कि इसे समाप्त करने की पहल कर पाकिस्तान पर परमाणु बम का धमाका कर देना चाहिए जो अनेकों परमाणु बमों से अधिक शक्तिशाली होगा और पाकिस्तान की अक्ल ठिकाने आ जाएगी। सिंधु जल संधि पर 1993 से 2011 तक पाकिस्तान के कमिश्नर रहे जमात अली शाह कहते हैं कि इस समझौते के नियमों के मुताबिक कोई भी एकतरफा तौर पर इस संधि को रद्द नहीं कर सकता है या बदल सकता है। दोनों देश मिलकर इस संधि में बदलाव कर सकते हैं या एक नया समझौता बना सकते हैं। उधर पानी पर वैश्विक झगड़ों पर किताब लिख चुके ब्रह्म चेल्लानी लिखते हैं कि भारत वियना समझौते के लॉ आफ ट्रीटीज की धारा 62 के अंतर्गत इस आधार पर संधि से पीछे हट सकता है कि पाकिस्तान आतंकी गुटों का इस्तेमाल उसके खिलाफ कर रहा है। अंततराष्ट्रीय न्यायालय ने कहा है कि अगर मूलभूत स्थितियों में परिवर्तन हो तो किसी संधि को रद्द किया जा सकता है।

सिंधु जल संधि के पीछे की कहानी

अमेरिका की ओरेगन स्टेट यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर इस समझौते की पीछे की कहानी है। ऐरान वोल्फ और जोशुआ न्यूटन अपनी केस स्टडी में बताते हैं कि ये झगड़ा 1947 भारत के बंटवारे के पहले से ही शुरू हो गया था, खासकर पंजाब और सिंध प्रांतों के बीच। 1947 में भारत और पाकिस्तान के इंजीनियर मिले और उन्होंने पाकिस्तान की तरफ आने वाली दो प्रमुख नहरों पर एक स्टैंडस्टिल समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके अनुसार पाकिस्तान को लगातार पानी मिलता रहा। ये समझौता 31 मार्च 1948 तक लागू था। जमात अली शाह के अनुसार 1 अप्रैल 1948 को जब समझौता लागू नहीं रहा तो भारत ने दो प्रमुख नहरों का पानी रोक दिया जिससे पाकिस्तानी पंजाब की 17 लाख एकड़ जमीन पर हालात खराब हो गए थे। भारत के इस कदम के कई कारण बताए गए थे जिसमें एक था कि भारत कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान पर दबाव बनाना चाहता था। बाद में हुए समझौते के बाद भारत पानी की आपूर्ति जारी रखने पर राजी हो गया था। स्टडी के मुताबिक 1951 में प्रधानमंत्री नेहरू ने टेनसी वैली अथॉरिटी के पूर्व प्रमुख डेविड लिलियंथल को भारत बुलाया। लिलियंथल पाकिस्तान भी गए और वापस अमेरिका लौटकर उन्होंने सिंधु नदी के बंटवारे पर एक लेख लिखा। ये लेख विश्व बैंक प्रमुख और लिलियंथल के दोस्त डेविड ब्लैक ने भी पढ़ा और ब्लैक ने भारत और पाकिस्तान के प्रमुखों से इस बारे में संपर्क किया और फिर शुरू हुआ दोनों पक्षों के बीच बैठकों का सिलसिला।

क्या है सिंधु जल समझौता?

सिंधु नदी का इलाका करीब 11.2 लाख किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। ये इलाका पाकिस्तान (47 प्रतिशत), भारत (39 प्रतिशत), चीन (8 प्रतिशत) और अफगानिस्तान (6 प्रतिशत) में है। सिंधु नदी उत्तर में हिमालय की पहाड़ियों से शुरू होकर जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा होते हुए पाकिस्तानी पंजाब, सिंध, बलोचिस्तान को पार करते हुए अरब सागर में जाकर खत्म होती है। एक आंकड़े के मुताबिक करीब 30 करोड़ लोग सिंधु नदी के आसपास के इलाकों में रहते हैं।

सिंधु जल संधि की प्रमुख बातें

1. समझौते के अंतर्गत सिंधु नदी की सहायक नदियों को पूर्वी और पश्चिमी नदियों में विभाजित किया गया। सतलज, ब्यास और रावी नदियों को पूर्वी नदी बताया गया जबकि झेलम, चेनाब और सिंधु को पश्चिमी नदी बताया गया।
2. समझौते के मुताबिक पूर्वी नदियों का पानी, कुछ अपवादों को छोड़े दें, तो भारत बिना रोकटोक के इस्तेमाल कर सकता है। पश्चिमी नदियों का पानी पाकिस्तान के लिए होगा लेकिन समझौते के भीतर कुछ इन नदियों के पानी का कुछ सीमित इस्तेमाल का अधिकार भारत को दिया गया, जैसे बिजली बनाना, कृषि के लिए सीमित पानी। अनुबंध में बैठक, साइट इंस्पेक्शन आदि का प्रावधान है।
3. समझौते के अंतर्गत एक स्थायी सिंधु आयोग की स्थापना की गई। इसमें दोनो देशों के कमिश्नरों के मिलने का प्रस्ताव था। ये कमिश्नर हर कुछ वक्त में एक दूसरे से मिलेंगे और किसी भी परेशानी पर बात करेंगे।
4. अगर कोई देश किसी प्रोजेक्ट पर काम करता है और दूसरे देश को उसकी डिजाइन पर आपत्ति है तो दूसरा देश उसका जवाब देगा, दोनों पक्षों की बैठकें होंगी। अगर आयोग समस्या का हल नहीं ढूंढ़ पाता है तो सरकारें उसे सुलझाने की कोशिश करेंगी।
5. इसके अलावा समझौते में विवादों का हल ढूंढ़ने के लिए तटस्थ विशेषज्ञ की मदद लेने या कोर्ट आफ आर्बिट्रेशन में जाने का भी रास्ता सुझाया गया है।

संधि पर राजनीति

भारत में एक वर्ग का मानना रहा है कि इस समझौते से भारत को आर्थिक नुकसान हो रहा है। जम्मू-कश्मीर सरकार के मुताबिक इस संधि के कारण राज्य को हर साल करोड़ों का आर्थिक नुकसान हो रहा है। संधि पर पुनर्विचार के लिए जम्मू-कश्मीर विधानसभा में 2003 में एक प्रस्ताव भी पारित किया था। जबकि भारत सरकार की सोच ये भी है पाकिस्तान इस संधि के प्रस्तावों का इस्तेमाल कश्मीर में गुस्सा भड़काने के लिए कर रहा है। विश्लेषक ब्रह्म चेल्लानी लिखते हैं कि भारत ने 1960 में ये सोचकर पाकिस्तान से संधि पर हस्ताक्षर किए कि उसे जल के बदले शांति मिलेगी लेकिन संधि के अमल में आने के पांच साल बाद ही पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर पर 1965 में हमला कर दिया था। और अब चीन पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर में बड़े डैम बना रहा है, पाकिस्तान भारत की छोटी परियोजनाओं पर आपत्तियां उठा रहा है।

सिंध दरिया की कहानी

जिस सिंधु अर्थात सिंध दरिया के बारे में बात की जा रही है उसकी कथा भी कम रोचक नहीं है। कहा यह जाता है कि वेदों में पवित्र दरिया गंगा का उल्लेख मात्र दो बार हुआ है जबकि जिस दरिया का उल्लेख 30 बार हुआ है वह कोई और नहीं बल्कि सिंधु दरिया ही है, जो पूरे हिमालय में बहता है। कहा जाता है कि रामायण में इसे महानदी के रुप में चित्रित किया गया है तो ग्रीक तथा रोम के शासनकाल में होने वाले सांस्कृतिक कार्यों में भी इसे स्थान मिला है। जबकि महाभारत में भी गंगा तथा सरस्वती नदियों के साथ साथ सिंधु दरिया का उल्लेख कई बार आता है।

यह याद रखने योगय तथ्य है कि सिंधु दरिया ने ही सिंध तथा हिन्द नाम दिए हैं। इतना ही नहीं सिंध दरिया पांच हजार पुरानी एक सभ्यता से भी परिचय करवाता है। सनद रहे कि हड़प्पा तथा महनजोदाड़ो सभ्यताओं के साथ-साथ सिंधु सभ्यता का नाम भी याद रखने योग्य है जो भारत के गौरव को बढ़ाता है। सिंधु दरिया विश्व के सबसे लंबे गिने जाने वाले दरियाओं में एक माना जाता है। इसकी लंबाई 2900 किमी है। दक्षिण-पश्चिम तिब्बत से इसका उदगम होता है जो 16000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यह लद्दाख में लेह के पास से भारत में प्रवेश करता है। 2900 किमी लंबी अपनी यात्रा के दौरान कुल साढ़े चार लाख वर्ग मील क्षेत्रफल को घेरता है जिसमें पौने दो लाख वर्ग मील तो हिमालय के पहाड़ों में ही समा जाता है।

लेह में प्रवेश के उपरांत 11 किमी की दूरी तय करने के पश्चात इसमें पहला मिलन जंस्कार का होता है। दरिया जंस्कार इसमें मिलता है जो जंस्कार घाटी को हरा भरा रखने में मदद करता है। यह दरिया जंस्कार घाटी को पार करने के बाद बटालिक के रास्ते से होता हुआ पाकिस्तान में जा मिलता है जबकि पूरे पाकिस्तान में घूमता हुआ यह सागर में गिरता है। पाकिस्तान की यात्रा आधी कर लेने के उपरांत इसमें उन दरियाओं का मिलन आरंभ हो जाता है जो भारत से पाकिस्तान की ओर बहते हैं। यह हैं जेहलम, चिनाब, रावी, व्यास तथा सतलुज। सिंधु दरिया का उल्लेख ऋग वेद में भी मिलता है तथा आर्य जाति के लोकगीतों में भी। भारत वर्ष का पुराना नाम भी सिंधु प्रदेश ही है। कहा तो यह भी जाता है कि जब भगवान शिव पार्वती के मृत शरीर को लेकर पर्वत पर्वत घूम रहे थे तो पार्वती का माथा सिंदूर के साथ इन्ही पर्वतों पर गिर पड़ा था जो आज कराची के पास सिंध बलुचिस्तान की सीमा पर स्थित है। कहा जाता है कि इस स्थान का दौरा भगवान राम, सीता तथा लक्ष्मण ने भी किया था। जबकि कवि-संत शाह अब्दुल लतीफ के काव्य में भी सिंधु अपना उल्लेख अवश्य देता है और आज यह दरिया जो पुरानी सभ्यता का द्योतक है नया पर्यटन स्थल बन गया है। ■

गोली का जवाब तो गोली ही है

पुलवामा में सीआरपीएफ के 44 जवानों को देश ने एक आतंकी कार्रवाई में खो दिया है। जाहिर है कि सारे देश में इस घटना को लेकर भारी गुस्सा है, आक्रोश है। 125 करोड़ भारतीय स्तब्ध हैं, शोकाकुल हैं और जवाबी कारवाई के लिए आतूर हैं । अब इस भयावह हमले का गहराई से विश्लेषण भी चालू हो गया है। यह विश्लेषण तो कई दिनों तक चलता ही रहेगा। कहा यह जा रहा है कि खुफिया सूत्रों ने हमले की आशंका एक दिन पहले ही व्यक्त कर दी थी, फिर भी सुरक्षाबल ने इस और ध्यान क्यों नहीं दिया। जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल सतपाल मलिक ने भी माना है कि प्रशासन की तरफ से इस मामले में चूक हुई है। उन्होंने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में एक साथ जवानों की मूवमेंट नहीं होनी चाहिए थी।

बृजेश शर्मा

अब अपने आप में बड़ा सवाल यह है कि खुफिया एजेंसियों के इनपुट की अनदेखी क्यों होती है? हरेक बड़ी घटना के बाद खबरें आने लगती हैं कि खुफिया एजेंसियों ने हमले की आशंका तो पहले से जता दी थी। अगर खुफिया एजेंसियों की तरफ से एकत्र सूचनाओं की ही बार-बार अनदेखी की जानी चाहिए, तो फिर खुफिया एजेंसियों पर सरकारें हरेक साल हजारों करोड़ों रुपये फूंकती ही क्यों हैं? फिर तो इनके दफ्तरों पर ताले लगा देने चाहिए। पर बेहद दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि पुलवामा में देश के 44 शूरवीरों के दर्दनाक बलिदान के बाद भी हमारे कुछ कथित नेता बयानबाजी से बाज नहीं आ रहे हैं। अब जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला को ही ले लीजिए। वे पुलवामा की घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए एक खबरिया टीवी चैनल को कह रहे थे कि यह तो वहां रोज ही होता है। वे कश्मीर के सूरते हाल के लिए पकिस्तान को जिम्मेदार मानने तक के लिए भी तैयार नहीं थे। वे लगभग पूरी तरह से कश्मीर के हालातों के लिए भी भारत सरकार को ही जिम्मेदार मान रहे थे। हालांकि, वे खुद कई बार राज्य के मुख्यमंत्री रहे पर वहां हालात बिगड़ते ही रहे। वे कभी ये नहीं बताते कि कश्मीर के मसले का क्या हल है? अब्दुल्ला साहब सिर्फ इतना कह देते हैं कि बात करो। कोई उनसे पूछे, किनसे बात करो? क्या बात करो? भारत सरकार क्या अब टुच्चे पत्थरबाजों से बात करें? क्या भारत सरकार पाकिस्तान परस्त आईएसआई के टुकड़ों पर पलने वाले पृथकतावादियों से बात करे? खैर, अब्दुल्ला साहब से आप उम्मीद ही क्या कर सकते हैं। उन्होंने ही एक बार यह भी कहा था कि क्या भारत के बाप का है कश्मीर?

कश्मीर मसले की तह तक जाने के लिए आवश्यक है कि हम यह जान लें वहां इस्लामिक कट्टरपन की जड़ें बेहद गहरी हो चुकी हैं। लेव तोल्स्तोय का एक उपन्यास है हाजी मुराद। इसमें चेचन्या का शमील कमोबेश उसी तरह से रूस के खिलाफ जिहाद या पवित्र युद्ध की बात करता है जिस प्रकार मसूद अजहर और हाफिज सईद जैसे आतंकवादी करते हैं। इसकी पृष्ठभूमि 1951 की थी। रूस चेचन समस्या से उससे पहले से ही जूझता रहा होगा। लेकिन अब हम मानवता के शत्रुओं के प्रति प्रेम का प्रदर्शन नहीं कर सकते। हमें बातचीत से पहले भी सोचना होगा। हमने बातचीत बार-बार और बहुत कर ली है। अब वार्ता का वक्त निकल चुका है। हमारे पास अपने पड़ोसी चीन का उदाहरण है। चीन ने अपने देश के कट्टरपंथी मुसलमानों को छील कर रख दिया है। चीन ने मुस्लिम बहुल शिनजियांग प्रांत में रहने वाले कट्टरपंथी मुसलमानों को अच्छी तरह कस दिया है। उन्हें खान-पान के स्तर तक पर भी सब कुछ करना पड़ रहा है,जो उनके धर्म में पूर्ण रूप से निषेध है। यह सब कुछ चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के इशारों पर ही हो रहा है। मजाल है कि चीन के एक्शन पर दुनिया के किसी देश ने, पाकिस्तान या किसी तरह ने भी किसी तरह की प्रतिक्रिया जताई हो। 57 इस्लामिक देशों के संगठन ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कारपोरेशन (ओआईसी) ने भी अब तकचीन से शिकायत दर्ज करने की हिम्मत तक नहीं की है। चीन के शिनजियांग प्रांत के मुसलमानों को री-एजुकेशन कैंपों में लेकर जाकर इस्लाम से तौबा करके कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा से जोड़ने पर मजबूर किया जा रहा है। इन शिविरों में हमेशा दस लाख से अधिक चीनी मुसलमान रहते हैं। इन शिविरों में इनसे अपने ही धर्म की निंदा करने के लिए कहा जाता है। न करने पर इन्हें डराया-धमकाया, मारा-पीटा जाता है। यह सब कुछ इसलिए हो रहा है ताकि चीनी मुसलमान कम्युनिस्ट विचारधारा को अपना लें। वे इस्लाम की मूल शिक्षाओं से दूर हो जाएं। भारत को चीन जितना इस्लामिक कट्टरपंथियों के खिलाफ सख्त होने की तो जरूरत तो नहीं है, पर कड़ी कार्रवाई तो करनी ही होगी। चूंकि हमारा रुख अभी तक लचीला ही रहा है, जिसके चलते ही पुलवामा में खून-खराबा हुआ है। यह कहावत तो बुजुर्गों ने सोच समझकर ही कही होगी कि लात के देवता बैटन से नहीं मानते अब इन्हें लात की जरूरत आ गई है।

दरअसल कश्मीर घाटी में जब से हिज्बुल कमांडर बुरहान वानी को सुरक्षाबलों ने ढेर किया है, तब से वहां बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन और पत्थरबाजी होने लगे हैं। पत्थरबाजी में सुरक्षाबलों के सैकड़ों जवान बुरी तरह जख्मी भी हो चुके हैं। इन पत्थरबाजों पर भी जिस तरह की कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए थी, वो नहीं हुई। इनके प्रति नरम रवैया अपनाया जाता रहा है। कश्मीर प्रशासन में कई असरदार लोग पत्थरबाजों को गले से लगाते हैं। आतंकवादियों और पृथकवादियों के समर्थन में जवाहर लाल नेहरु यूनिवर्सिटी में राहुल गाँधी और सीताराम येचुरी का धरना और पृथकतावादी नारेबाजों का खुलकर समर्थन तो ध्यान में होगा ही।

बहरहाल, पुलवामा के शहीदों के प्रति देश का कर्ज तो तब ही उतरेगा जब कश्मीर से एक-एक भारत विरोधियों को टुकड़े-टुकड़े करके आग के हवाले कर धूल में मिला दिया जाएगा। अब सरकार को राहुल गांधी, ममता बैनर्जी या अरविंद केजरीवल जैसों राष्ट्र विरोधियों की बिना परवाह किए अपने सख्त फैसले खुद और तुरंत लेने होंगे। आपको याद होगा कि इन्ही नेताओं ने सर्जिकल स्ट्राइक के भी सरकार से पुख्ता प्रमाण मांगे थे। अब सरकार को उन मानवाधिकार संगठनों के झोलाछाप कार्यकर्ताओं की भी सुनने की जरूरत नहीं है, जो उग्रवादियों और आतंकवादियों को ही गले लगाते हैं। इनके लिए सैनिकों की जान का जाना तो सामान्य सी बात है। पंजाब में खालिस्तान आंदोलन के दौरान जब सुरक्षा बलों ने मौत के सौदागरों के खिलाफ कठोर कार्रवाई चालू की तब दिल्ली के सेमिनार सर्किट में घूमने वाले कथित मानवाधिकारवादियों ने शोर मचाना चालू कर दिया था। ये कहने लगे थे कि पंजाब में मासूमों का कत्ल हो रहा है। सरकार मानवाधिकारों का हनन कर रही है। पर जब आतंकी मासूमों को या पुलिसकर्मियों को मारते थे तब इनकी जुबानें सिल जाती थीं। पुलवामा की घटना का जवाब देने के लिए सरकार ने सेना को खुली छूट दे दी है। अब देश को मानवाधिकारवादियों की एक नहीं सुननी। गोली का जवाब सिर्फ गोली है ईंट का जवाब सिर्फ पत्थर है अब देश को आतंकवाद के खिलाफ अंतिम और निर्णायक लड़ाई लड़नी होगी। अब करो या मरो की स्थिति आ चुकी है। एक बार इंदिरा गाँधी ने बांग्लाभाषियों की व्यथा सुनकर बंगला देश को आजाद कराया था अब वक्त आ गया है कि मोदी जी सिंधियों, बलूचियों और मुहाजिरों की आवाज को सुने, और एक ही झटके में नापाक पाकिस्तान के चार टुकड़े कर सिंधियों और बलूचियों को भी आजाद कर दें। ■

भयंकर हादसों में मुंह फेर कब तक सोते रहेंगे हम?

23 दिसम्बर,1995 को हरियाणा के मंडी डबवाली और 13 जून,1997 को राजधानी के उपहार सिनेमाघर में हुए दिल-दलहाने वाले अग्निकांडों के बाद 12 फरवरी,2019 की तिथि भी इन्हीं मनहूस तिथियों की सूची में शामिल हो गई है राजधानी के खासमखास बाजार करोल बाग के होटल अर्पित पैलेस में 12 फरवरी को तड़के भीषण आग गई। आग की चपेट में आने से 17 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई।

आर.के. सिन्हा

जैसा कि हमारे यहां रस्म अदायगी होती है, हादसे के बाद घटनास्थल पर मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल भी पहुंच गए। कुछ देर तक घटनास्थल पर रहने के बाद फोटो सेशन और टी. वी. बाईट देकर वहां से निकल गए। अगर इन्होंने ही समय रहते नियमों का उल्लंघन करके चल रहे इन तमाम होटलों पर कार्रवाई कर ली होती तो करोलबाग जैसे गुलजार रहने वाले बाजार में मौत का मातम नहीं मनाया जाता। वहां की रोजमर्रा जिंदगी अपनी रफ्तार से चल रही होती। यहां अपने होटल में सोए लोग हमेशा के लिए मौत की गोद में सो नहीं जाते। हो सकता है कि हमारे युवा पाठकों को मंडी डबवाली जैसे स्वतंत्र भारत के सबसे भीषण और दुखदायी अग्निकांड की जानकारी न हो इसलिए थोड़ी सी सूचना अपडेट कर देता हूँ । उस दिन मंडी डबवाली के ग्रामीण इलाके की एक स्कूल में कार्यक्रम चल रहा था। शामियाने के नीचे बहुत बड़ी संख्या में स्कूली बच्चे,उनके अभिभावक और तमाम दूसरे लोग बैठे थे। उनके वहां से निकलने का सिर्फ एक ही रास्ता छोड़ा गया था। कार्यक्रम के शुरू होने के बाद वहां पर तिल रखने की जगह भी नहीं बची थी। सारे माहौल में उत्साह भरा था। तब ही शामियाने में लगी बिजली के तारों में शार्ट सर्किट के बाद अचानक आग लग गई। आग ने चंद मिनटों में ही वहां पर मौजूद सैकड़ों लोगों को काल के मुंह में समेट दिया। कमोबेश इसी तरह के हालातों से दो-चार हुए थे नई दिल्ली के पाश इलाके में उपहार में बार्डर फिल्म देख रहे अभागे लोग। उपहार सिनेमा हॉल में आग लगने के बाद उसके भीतर धुआं उठने लगा। जब वे अभागे दर्शक वहां से निकलने की कोशिश कर ही रहे थे कि उन्होंने पाया कि सिनेमा घर के सारे दरवाजे बंद थे। जरा सोचिए कि उन पर तब क्या बीत रही होगी। वे अपने सामने मौत को नाचते देख रहे होंगे।

मंडी डबवाली में डीएवी स्कूल में चल रहे सालाना आयोजन में 360 अभागे लोग, जिनमें स्कूली बच्चे अधिक थे, स्वाह हो गए थे। कुछ लोग तो यह भी दावा करते हैं कि मृतकों की तादाद साढ़े पांच सौ से भी अधिक थी। उधर उपहार में लगी भयंकर आग के चलते 59 जिंदगियां आग की तेज लपटों की भेंट चढ़ गईं थीं। मंडी डबवाली और उपहार त्रासदियों की तरह ही करोलबाग हादसे की जांच के भी औपचारिक आदेश दे दिए गए हैं। जाँच हो भी जाएगी और रिपोर्ट की फाइल आलमारियों की शोभा बढ़ाते रहेगी। कभी-कभी अपने देश की व्यवस्था पर गुस्सा आता है कि हमारे कर्णधार सिर्फ संवेदना व्यक्त करने या मुआवजा बांटने के अलावा भी कुछ करते हैं क्या? करोलबाग हादसे के शिकार लोगों के परिवार जनों के रोते-बिलखते अखबारों में फोटो देखकर मन उदास हो गया है। आखिर हम कब रोकेंगे इन हादसों को? लगता तो नहीं है कि कभी भी हम रोक पाएंगे। जरा पूछिए उनसे जिन्होंने मंडी डबवाली या उपहार जैसे हादसों में अपने किसी करीबी को खोया है। अब उपहार के नजदीक ही एक पार्क में हर साल 13 जून को उस हादसे में मारे गए लोगों की याद में कम से कम एक शोक सभा तो हो जाती है। उसमें हादसे के शिकार लोगों के कुछ परिजन भी आ जाते हैं। जरा सोचिए उस शोक सभा में आए लोगों के ऊपर अपने जिगर के टुकड़ों को याद करके क्या गुजरती होगी।

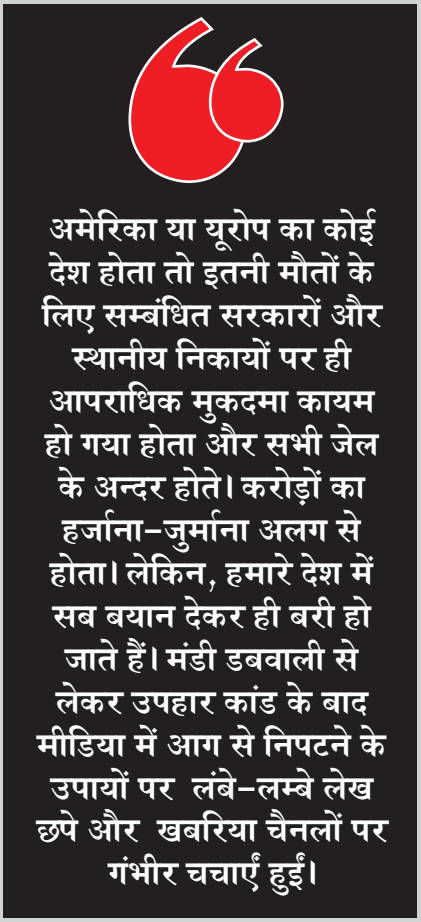

अगर मंडी डबवाली या उपहार से ही हमने कुछ सीख लिया होता तो मुंबई में दो साल पहले कमला मिल कंपाउंड में लंडन टैक्सी बार में रात को भीषण आग में 15 जानें नहीं जात। पुलिस ने बार के मालिकों के खिलाफ आईपीसी की धारा 304 के तहत केस तो जरूर दर्ज कर लिया था। पर उसके बाद क्या हुआ किसे को नहीं पता। यही तो हमारे यहां होता आया है। ले-देकर मामला सलटा दिया जाता है क पुलिस-प्रेस-पॉलिटिशियन सभी को उनमें ही समाज का भला दिखता है, तो भगवान ही भला करे इस महान राष्ट्र का।

जरा सोचिए कि कोई आदमी रेस्टोरेंट या बार में कुछ वक्त आनंद और मस्ती के लिए जाता है, पर वहां पर वो हादसे में दर्दनाक मौत का शिकार हो जाता है। यह ही तो हुआ था उपहार सिनेमा घर में फिल्म देखने गए लोगों के साथ भी। क्या इस देश में इंसान इसी तरह कुत्ते की मौत मरता ही रहेगा और, हम समाज के तथाकथित ठेकेदार मूक दर्शक ही बने रहें । कभी-कभी तो मुझे अपने सांसद होने पर गर्व नहीं ग्लानि की अनुभूति होती है । समझ में ही नहीं आता कि देश को संवेदनहीन बाबूगिरी से कब छुटकारा मिलेगा ।

इसके साथ ही, एक बात को अब मान लीजिए इन हादसों के लिए प्रशासन के साथ-साथ हमारा समाज भी जिम्मेदार है। हम सबको अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करनी ही होगी। मंडी डबवाली अग्निकांड के लिए वे तमाम लोग भी दोषी थे, जो वहां पर चल रहे कार्यक्रम को आयोजित कर रहे थे। मंडी डबवाली में लगे शामियाने में एकत्र लोगों के लिए बाहर निकलने का आखिरकार सिर्फ एक ही रास्ता क्यों छोड़ा गया था? क्या उन्हें मालूम नहीं था कि अगर कोई हादसा हुआ तो लोग निकलेंगे कैसे? सिर्फ एक ही रास्ता होगा तो फिर हादसे की हालत में धक्का-मुक्की तो होगी ही। मुझे याद है कि उपहार कांड के दौरान भी फायर ब्रिग्रेड की गाडियां भी वक्त पर इसलिए नहीं पहुंच पाईं, क्योंकि उस वक्त उपहार जाने वाले तमाम रास्तों पर भारी जाम लगा हुआ था। करोलबाग के ही बीडनपुरा में कुछ समय पहले हुए एक अगिनकांड के वक्त भी फायर ब्रिगेड की गाड़ियां भी बड़ी मुश्किल से घटना स्थल पर पहुंच पाईं थीं। जाहिर है, वाहनों को घटना स्थल पर पहुंचने में ही खासा विलंब हो गया था और वक्त पर मदद न मिलने से बहुत सी जानें चली गईं। बहरहाल, अमेरिका या यूरोप का कोई देश होता तो इतनी मौतों के लिए सम्बंधित सरकारों और स्थानीय निकायों पर ही आपराधिक मुकदमा कायम हो गया होता और सभी जेल के अन्दर होते। करोड़ों का हर्जाना-जुर्माना अलग से होता। लेकिन, हमारे देश में सब बयान देकर ही बरी हो जाते हैं। मंडी डबवाली से लेकर उपहार कांड के बाद मीडिया में आग से निपटने के उपायों पर लंबे-लम्बे लेख छपे और खबरिया चैनलों पर गंभीर चचाएँ हुईं। विशेषज्ञों ने अपनी राय भी रखीं। पर सरकारी विभागों के चाल, चरित्र और चेहरे में, काम-काज के ढर्रे में, तो कोई फर्क.नहीं नजर आया। किसी को कोई फर्क. नहीं पड़ता सिवाय उन लोगों के, जिनकी दुनिया हमेशा के लिए वीरान हो जाती है। सरकारें नागरिकों से तगड़ा टैक्स लेती हैं। दिल्ली में एमसीडी और मुंबई में बीएमसी टैक्स से अरबों रुपये की आमदनी है। लेकिन, आम शहरी की जान बचाने की ज़िम्मेदारी लेने के लिए भी कोई तैयार क्या? यकीन मानिए कि हम करोलबाग हादसे को भी जल्दी ही भूल जाएंगे। ■

ईकौमर्स कंपनियों में खलबली

औफर्स और कैशबैक अब नहीं..!

बदलते जमाने में ई-कॉमर्स की रूपरेखा बदल रही है। बदलाव से कोई खुश होगा तो कोई दुखी। ऐसा हर बदलाव से होता भी है। जमाना बदला है तो जमाने संग लोगों की सोच भी बदली। तौरतरीके, रंगढंग भी बदले। इसी बदली सोच का परिणाम है ऑनलाइन शौपिंग। ई-कॉमर्स या ई-व्यवसाय इंटरनेट के जरिए व्यापार का संचालन है। न केवल खरीदना व बेचना, बल्कि ग्राहकों के लिए सेवाएं और व्यापार के भागीदारों के साथ सहयोग भी इस में शामिल है।

सतीश पेडणेकर

पहले लोग बाजार जाते थे, चीजें देखते परखते थे, मोलभाव करते थे। उस के बाद पसंद आने पर खरीदते थे। मगर अब दुनिया बदल गई है। मोबाइल हाथ में क्या आया, हर आदमी यही समझता है कि मोबाइल हाथ में, तो दुनिया मुट्ठी में। पहले कुछ भी खरीदना हो, बाजार की सैर करनी ही पड़ती थी। कंप्यूटर और मोबाइल आने के बाद दुनिया बदल गई है। अब बाजार खुद उठ कर घर चला आता है। बिलकुल, जो मांगोगे वही मिलेगा वाला आलम है। इस को कहते हैं ऑनलाइन शॉपिंग। इस से खरीदारों के मजे हैं, मगर ऑफलाइन दुकानदारों की नींद हराम है। यदि ग्राहक घर बैठे खरीदारी करेंगे, मोटा डिस्काउंट पाएंगे और कैशबैक भी तो बाजार में दुकान खोल कर बैठे व्यापारी की तो शामत आनी ही है। यही हो रहा है। हर ग्राहक कहता है कि ऑनलाइन का जमाना है। क्यों न कहे? पहले बहुत मोलभाव करने पर व्यापारी थोड़ा सा डिस्काउंट देता था, अब ऑनलाइन कंपनियां बिना मांगे ही मोटा डिस्काउंट देती हैं। यदि कोई त्योहार वगैरह हो तो ये कंपनियां इतना डिस्काउंट दे देती हैं कि ग्राहक की आंखें चुंधिया सी जाती हैं। तब उसे वह कहावत याद आती है, आम के आम गुठलियों के दाम, वह भी घर बैठे।

ऑनलाइन शॉपिंग का क्रेज

ऑनलाइन शॉपिंग से ग्राहकों को जब संतुष्टि मिल रही हो तो शॉपिंग भला क्यों न फलेफूलेगी। 21वीं सदी के युवा मिलेनियम मानते हैं कि उन पर तो सनक सवार है ऑनलाइन शॉपिंग का। ऑनलाइन शॉपिंग करने वाले से पूछा जाए कि इस का सब से बड़ा फायदा क्या है, तो शायद हर ऑनलाइन शॉपिंग करने वाले उपभोक्ता का यही जवाब होगा कि इस का सब से बड़ा फायदा होता है। हैवी डिस्काउंट और कैशबैक। किसी फेस्टिवल सेल के दौरान तो यह सारी हदें पार कर देता है क्योंकि 80 प्रतिशत तक डिस्काउंट पर चीजें मिलने लगती हैं। यह अलग बात है कि छूट के तहत मिलता सामान पुराने स्टोक्स का क्लियरेंस माल है, जो सस्ते में नहीं बेचा गया तो एक्सपायर हो जाएगा। राशन सप्लायर ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म ग्रोफर्स, बिग बास्केट इसी मॉडल पर काम कर रहे हैं। इन के उत्पाद सस्ते हैं मगर एक्सपायरी डेट नजदीक होती है। लूट की छूट का असली खेल लोग नहीं समझ रहे हैं। मगर ऑनलाइन शॉपिंग के दीवानों के लिए बुरी खबर यह है कि सरकार ने ऐसे नियम बनाए हैं जो ऑनलाइन शॉपिंग के फायदे काफी कम कर देंगे। मोटा डिस्काउंट मिलना इतिहास की बात बन जाएगी। सरकार ने ई-कॉमर्स सेक्टर के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के नियमों में बदलाव किए हैं। जिस के तहत निश्चित कीमत से बहुत ज्यादा

लेकिन ये समर्थक क्या यह बता रहे हैं कि अमेरिकी कंपनियां आखिर क्यों अरबों रुपया लगा कर भारत में आना चाहती हैं। वे न उत्पादन तकनीक ला रही हैं, न व्यापार करने का सही तरीका बता रही हैं। वे तो भारत के व्यापार क्षेत्र में लंबे समय तक राज करने की मंशा के चलते भारतवासियों को हैवी डिस्काउंट, औफर्स और कैशबैक का लौलीपौप देने के साथ यहां के खुदरा कारोबारियों की कमर तोड़ रही हैं। इस के लिए वे टंपरेरी तौर पर रिस्क जरूर ले रही हैं।

डिस्काउंट देने की पॉलिसी खत्म हो जाएगी। डिस्काउंट और कैशबैक इतिहास की बात हो जाएगी। ये नियम पहली फरवरी से लागू होंगे। देश के 2 सब से बड़े ऑनलाइन मार्केट प्लेस, एमेजोन और वौलमार्ट के स्वामित्व वाली फ्लिपकार्ट को नए नियमों के तहत रेगुलेट किया जाएगा। जाहिर है इस से इन के सदस्य उपभोक्ता पर चोट होगी, व्यापार में ग्राहक भगवान होता है। मोदी सरकार उसी को नाराज कर रही है। आखिर, उसे खुदरा और औफलाइन व्यापारियों के वोट जो चाहिए। ऑनलाइन शॉपिंग का मोटा डिस्काउंट उन का व्यापार चौपट कर रहा है।

एमेजौन व फ्लिपकार्ट की मंशा

ऑनलाइन शॉपिंग में हैवी छूट की हकीकत कुछ और भी है। यह भ्रम है कि एमेजौन और फ्लिपकार्ट कंपनियां सही दाम ले कर ही उपभोक्ता को लाभ पहुंचा रही हैं। असल में यह नुकसान अमेरिकी कंपनी भारतीय ग्राहकों को लुभाने के लिए उठा रही हैं, ताकि छोटे भारतीय व्यापारी हमेशा के लिए समाप्त हो जाएं। 2017-18 में मार्च 31 तक एमेजोन का नुकसान वर्ष में 6,287 करोड़ रुपए था जबकि बिक्री मात्र 4,928 करोड़ रुपए थी। लागत से ज्यादा नुकसान कौन व क्यों सहेगा? इसलिए कि वे भारत के खुदरा व्यापार पर कब्जा कर के पूरा बाजार समाप्त कर देना चाहती हैं। एमेजोन अब तक 25,090 करोड़ रुपए विदेशों से ला कर भारत में लगा चुकी है, जिस का अधिकांश हिस्सा उस ने ग्राहकों को छूट देने, डिलीवरी की सुविधा देने और विज्ञापन पर खर्च किया है। यह एक तरह से ऐसा ही है जैसे अमेरिका ने अपनी फौज इराक भेज कर उस देश को नष्ट कर दिया था। यह आक्रमण, दरअसल, व्यापारिक है।

ई-कॉमर्स सेक्टर में एफडीआई के नए नियमों से फिलहाल सब से बड़ा घाटा उपभोक्ताओं को होगा। आज के दौर में अगर एक फोन भी खरीदना है तो रिटेल स्टोर्स पर कीमत की जानकारी लेने के बाद ऑनलाइन शॉपिंग की जाती है, ताकि हम छूट के साथ सस्ता सामान पा सकें। लेकिन अगर यह छूट बंद हो गई तो ऑनलाइन शॉपिंग का कोई फायदा ही नहीं रह जाएगा। चाहे होटल बुक करवाना हो, घर पर किराना सामान मंगवाना हो, किसी को फिल्म का टिकट बुक करवाना हो हर काम के लिए ऑनलाइन ऐप्स का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन इस का अंदाजा लगाया जा सकता है कि अगर नए नियम लागू हो गए तो उपभोक्ताओं को कितना नुकसान होगा। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि यदि खुदरा बाजार में केवल एमेजौन और फ्लिपकार्ट अमेरिकी पैसे के बलबूते पर बचीं तो आज नहीं तो कल वे इस की वसूली महंगा सामान बेच कर करेंगी ही। जब छोटे व्यापारी खत्म हो जाएंगे तो ये दोनों कंपनियां छूट देना बंद कर देंगी।

इतिहास का दोहराव

चीन में 2 सदी पहले जब अफीम का व्यापार शुरू किया गया था तो ईस्ट इंडिया कंपनी ने वहां सस्ती अफीम बेची, क्योंकि अंगरेजों की कंपनी ने भारत के व्यापार पर पूरा कब्जा कर लिया था। जब अफीम की वजह से चीन की कानून व्यवस्था चरमराने लगी तो अंगरेजों ने जबरन पानी के लड़ाकू जहाज भेज कर वहां के सम्राट को मजबूर किया कि व्यापार होने दे। बाद में चीनी सेनाओं ने अंगरेजों का मुकाबला किया। आज अमेरिकी पूंजी से भारत के व्यापार और खुदरा बाजार पर हमला हो रहा है। यह चोट अभी छोटे व्यापारियों को लग रही है, पर जल्दी ही उत्पादकों को चूसा जाएगा। यदि एमेजौन और वौलमार्ट की कंपनी फ्लिपकार्ट किसी कंपनी का बौयकाट कर दें तो चारदिनों में उस का दिवाला निकल जाएगा। ईस्ट इंडिया कंपनी ने चीन में अफीम बेचने का नायाब तरीका अपनाया था। उस ने अफीम खुद तो उगाई नहीं, पर उगाने वालों पर हर तरह कंट्रोल कर लिया। परमिट ले कर अफीम उगाई जाती और सस्ते में ईस्ट इंडिया कंपनी खरीदती। फिर उसे ऐसे प्रोसैस करती जिस से कि चीन तक जाने में वह खराब न हो। चीन में कई गुना ज्यादा दामों में वह बेची जाती। अंगरेजों की कंपनी बिना कुछ बनाए ऐसे ही पैसा बना रही थी, जैसे अब एमेजोन और फ्लिपकार्ट बिना कुछ तैयार किए पैसा कमा रही हैं। न तो वे सामान की प्रोडक्शन वैल्यू कम करती हैं न कुछ उत्पादित करती हैं।

सरकार की तुगलकी नीतियां

जब ई-कॉमर्स सैक्टर शुरू हुआ था तब सरकार इस के जरिए विदेशी पूंजी को आकर्षित करना चाहती थी। अब इस सेक्टर के फलनेफूलने से सरकार को खुदरा दुकानदारों को चिंता सताने लगी है जिन की संख्या करोड़ों में है। ऐसे में उसे नियम बदलने की घोषणा करनी पड़ी। अब इस क्षेत्र के पुराने खिलाड़ियों में खलबली मच गई है। बड़े उद्योगपतियों की हिमायती मोदी सरकार ने चूंकि विदेशी निवेश वाली ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश यानी फौरेन डाइरैक्ट इन्वेस्टमेंट (एफडीआई) के नियमों में बदलाव किया है, इसलिए इस का असर देश में एमेजोन और फ्लिपकार्ट के कामकाज के तरीके पर पड़ेगा। उद्योगपति मुकेश अंबानी की आने वाली ई-कॉमर्स कंपनी पर इन नियमों का कोई असर नहीं होगा। बाजार पर एमेजौन और फ्लिपकार्ट का कब्जा है। लेकिन रिलायंस के इस क्षेत्र में उतरने के बाद अब लड़ाई दिलचस्प हो गई है। नए नियमों के चलते भारत में फौरेन फंडिंग प्राप्त करने वाली कंपनियों के लिए हालात अब बदलने वाले हैं। जिन कंपनियों ने विदेशी निवेशकों से फंडिंग प्राप्त की है उन्हें भारत में वेयरहाउस खोलने की इजाजत नहीं होगी। कंपनियां अपने सेलर्स के जरिए भी वेयरहाउस का संचालन नहीं कर पाएंगी। वेयरहाउस के नहीं होने का सीधा असर कंपनियों की सप्लाई चेन पर पड़ेगा। ऐसे में कंपनियों के लिए डिस्काउंट और भारी सेल लगाना मुश्किल हो जाएगा।

सब से बड़ी डील

भारत का ई-कॉमर्स बाजार मुख्यरूप से एमेजोन और फ्लिपकार्ट के बीच बंटा हुआ है। वॉलमार्ट ने हाल ही में ई-कॉमर्स की सब से बड़ी स्वदेशी कंपनी फ्लिपकार्ट में 77 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी जिसे देश की अब तक की सब से बड़ी ई-कॉमर्स डील कहा जा रहा है। 16 अरब डौलर की डील पर इठलाने के बाद फ्लिपकार्ट की मुश्किलें अब बढ़ेंगी। इस के बाद लगातार आशंका जताई जा रही थी कि वॉलमार्ट इस के जरिए भारतीय ऑनलाइन बाजार में अपने उत्पादों की हिस्सेदारी बढ़ाने की कोशिश करेगी। लगभग यही स्थिति एमेजोन के साथ है जो इनहाउस उत्पादों की बिक्री करती है। ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस के लिए संशोधित एफडीआई नीति में वैंडर्स से भेदभाव की गुंजाइश भी खत्म कर दी गई है। संशोधित नीति में कहा गया है कि जिन रिटेल कंपनियों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसी ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस की हिस्सेदारी है या जिन वेंडर्स पर उन का नियंत्रण है, उन्हें सभी वैंडर्स से गैर भेदभावपूर्ण तथा तटस्थता के साथ सेवा प्रदान करनी होगी। यह प्रावधान बहुत अजीब है, क्योंकि कोई व्यापारी अपना माल न बेचे, यह कहां का न्याय है।

ग्राहकों को झटका

छोटे व्यापारियों के दबाव में जो परिवर्तन होने वाला है, उस से औनलाइन शॉपिंग करने वालों को झटका लग सकता है। अब एमेजौन, फ्लिपकार्ट, पेटीएम मौल और स्नैपडील जैसी वैबसाइट्स के डिस्काउंट पर नजर रखने के लिए नियम बन रहे हैं। सरकार ने हाल ही में ईकौमर्स क्षेत्र के लिए राष्ट्रीय नीति का मसौदा जारी किया है। इस में यह कहा गया है कि इस तरह की छूट की सीमा होनी चाहिए। इस में स्विगी, अर्बन क्लैप, पेटीएम और पौलिसी बाजार जैसी वैबसाइट्स को भी शामिल किया जाएगा। मसौदे में ईकौमर्स सैक्टर के लिए एक रैगुलेटर बनाने का भी प्रस्ताव है। यह रैगुलेटर ईकौमर्स कंपनियों के कारोबार पर नजर रखेगा। भारत में ईकौमर्स कारोबार तेजी से बढ़ रहा है। भारत के बाजार पर कब्जे के लिए फ्लिपकार्ट (वौलमार्ट), एमेजौन और रिलायंस रिटेल में मार्केट वार हो रही है। कहा जा रहा है कि ऐसे में इस सैक्टर के लिए नियम बहुत जरूरी हैं।

फिलहाल, कई ब्रैंड्स ऐसे हैं जो अपने उत्पाद सिर्फ ऑनलाइन ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए ही उपलब्ध कराते हैं। नए नियमों के तहत अब कोई भी वैंडर 25 फीसदी से ज्यादा इन्वैंटरी एक ही मार्केटप्लेस में नहीं रख सकेगा। यह नियम इसलिए है कि एमेजौन या फ्लिपकार्ट किसी कंपनी को बंधक न बना सके।

सिर्फ हमारे पास अब नहीं

ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए यह प्रोडक्ट सिर्फ हमारे पास जैसे लुभावने स्लोगन के दिन अब लद गए हैं। आम चुनाव से पहले खुदरा व्यापारियों को रिझाने के लिए सरकार ई-कॉमर्स कंपनियों पर नकेल कसने में जुट गई है। इसी के तहत सरकार ने ऑनलाइन मार्केटप्लेस मुहैया कराने वाली फ्लिपकार्ट, एमेजोन या इस तरह की दूसरी सभी कंपनियों को किसी भी प्रोडक्ट की एक्सक्लूसिव बिक्री संबंधी करार करने से रोक दिया है। ये सभी पाबंदियां पहली फरवरी से लागू होंगी। ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) संबंधी नियमों को संशोधित करते हुए वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने यह कदम उठाया है। नए नियमों के तहत किसी ऑनलाइन रिटेलर की ग्रुप कंपनी को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कीमतों को प्रभावित करने की अनुमति नहीं मिलेगी। इस कदम से ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा भारीभरकम डिस्काउंट का औफर देने पर रोक लग जाएगी। इस से खुदरा दुकानदारों को राहत मिलने की उम्मीद है। ये व्यापारी लंबे समय से ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा दिए जा रहे भारी डिस्काउंट पर रोक लगाने की मांग कर रहे हैं। वर्ष 2014 के आम चुनावों में नरेंद्र मोदी ने विदेशी कंपनियों के खुदरा बाजार में आने से रोक लगाने और घरेलू छोटे कारोबारियों के संरक्षण का वादा किया था। देश में खुदरा बाजार बहुत बड़ा है। एक अनुमान के मुताबिक, देश में लगभग 4 करोड़ खुदरा दुकानें हैं। इन के माध्यम से लगभग 14 करोड़ लोगों की रोजीरोटी जुड़ी हुई है। जीएसटी के कारण पहले ही सरकार से नाराज चल रहे व्यापारी ऑनलाइन कंपनियों पर कोई लगाम न लगाए जाने से भी नाराज चल रहे थे। सरकार ने जीएसटी की दर घटा कर व्यापारियों को मनाने का काम किया था पर वह काफी नहीं है, क्योंकि ज्यादातर बहुत महंगी चीजों पर ही जीएसटी की दर कम की गई है।

चुनावी हार का असर भी

यह सच है कि दिसंबर 2018 में आए 5 राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजों में हार मिलने से भाजपा आम चुनावों को ले कर डर गई। मजबूर हो कर वह ई-कॉमर्स के नियमों में बदलाव ला रही है। आने वाले चुनाव को ध्यान में रखते हुए सरकार को नीतियां बदलने को मजबूर होना पड़ा, क्योंकि इन खुदरा व्यापारियों की संख्या करोड़ों में है और वे भाजपा का जनाधार रहे हैं। जबकि, मोदी और अरुण जेटली इन्हें कालाबाजारिए मानते हैं जिन से वसूलने का मौलिक हक हर पंडा सरकार को है। लेकिन यह चोर के घर चोरी करने वाली नीति है। इस से जनता को दूरगामी नुकसान नहीं होंगे। ऑनलाइन बाजार के कारोबार पर अंकुश लगाने के लिए सरकार द्वारा तैयार की जा रही नई ई-कॉमर्स नीति खुदरा व्यापारियों को लुभाने में नाकाम रह सकती है। इस कदम के बावजूद सरकार को आगामी आम चुनावों में छोटे कारोबारियों का वोट पाने की उम्मीदों को झटका लग सकता है। चुनाव के कुछ समय पहले किए गए बदलाव मतदाताओं तक पहुंच नहीं सकते, इसलिए उन का लाभ सत्ताधारी पार्टी को नहीं मिल पाता। प्राइस वाटरहाउस कूपर की सितंबर की रिपोर्ट में अनुमान व्यक्त किया गया है कि ऑनलाइन कौमर्स अगले 5 वर्ष 25 प्रतिशत की दर से बढेगा और 2022 तक 100 अरब डौलर तक पहुंच जाएगा। निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार जो अंकुश लगाने जा रही है उस से विकास की इन संभावनाओं को नुकसान पहुंचेगा। वजीर एडविजर के रिटेल कंसल्टैंट हरमिंदर सहानी के मुताबिक, नई ई-कॉमर्स नीति कहती है कि ऑनलाइन रिटेल व्यापार को भारतीयों को ही चलाना चाहिए। ■

पश्चिम बंगाल में क्या लोकतंत्र जीवित है?

पश्चिम बंगाल में पिछले कुछ समय से जिस तरह की दमनकारी, नकारात्मक, अराजक एवं अलोकतांत्रिक घटनाएं हो रही है, शारदा चिट फंड घोटाले से जुड़े तथ्यों को सामने आने से रोकने के लिये वहां प्रशासनिक ढ़ांचे, तृणमूल कांग्रेस और राज्य सरकार ने जिस तरह का अपवित्र एवं त्रासद गठबंधन कर लिया है, उसे देखते हुए एक बड़ा प्रश्न खड़ा है कि क्या वहां कानून का राज चलता है? क्या वहां लोकतंत्र जीवित है? यह आज एक बहुत बड़ा सवाल बन गया है।

मुनेश चौहान

जिस तरह के हालात पश्चिम बंगाल में हैं, उससे से साफ जाहिर होता है कि वहां कानून नहीं बल्कि ममता बनर्जी का शासन चलता है। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता, जो वह चाहती हैं राज्य में वही होता है। पिछले दिनों की घटनाओं पर नजर डालें तो साफ हो जाएगा कि पश्चिम बंगाल में कानून का राज किसी भी मायने में नहीं है। इन घटनाओं को देखते हुए महात्मा गांधी के प्रिय भजन की वह पंक्ति- सबको सन्मति दे भगवान में फिलहाल थोड़ा परिवर्तन हो- केवल ममता को सन्मति दे भगवान। एक व्यक्ति पहाड़ (जिद के) पर चढ़कर नीचे खडे.लोगों को चिल्लाकर कहता है, तुम सब मुझे बहुत छोटे दिखाई देते हो। प्रत्युत्तर में नीचे से आवाज आई तुम भी हमें बहुत छोटे दिखाई देते हो। बस! यही कहानी तब तक दोहराई जाती रहेगी जब तक लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन होता रहेगा।

आजाद भारत में पहली बार ऐसा हुआ है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर की जा रही जांच में किसी राज्य में पुलिस और सरकार ने बाधाएं खड़ी की है। शारदा चिट फंड घोटाले में दोषी होने के संदेह में आए एक प्रमुख सर्वोच्च पुलिस अधिकारी से पूछताछ के लिये पहुंचे सीबीआई अधिकारियों को राज्य पुलिस हिरासत में लेकर कोतवाली पहुंच गयी। कोलकाता पुलिस ने सीबीआई अधिकारियों के घरों को घेर लिया, इन गैरकानूनी कार्रवाईयों के चलते सीबीआई के कार्यालय के बाहर अर्धसैनिक बलों को तैनात करना पड़ा। ये घटनाएं ममता बनर्जी के इशारे पर हुई। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि न तो ममता सरकार राजनैतिक शुचिता में विश्वास रखती है, न लोकतांत्रिक मूल्यों को मान देती है और न ही सुप्रीम कोर्ट का आदर करती है। एक तानाशाही माहौल बना हुआ है। गुंडागर्दी वाली सरकार का साम्राज्य बना हुआ है। विडम्बना तो यह है कि मोदी सरकार से डरे एवं सहमे तृणमूल कांग्रेस समेत समूचे विपक्ष ने इन अराजक एवं अलोकतांत्रिक घटनाओं में साथ दिया है, लोकतंत्र के मस्तक पर कलंक लगाया है। सीबीआई की जांच कार्रवाई को बाधिक करके लोकतंत्र पर हमले की कुचेष्टा की है। न केवल लोकतंत्र को कुचलने का प्रयास हुआ है बल्कि पश्चिम बंगाल की आदर्श संस्कृति एवं राजनीतिक मूल्यों को भी धुंधलाया है। पश्चिम बंगाल हमारे देश की बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक संपदा का स्थल रहा है, वह चाहे रामकृष्ण मिशन की परंपरा हो या चाहें स्वामी विवेकानंद द्वारा चलाई गई परंपरा, नोबेल पुरस्कार से सम्मानित रवीन्द्रनाथ ठाकुर एवं जनसंघ के प्रथम संस्थापक अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी इसी धरती से थे और यही नहीं अभी हाल ही में इसी धरती के एक महान सपूत और देश के पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी को भारत रत्न दिया गया है। पूरे देश को बंगाल की धरती पर गौरव की अनुभूति होती है लेकिन बंगाल के अंदर आज जो कुछ भी चल रहा है उसने इस धरती के गर्व एवं गौरव की स्थितियों पर कालिख लगा दी है।

वामपंथ के कुशासन से मुक्ति के लिए पश्चिम बंगाल की जनता ने ममता बनर्जी को चुना था। मां, माटी और मानुष के नारे के बीच उम्मीद थी कि प्रदेश में लोकतंत्र को मजबूती मिलेगी, लेकिन प्रदेश के लोग आज ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। राजनीतिक हिंसा के क्षेत्र में ममता बनर्जी के शासन ने कम्युनिस्ट शासन की हिंसक विरासत को भी पीछे छोड़ दिया है। ममता के रुख से साफ लग रहा है कि वह भाजपा की बढ़ती लोकप्रियता से बौखला गयी हैं, आक्रामक बनी हुई है, गुस्सैल है। लेकिन स्वस्थ एवं आदर्श राजनीति इन मूल्यों से संचालित नहीं हो सकती। आज हमारी राजनीति की कड़वी जीभ ए.के. 47 से ज्यादा घाव कर रही है। उसके गुस्सैल नथुने मिथेन से भी ज्यादा विषैली गैस छोड़ रहे हैं। राजनीतिक दिलों में जो साम्प्रदायिकता, प्रांतीयता और जातिभेद का प्रदूषण है वह भाईचारे के ओजोन में सुराख कर रहा है। राजनीतिक दिमागों में स्वार्थ का शैतान बैठा हुआ है, जो समूची राजनीति छवि एवं आदर्श को दूषित कर रहा हैं। प. बंगाल की घटनाएं ऐसी ही निष्पत्तियां हैं।

इस व्यवस्था को हमेशा तरोताजा रखने की जिम्मेदारी भी हमारे पुरखों ने बहुत दूरदर्शिता के साथ ऐसी संस्थाएं बनाकर की जिससे भारत के हर नागरिक को किसी भी राजनैतिक दल की सरकार के छाते के नीचे हमेशा यह यकीन रहे कि उसके एक वोट से चुनी गई सरकार हमेशा सत्ता की पहरेदारी में कानून के राज से ही सुशासन स्थापित करेंगी।

भारत का लोकतन्त्र हमारे पुरखों द्वारा नई पीढ़ी के हाथ में सौंपा गया ऐसा अनूठा तोहफा है जिसकी छाया में ही हमने पूरी दुनिया में अपनी विशिष्ट जगह बनाकर लोगों को चैंकाया है। इस व्यवस्था को हमेशा तरोताजा रखने की जिम्मेदारी भी हमारे पुरखों ने बहुत दूरदर्शिता के साथ ऐसी संस्थाएं बनाकर की जिससे भारत के हर नागरिक को किसी भी राजनैतिक दल की सरकार के छाते के नीचे हमेशा यह यकीन रहे कि उसके एक वोट से चुनी गई सरकार हमेशा सत्ता की पहरेदारी में कानून के राज से ही सुशासन स्थापित करेंगी। सीबीआई जैसी सर्वोच्च जांच एजेंसियों का काम यह देखने का नहीं है कि कौन नेता किस पार्टी का सदस्य है, उसका काम सिर्फ यह देखने का है कि किसने अपराध किया है क्योंकि कानून के राज का मतलब सिर्फ यही है कि कानून को अपना काम आंखें बन्द करके करना चाहिए। सीबीआई की विधिसम्मत कार्रवाई के अलोकतांत्रिक एवं अराजक विरोध की घटनाओं का संज्ञान लेते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने आज जो फैसला दिया है उसका सन्देश केवल इतना है कि भारत के लोकतन्त्र का मतलब सिर्फ कानून का राज है बेशक शासन किसी भी पार्टी का हो सकता है। देश की सबसे बड़ी अदालत के न्यायमूर्तियों ने सीबीआई को आदेश दिया है कि शारदा चिट फंड मामले में वह कोलकाता के पुलिस कमिश्नर श्री राजीव कुमार से पूछताछ अपने दिल्ली मुख्यालय के स्थान पर शिलांग में कर सकती है, मगर बिना किसी तंग करने के तरीके अपना कर और इस क्रम में उन्हें गिरफ्तार करने का अधिकार उसे नहीं होगा। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला संतुलित है जिससे राज्य में अराजक स्थितियों की संभावनाओं पर विराम लगेगा। ऐसी संभावनाएं बनी थी कि सीबीआई शारदा जांच के नाम पर श्री राजीव कुमार की गिरफ्तारी करके राज्य की पुलिस में डर का माहौल बनाना चाहती है। ऐसा भी आरोप है कि सीबीआई का चुनावों से ठीक पहले ऐसा कदम राजनीति से प्रेरित है। इसीलिए सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला भारत के लोकतन्त्र की जीत है जिसमें सिर्फ कानून का राज चलता है। सवाल यह भी उठ रहे हैं कि अब तक जांच पूरी क्यों नहीं हुई? सीबीआई अब तक क्या कर रही थी? चुनाव की पृष्ठभूमि में ही यह जांच क्यों सक्रिय हुई। प्रश्न यह भी है कि प. बंगाल की मुख्यमन्त्री सुश्री ममता बनर्जी ने अपनी राज्य की राजधानी के पुलिस कमिश्नर के पक्ष में सत्याग्रह छेड़ कर अनेक संदेहों एवं संभावनाओं को जन्म दिया है। ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस को इतिहास से सबक लेना चाहिए और भारतीय लोकतंत्र का आदर करते हुए दमनकारी, नकारात्मक और अलोकतांत्रिक सोच से बचना चाहिए। उन्हें अपनी एवं अपनी पार्टी की चिंता को छोड़कर देश की चिन्ता करनी चाहिए। किसी भी राजनैतिक दल की सरकार का भी यह पवित्र कर्तव्य बनता है कि वह इस तरह की संस्थाओं का उपयोग बिना किसी राजनैतिक प्रतिशोध की भावना से इस प्रकार करे कि स्वयं उसके विपक्षी दल उसकी नीयत पर शक न कर सकें। संविधान का सबको सम्मान करना चाहिए। हमारे राष्ट्र के सामने अनैतिकता, भ्रष्टाचार, महंगाई, बढ़ती जनसंख्या की बहुत बड़ी चुनौतियां पहले से ही हैं, उनके साथ प. बंगाल में राजनीतिक अराजकता एक बड़ी चुनौती बनकर आया है। राष्ट्र के लोगों के मन में भय छा गया है। कोई भी व्यक्ति, प्रसंग, अवसर अगर राष्ट्र को एक दिन के लिए ही आशावान बना देते हैं तो वह महत्वपूर्ण होते हैं। पर यहां तो निराशा और भय की लम्बी रात की काली छाया व्याप्त है। लेकिन कब तक? ■

पुलवामा पर विरोधाभासी स्वर दुर्भाग्यपूर्ण

देश घायल है, वैचारिक बिखराव एवं टूटन को झेल रहा है, पुलवामा में आतंकी हमले के बाद समूचे राष्ट्र में आक्रोश की ज्वाला धधक रही है। लहूलुहान हो चुके इस देश के लोगों के दिल और दिमाग में बार-बार करतब दिखाती हिंसा को देखकर भय और आक्रोश होना स्वाभाविक है, विनाश एवं निर्दोष लोगों की हत्या को लेकर चिन्ता होना भी जायज है। इस तरह निदोर्षों को मारना कोई मुश्किल नहीं, कोई वीरता भी नहीं। पर निर्दोष जब भी मरते हैं, पूरा देश घायल होता है, राष्ट्रीयता आहत और घायल होती है। इन हालातों में हर कोई निर्दोष लोगों की हत्या का बदला चाहता है। क्योंकि इस आतंकी हमले ने देश की जनता को गहरा आघात दिया है और उसकी प्रतिक्रिया में आक्रोश, विद्रोह एवं बदले की भावना सामने आना स्वाभाविक है, क्योंकि घटना ही इतनी दुखद, त्रासद एवं भयावह थी।

देवेश शुक्ला

पुलवामा की आतंकी घटना को लेकर जैसा राष्ट्रीयता का स्पष्ट एवं सार्थक वातावरण बनना चाहिए था, वैसा वातावरण न होकर विरोधाभासी वातावरण का निर्मित होना अधिक चिन्तनीय है। वैसे तो हर एक का जीवन अनेकों विरोधाभासों एवं विसंगतियों से भरा रहता है। हमारा हर दिन भी कई विरोधाभासों के बीच बीतता है। लेकिन वीर जवानों की शहादत जैसे संवेदनशील मुद्दे पर हमारे देश की सोच में, हमारे तथाकथित राजनेताओं के व्यवहार में, उनके कथन में विरोधाभास परिलक्षित होना दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसा लग रहा है कि हमारा व्यवहार दोगला हो गया है। दोहरे मापदण्ड अपनाने से हम समस्याओं को सुलझाने की बजाय उलझा रहे हैं। इन स्थितियों ने भी देश को घायल कर रखा है। एक के बाद एक कुतर्कों एवं दोगलेपन से भरी बयानबाजी से देश का जनमानस पीड़ा महसूस कर रहा है। कमल हासन हो या नवजोत सिंह सिद्धू, कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा हो या कामेडियन कपिल शर्मा- इन लोगों ने न केवल निराश किया है बल्कि देश के जले घावों पर नमक छिड़कने का काम किया है। इनके बयान एवं कृत्य अक्षम्य है।

सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि हम हर स्तर पर अपने नेतृत्व को चुनने में भूल करते रहे हैं। अपने को, समय को पहचानने और अपने नेतृत्व को चुनने में भूल का ही परिणाम है कि तथाकथित नेता राष्ट्र के लिये बलिदान हुए जवानों की मौत को भुखमरी, बेरोजगारी, डिप्रेशन जैसी वजहों से मरने वालों से तुलना करने का दुस्साहस दिखा रहे हैं। ऐसा इसलिये हो रहा है कि हमने अपने आप को, अपने भारत को, अपने पैरों के नीचे की जमीन को नहीं पहचाना। अपने लच्छेदार भाषणों के कारण लोकप्रिय हुए सिद्धू का पाकिस्तान प्रेम ही नहीं बल्कि उनकी ताजा आतंकवादी घटनाओं पर बयानबाजी ने हद ही कर दी है। उनके अतिश्योक्तिपूर्ण, अराजक एवं अंतरराष्ट्रीय बयानों की तरफदारी करते हुए कामेडियन कपिल शर्मा भी जनता के घावों पर मरहम लगाने की बजाय उनको कुरेदने का ही काम कर रहे हैं। इन देश की हस्तियों को 40 जवानों का बलिदान सामान्य घटना लग रहा है। तभी उनका बयान है कि अनेक वजहों से लोग मरते हैं। ऐसा सिर्फ हमारे देश में नहीं होता, पूरी दुनिया में लोग मरते हैं, तब क्या आप अपनी जिन्दगी रोक देते हैं। क्या सिर्फ शोक मनाना ही काम है। और तो और फिल्म जगत से राजनीति चमकाने को तत्पर हुए दक्षिण भारत के सुपर स्टार रहे कमल हासन ने अपना ही राग अलापना शुरू कर दिया। नियति भी एक विसंगति का खेल खेल रही है। इस तरह के त्रासद बयानों से सत्ता को पाने की लालसा रखने वाले नेता कैसे राष्ट्रीयता को मजबूत करेंगे? यह नियति का व्यंग्य है या सबक? पहले नेता के लिए श्रद्धा से सिर झुकता था अब शर्म से सिर झुकता है।

कमल हासन ने तो जम्मू-कश्मीर में जनमत संग्रह कराने का सवाल उठा कर शर्म की हदें पार कर दी। इसके लिये उन्होंने प्रश्न किया है कि आखिर सरकार किससे डर रही है। अगर भारत ने अपने आपको अच्छा देश साबित करना है तो उसे इस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिए। इतना ही नहीं कमल हासन ने तो पाक अधिकृत कश्मीर को आजाद कश्मीर बता दिया। जब कमल हासन जनता के निशाने पर आए तो हर बार की तरह ऐसे घिनौने बयान से पल्ला झाड़ने वाले राजनेताओं की भांति ही

क्या कोई देशवासी चाहेगा कि कश्मीर की एक इंच भूमि ? भी पाकिस्तान के हाथ में चली जाए? कौन देश के जवानों की शहादत को सलाम नहीं करना चाहेगा? हर देशवासी राष्ट्र के स्वाभिमान के साथ जीना चाहता है लेकिन कुछ लोगों को शहीदों के खून की कोई चिन्ता नहीं है वे तो उनके खून के कतरों पर भी राजनीति करते हैं, जो विरोधाभास ही नहीं, दुर्भाग्य हैं।

उनकी पार्टी मक्कल निधि मय्यम की तरफ से बयान जारी कर कहा गया कि कमल हासन के बयान को तोड़-मरोड़कर पेश किया गया। कमल हासन ने केवल इतना कहा था कि कश्मीर के लोगों से बातचीत करनी चाहिए और उनसे पूछा जाना चाहिए कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं?

पुलवामा की घटना के बाद अपने आपको राजनेता मानने वालों के बयानों ने तो अपनी राजनीति चमकाने के लिये सारी सीमाओं को तोड़ दिया है। उनके बयान विरोधाभासी ही नहीं, दुर्भाग्यपूर्ण है। जिसकी भी एक सीमा होती है, जो पानी की तरह गर्म होती-होती 50 डिग्री सेल्सियस पर भाप की शक्ति बन जाती है। महाराष्ट्र में एक नेता को तो यह कहते हुए सुना गया कि राष्ट्रवाद का बुखार तेज है, इसे वोटों में तब्दील करो, राजनीतिक लाभ लो। देश में ऐसी बयानबाजी कर हम किस तरह का राष्ट्र बना रहे हैं? मुम्बई हमला हो या आतंकवादियों से मुठभेड़, उन पर जमकर राजनीति होती रही है। ऐसा लगता है कि कुछ राजनेता तो ऐसी घटनाओं का ही इंतजार करते हैं ताकि वे अपने बयानों से राजनीतिक जगह बना सके। यदि नेता ईमानदार होते तो देश के नेताओं के प्रति इतनी वितृष्णा एवं घृणा नहीं होती। कभी किसी नेता का बयान आ जाता है कि जो फौज में जाता है उसे पता होता है कि वह मरने के लिए ही जा रहा है। नेताओं की फिसलती जुबान से देश पहले भी कई बार घायल हो चुका है। देश बाहरी हमलों से ही नहीं, भीतरी एवं जिम्मेदार लोगों के बयानों एवं वचनों से ज्यादा घायल है, लहुलूहान हैं। भारत की राजनीति में काफी हद तक अनुशासन एवं मयार्दाएं कायम रही हैं। राष्ट्रहित के मुद्दों पर सभी राजनीतिक दल और नेता व्यक्तिगत और दलगत नीतियों, स्वार्थों से ऊपर उठकर एकजूट होते रहे हैं। वैचारिक भिन्नता के बावजूद व्यक्तिगत टीका-टिप्पणी और दलगत नीतियों, स्वार्थों से ऊपर उठकर एकमत होते रहे हैं। भले ही विपक्ष ने पुलवामा आतंकी हमले के बाद सरकार को पूरा समर्थन दिया है लेकिन देखने में आ रहा है कि सभी राजनीतिक दल और उनके नेता विभिन्न मंचों पर एक-दूसरे की धज्जियां उड़ाते नजर आ रहे हैं। एक-दूसरे पर व्यक्तिगत टिप्पणियां और शालीनता की हदें पार करते दिखाई दे रहे हैं। आज जनादेश का चारों तरफ मजाक बनाया जा रहा है। जनादेश का केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही महत्त्व नहीं है, इसका सामाजिक क्षेत्र में भी महत्त्व है। जहाँ राजनीति में मतों की गणना को जनादेश कहते हैं, वहां अन्य क्षेत्रों में जनता की इच्छाओं और अपेक्षाओं को समझना पड़ता है। जनादेश और जनापेक्षाओं को ईमानदारी से समझना और आचरण करना सही कदम होता है और सफलता सही कदम के साथ चलती है। जहां इसके अनुरूप नहीं चला जाता है, वहां धोखा है और धोखा देना एक नए माफिया का रूप बन गया है। जनाकांक्षाओं को किनारे किया जा रहा है और विस्मय है इस बात को लेकर कोई चिंतित भी नजर नहीं आता। जो शिखर पर हो रहा है उसी खेल का विस्तार आज हमारे आस-पास भी दिखाई देता है। उससे भी ज्यादा विस्मय यह है कि हम दूसरों पर सिद्धांतों से भटकने का आरोप लगा रहे हैं, उन्हीं को गलत बता रहे हैं और हम उन्हें जगाने का मुखौटा पहने हाथ जोड़कर सेवक बनने का अभिनय कर रहे हैं। मानो छलनी बता रही है कि सूप (छाज) में छेद ही छेद हैं। इसके लिये गजब की प्रतिस्पर्धा हैं। ऐसी प्रतिस्पर्धा तो पहले कभी नहीं देखी गई। राजनीति का उद्देश्य केवल वोट बैंक नहीं होता बल्कि समाज और राष्ट्र को सही दिशा देना भी होता है, स्वस्थ एवं आदर्श राष्ट्र का निर्माण करना भी होता है और देश को सशक्त बनाने के साथ-साथ उसकी रक्षा करना भी होता है। क्या कोई देशवासी चाहेगा कि कश्मीर की एक इंच भूमि? भी पाकिस्तान के हाथ में चली जाए? कौन देश के जवानों की शहादत को सलाम नहीं करना चाहेगा? हर देशवासी राष्ट्र के स्वाभिमान के साथ जीना चाहता है लेकिन कुछ लोगों को शहीदों के खून की कोई चिन्ता नहीं है वे तो उनके खून के कतरों पर भी राजनीति करते हैं, जो विरोधाभास ही नहीं, दुर्भाग्य हैं। ■

भारत-ईरान
धूल चटाएं धूर्त पाक को

सच में भारत और ईरान को जोड़ता है बीच में खड़ा पाकिस्तान। लेकिन ये दोनों देश पाकिस्तान के अंदर चलने वाली आतंक की फैक्ट्रियों से लहूलुहान हैं। ये फैक्ट्रियां भारत और ईरान में लगातार आतंक फैला रही हैं। पुलवामा की भयावह घटना के दौरान ही ईरान में भी एक आत्मघाती हमले में 27 ईरानी सैनिक मारे गए। ईरान का आरोप है कि उस आत्मघाती हमले में भी पाकिस्तान का ही हाथ है। इस घटना से सारे ईरान में भी पाकिस्तान के खिलाफ जबरदस्त आक्रोश है। ईरान ने अपने सुरक्षा बलों पर हुए आत्मघाती हमले के पीछे मौजूद एक जिहादी संगठन को पनाह देने का इस्लामाबाद पर खुला आरोप लगाया है।

असलम खान

1971 के कत्लेआम के मुद्दे पर पाकिस्तान-बांग्लादेश के रिश्ते लगातार खराब हो रहे हैं। जरा सोचिए कि पाकिस्तान उस कत्लेआम के गुनाहगारों के साथ खड़ा रहता है। अब समझ लीजिए उसका चरित्र किस तरह का है।

पाकिस्तान और ईरान के बीच 900 किलोमीटर की सीमा है। पाकिस्तान से ईरान इसलिए नफरत करता है, क्योंकि दोनों देशों की सीमा पर तैनात ईरान के सुरक्षाकर्मियों को पाकिस्तान के आतंकी मार कर भाग जाते हैं। साल 2015 में पाक के आतंकवादियों ने सैकड़ों सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया था। उसके बाद से लगातार ईरान में पाकिस्तान के मानव बमों के हमले होते रहे हैं। इस बीच, पुलवामा में सीआरपीएफ के जवानों पर हमले के लिए पाकिस्तान में सक्रिय जहरीले आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने जिम्मेदारी ले ली है। सारा भारत तो मानता ही है कि पुलवामा हादसे के तार पाकिस्तान से ही जुड़े हैं। यानी दोनों देश पाकिस्तान से फैलाए जा रहे आतंकवाद से त्रस्त हैं। अब भारत-ईरान के पास विकल्प भी कुछ अधिक नहीं बचे हैं। दोनों को पाकिस्तान से कूटनीति से लेकर हर स्तर पर लड़ना ही होगा। उसे ऐसी गहरी चोट देनी होगी कि पाकिस्तान ही नहीं विश्व भर के आतंकी कांप जायें आतंकवाद का नाम लेने सा ही। अब पाकिस्तान की निंदा या कड़ी निंदा करने का वक्त तो गुजर चुका है। भारत के कड़े रुख के चलते पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान भी कहने लगे हैं कि जंग से क्या होगा। हम आतंकवाद पर बात करने के लिए राजी हैं। लेकिन, अब बात करने पर हम तो राजी नहीं हैं न? लात के देवता बैटन से कहाँ सुनेंगें। अब तो उन्हें इतनी लात पड़नी जरूरी है कि वे जिन्दा दफन हो जायें।

दरअसल ईरान के पाकिस्तान से सटे दक्षिण-पूर्वी सिस्तान में विगत 13 फरवरी को एक आत्मघाती हमले में रिवोल्यूशनरी गार्ड के 27 सदस्य मारे गये थे। सुन्नी जिहादी संगठन जैश अल- अदल (न्याय की सेना) ने हमले की जिम्मेदारी ली है। तो कहीं जैश-ए-मोहम्मद है, तो कहीं जैश अल-अदल है। भारत-ईरान का पाकिस्तान के खिलाफ साथ-साथ मिलकर रणनीति बनाना जरूरी है। दोनों तरफ से दबाकर कुचल देने की जरूरत है पाकिस्तान को। यह इसलिए भी आवश्यक है कि पाकिस्तान ऐसे तो कभी नहीं सुधरेगा। उसके खून में भारत और ईरान के खिलाफ अलग-अलग कारणों से नफरत है। हाफिज सईद और मौलाना अजहर महमूद जैसे कुख्यात आतंकी पाकिस्तान में फल-फूल रहे हैं। उन्हें पाकिस्तान सरकार और सेना का पूर्ण संरक्षण प्राप्त है। वास्तव में ये ही भारत के ऊपर आतंकी हमले करवाने की रणनीति बनाते हैं। इन्हें भारत ने मुंबई हमलों से पठानकोट और पुलवामा तक देखा है। अगर बात ईरान और पाकिस्तान के बीच संबंधों की करें तो उसमें बड़ा बदलाव तब आया था जब दिसंबर,2015 में सऊदी अरब ने आतंकवाद से लड़ने के लिए 34 देशों का एक 'इस्लामी सैन्य गठबंधन' बनाने का फैसला किया था। लेकिन उसमें शिया बहुल ईरान को शामिल नहीं किए गया था। उस गठबंधन में सऊदी अरब ने पाकिस्तान को प्रमुखता के साथ जोड़ा था। इस कारण ईरान काफी नाराज हुआ था पाकिस्तान से। यह बात अलग है कि वो गठबंधन कभी कायदे से अपना काम ही नहीं कर सका। उस गठबंधन को ईरान विरोधी के रूप में भी देखा गया, जो सऊदी अरब का मुख्य क्षेत्रीय प्रतिद्वंदी है। इस बीच, 19 फरवरी को भारत आने से पहले सऊदी अरब के वली अहद (युवराज) मोहम्मद बिन सलमान ने पाकिस्तान की भी यात्रा की थी। उस यात्रा पर ईरान की नजरें गड़ी थी। क्योंकि ईरान और सऊदी अरब में कुत्ते-बिल्ली का बैर है। वैसे भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दोनों ही घोर प्रशंसक और मित्र हैं। पाकिस्तान मोटा-मोटी सऊदी अरब से साथ खड़ा होता है, पर वह ईरान से भी दूरी बनाकर भी नहीं रखना चाहता। पर ईरान को मालूम है कि जिस देश में शियायों का कत्लेआम होता हो वह देश उसका मित्र हो ही नहीं सकता। बहरहाल अब भारत-ईरान को साथ मिलकर पाकिस्तान को हर स्तर पर घेरना होगा। यह एक विचित्र संयोग है कि पिछले साल भी ईरान और भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ तगड़ा मोर्चा खोला था। भारतीय सेना ने आजाद कश्मीर में आतंकी शिविरों पर सर्जिकल स्ट्राइक किया था, उसी दिन ईरान ने भी पाकिस्तान पर हमला किया था। उस रात भारतीय सेना ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में घुसकर 38 आतंकी मार गिराए थे। उसी समय पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा पर ईरान ने मोर्टार दागे थे। ईरान के बॉर्डर गार्ड्स ने सरहद पार से बलूचिस्तान में मोर्टार दागे थे। यकीन मानिए कि ईरान-पाकिस्तान के बीच संबंध कभी भी सामान्य नहीं होंगे। पाकिस्तान पक्का चमचा है ईरान के शत्रु सऊदी अरब का। ईरान-पाकिस्तान में इसलिए भी तनातनी रही है, क्योंकि ईरान शिया देश है, तो पाकिस्तान कट्टर सुन्नी मुस्लिम देश है। पाकिस्तान की सऊदी अरब से नजदीकियां कभी भी ईरान को रास नहीं आई हैं।

हैरानी होती है कि पाकिस्तान से तो उसके सभी पड़ोसी देश नाराज ही हैं। अफगानिस्तान की ही बात कर लीजिए। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच दशकों से लगातार तनाव चल रहा है। हालाँकि, वह भी इस्लामिक देश है। काबुल भी पाकिस्तान पर अक्सर यह इल्जाम लगाता हैं कि पाकिस्तान आतंकियों को अपनी जमीन पर सुरक्षित ठिकाने मुहैया कराता रहा है। इसके साथ ही तालिबानियों को अपनी सीमा में दाखिल कर अफगानी और पश्चिम देशों की सेना पर हमले करवाता रहा है और तो और बांग्लादेश भी जो कभी उसका अपना अंग था, भी पाकिस्तान को फूटी नजर नहीं देख पाता। कारण यह है कि बांग्लादेश को पाकिस्तान से शिकायत है कि वह उसके घरेलू मामलों में दखल देता है। बांग्लादेश बार-बार कहता रहा है कि वो पाकिस्तान की ओर से उसके आतंरिक मसलों में हस्तक्षेप करने को सही नहीं मानता। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना की पाकिस्तान से शिकायत रही है कि उसके तन-बदन में आग तो तब लग जाती है, जब बांग्लादेश में 1971के मुक्ति संग्राम के गुनाहगारों को फांसी दी जाती है। उन्हें दंड दिया जाना पाकिस्तान को बुरी तरह खल जाता है। 1971 के कत्लेआम के मुद्दे पर पाकिस्तान-बांग्लादेश के रिश्ते लगातार खराब हो रहे हैं। जरा सोचिए कि पाकिस्तान उस कत्लेआम के गुनाहगारों के साथ खड़ा रहता है। अब समझ लीजिए उसका चरित्र किस तरह का है। पर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खां बातें-दावें करते है कि वो आतंकवाद से लड़ने को तैयार है। जिस देश से ओसामा बिन लादेन मिला हो, उसकी बातों पर यकीन कौन करेगा? अब वक्त का ताकाजा है कि भारत-ईरान मिलकर पाकिस्तान को धूल चटाएं। ■

आपके शैक्षिक स्तर से ही सुनिश्चित होती है जीवन की सफलता:

दीपक चतुर्वेदी

शिक्षा जीवन में सफलता का आधार है शिक्षा के साथ-साथ अपनी संस्कृति एवं सभ्यता से जुड़ा रहना आपके संपूर्ण विकास के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। जी हां कुछ ऐसे ही जज्बात ए बयां हैं मृदुभाषी व्यक्तित्व और असाधारण सोच के धनी दीपक चतुर्वेदी के। दीपक कहते हैं कि हिन्दुस्तान की युवा शक्ति को टेक्नोलॉजी पर फोकस करने की जरूरत है क्योंकि टेक्नोलॉजी के दम पर ही हम विश्व में स्वयं को एक महाशक्ति के रूप में स्थापित कर सकते हैं। यूथ आईकॉन के रूप में पहचान रखने वाले दीपक चतुर्वेदी से एक इंटरव्यू के दौरान युवक पत्रिका ने बातचीत की। पेश है उनके साथ हुई चर्चा के खास अंश....

शिक्षा सिर्फ कैरियर का साधन है या संस्कारित भी करती है?
संस्कार का प्रश्न हो या करियर का, जीवन में हर चीज में शिक्षा अत्यंत उपयोगी है। आज हिंदुस्तान में जो भी समस्याएं हैं चाहे वह बेरोजगारी की हो या जनसंख्या वृद्धि की हो हर समस्या की एक ही वजह है और वह है अशिक्षा। शिक्षित समाज ही देश के विकास की बुनियाद है।

आधुनिक युग में बदलती लाइफस्टाइल में युवाओं को जीवन की क्या सीख देना चाहेंगे?
मैं यही कहूंगा कि जीवन में हमें हमेशा संस्कारों को विशेष महत्व देना चाहिये। साथ ही आप जिस वर्ग या जिस धर्म से ताल्लुक रखते हैं उसकी मान्यताओं के हिसाब से हमें कार्य करते हुए अपनी संस्कृति और सभ्यता को संरक्षित करने का कार्य करना चाहिए।

युवाओं के शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक यानी समग्र विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू क्या है?
युवाओं के समग्र विकास के लिए शिक्षा ही सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

आज युवाओं की आइडियल बदल रहे हैं जहां पहले लोग सुभाष चंद्र बोस और स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों से प्रभावित नजर आते थे वही आज सिनेमा जगत के सितारे उनके आइडियल बन रहे हैं। युवाओं की बदलती सोच को आप किस नजरिए से देखते हैं?
ऐसा नहीं है, आज लोग नरेंद्र मोदी जैसे व्यक्तित्व को भी अपना आइडियल मान रहे हैं और उनका अनुसरण कर रहे हैं समय के साथ लोगों की सोच का बदलना एक मानवीय प्रक्रिया है।

भारत सर्वाधिक युवाओं की आबादी वाला देश है, भारत को युवा शक्ति के रूप में भी पहचाना जाता है। युवाओं के दम पर आप भारत के भविष्य की कैसी तस्वीर देखते हैं?
निश्चित रूप से भारत विश्व में युवा शक्ति के रूप में अपनी खास पहचान रखता है जरूरत इस बात की है कि हमें टेक्नोलॉजी पर और फोकस करना चाहिए और युवाओं को प्रेरित करना चाहिए कि वे टेक्नोलॉजी में और स्ट्रांग बनें। जापान, चाइना जैसे मुल्कों में टेक्नोलॉजी का कोर्स कम्पलसरी है जो कि हर स्टूडेंट को सबसे पहले कराया जाता है। इसी तरह से हमें अपने देश को टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए अपने युवाओं को और अधिक प्रशिक्षित करने की जरूरत है।

आज के युवाओं की सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता पहले के मुकाबले बढ़ी है इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?
निश्चित रूप से आज के युवाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है जो कि बेहद सकारात्मक संकेत हैं।

साहित्य और सिनेमा के प्रति युवाओं का नजरिया बदला है। आज का युवा साहित्य से विमुख होता जा रहा है इस पर क्या कहना चाहेंगे?
देखिए मुझे लगता है विद्यालयों के स्तर पर कोशिश की जानी चाहिए कि छात्र साहित्य के प्रति फिर से जागरूक हों क्योंकि साहित्य ही समाज का दर्पण है यह हमारी संस्कृति और सभ्यता से जोड़ने का काम भी करता है।

जीवन में आप लाइफ का सक्सेस मंत्रा किसे मानते हैं?
मेरा मानना है कि लाइफ में सिर्फ और सिर्फ एजुकेशन ही है जोकि सक्सेस मंत्र है अगर आप शिक्षित हैं तो आपको कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता।

आज आपने जो सक्सेस पाई है उसमें जीवन के किन आदर्शों को महत्वपूर्ण मानते हैं?
आज मैं जो कुछ भी हूं वह पिताजी से मिले संस्कारों और आदर्शों की वजह से हूं।

आज का युवा सोशल मीडिया पर अधिक सक्रिय है इसे आप किस नजरिए से देखते हैं?
सोशल मीडिया आज के दौर में काफी उपयोगी है इसके माध्यम से सूचना एवं उपयोगी जानकारी से लगातार हम स्वयं को अपडेट रख पाते हैं लेकिन इसका इस्तेमाल सीमित एवं सकारात्मक दिशा में किया जाए तो अच्छा है अन्यथा यह हमारे पतन का कारण बन सकती है।

आप साथी युवाओं को क्या संदेश देना चाहेंगे?
मैं यही कहना चाहूंगा कि शिक्षा को जीवन के केंद्र में रखते हुए लक्ष्य निर्धारित कर लगन और मेहनत के साथ आगे बढ़े, क्योंकि किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए उसका निर्धारण और उसकी प्लानिंग बहुत जरूरी है उसी के आधार पर आपकी सफलता सुनिश्चित होती है। ■

"जय मां मुझको ऐसा घर दे , जिसमें तुम्हारा मंदिर हो । ज्योत जले दिन रैन तुम्हारी, तुम मंदिर के अंदर हो।"

घर में करनी है मंदिर की स्थापना तो इन बातों का रखें ध्यान

घर एक मंदिर है। हर व्यक्ति चाहता है कि उसके घर में शुभ ऊर्जा का प्रवाह रहे। जिसके चलते वह अनेकों उपाय व उपचार करता है। हम सभी के घर में एक ऐसा स्थान होता है, जिसे हम मंदिर कहते हैं। जहां पर हम अपने इष्ट को विराजमान करते हैं। मंदिर को सही दिशा में रखना बहुत ही महत्वपूर्ण है। वास्तु विज्ञान अनुसार मंदिर की सर्वोत्तम दिशा है ईशान कोण यानी उत्तर पूर्व दिशा। जहां हम अपने इष्ट को विराजमान कर सकते हैं। अगर घर का उत्तर पूर्व उपलब्ध ना हो तो हम अपने घर के मंदिर को घर की पूर्व दिशा में भी रख सकते हैं। मंदिर का पूर्व दिशा में होने से सूर्य ऊर्जा हमें स्वतः प्राप्त होती है।

ध्यान रहे घर के मंदिर को कभी भी दक्षिण दिशा में न बनाएं । घर का मंदिर कभी भी शयनकक्ष व रसोई घर में न हो। घर मे मंदिर से सटा हुआ शौचालय होना वर्जित है। जिस कक्ष में शौचालय हो, वहां पर मंदिर कदापि न बनाएं।

मंदिर में देवी देवता का चित्र या मूर्ति पूर्व या उत्तर दिशा में रखें। मूर्तियों की व्यवस्था इस तरह के रखे, जिससे हमारा मुख पूजा करते समय पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ हो। किसी भी देवी देवता का चित्र या मूर्ति एक या एक से अधिक नहीं होनी चाहिए । घर के मंदिर में हम अपने गुरु का चित्र रख सकते हैं। महापुरुषों का भी चित्र लगाया जा सकता है। किंतु मंदिर के दक्षिण दिशा की दीवार पर। अपने परिवार के पूर्वजों की तस्वीर मंदिर में कदापि न लगाएं। शनि देव की मूर्ति या चित्र घर में रखना वर्जित है। किसी भी देवी देवता का चित्र खड़ी हुई मुद्रा में ना हो। ऐसा करने पर उस देवी देवता की का आशीष हमारे लिए अस्थाई हो जाता है। मंदिर में रखी मूर्ति 6 इंच से अधिक बड़ी नहीं होने चाहिए। मंदिर में देवी देवता के चित्र या मूर्ती अधिक मात्रा में भी न रखें। अपने घर के मंदिर में शंख, गोमती चक्र और जल का लोटा सदैव होना चाहिए। कई घरों में देखा गया है कि लोग अपने घर का मंदिर सीढ़ियों के नीचे बना लेते हैं । यह एक वास्तु दोष है। मुख्य द्वार के ठीक सामने भी मंदिर होना वर्जित है। मंदिर घर के स्टोर रूम में भी न बनाएं। किसी भी पक्षी या जानवर का चित्र मंदिर में लगाने से परहेज करें। मंदिर की दीवार का रंग हल्का पीला या सफेद होना उचित होता है। मंदिर में गहरे रंगों का प्रयोग करने से बचें। बच्चों का अध्ययन कक्ष और मंदिर एक साथ बनाया जा सकता है। किंतु ध्यान रहे कि अध्ययन की मेज और मंदिर के बीच कुछ दूरी होनी आवश्यक है। मंदिर के शिखर के आसपास की जगह पर कोई वस्तु या सामान न रखे। सकारात्मक ऊर्जा प्रभावित होती है। अब यह तो हो गई मंदिर स्थापना की बात। अब बात करते हैं कि कैसे अपने मंदिर को जागृत करें। मंदिर को जागृत करने के लिए वहां नियमित साफ सफाई रखें। पूजा पाठ का समय सुनिश्चित करें। दोनों ही समय, सुबह-शाम शुद्ध देसी घी का दीपक या तिल के तेल का दीपक जलाएं। मंत्रोच्चारण करें। कोशिश करें कि मंत्रोच्चारण मध्यम ध्वनि में ही हो। हफ्ते में कम से कम एक बार अपने मंदिर की साफ सफाई डिवाइन पाउडर से करें। धूपबत्ती जलाएं। शुक्रवार को घी के दीपक मे कपूर का टुकडा डालें। इस तरह मंदिर मे सकारात्मक ऊर्जा जागृत होकर आपको शुभ फल देगी। ■

दीप्ति जैन, आधुनिक वास्तु एस्ट्रो विशेषज्ञ

दुनिया भर में बढ़ रहे हैं पर्यावरण संरक्षण के प्रयास

पर्यावरण की बर्बादी ने अब हमारी जीवनशैली को ही अपनी चपेट में ले लिया है। कई देशों के समझदार नागरिक और सरकारें अपने-अपने स्तर पर इससे निपटने का प्रयास भी कर रहे हैं, लेकिन भारत समेत तीसरी दुनिया के अनेक देश इस आसन्न संकट को भी भगवान की लील मानकर चैन से बैठे हैं। करोड़ों रुपये बहाने के बावजूद गंगा की मौजूदा बदहाली और बड़े बांधों के जरिए उसे मारने की सरकारी जिद इसी लापरवाही की एक बानगी है। ऐसे में दुनियाभर में दूसरे लोग क्या कर रहे हैं? प्रस्तुत है इसी विषय पर प्रकाश डालता डॉ. ओपी जोशी का यह लेख...

पिछले साल दुनियाभर में पर्यावरण संरक्षण को लेकर कई महत्वपूर्ण प्रयास हुए हैं। इन प्रयासों में एक है, करीब बारह हजार साल पुराना जर्मनी का हम्बख जंगल, जहां से अधिक नस्लों के पक्षी पाये जाते हैं। इस जंगल में पाये जाने वाले कोयले को निकालकर बिजली बनाने हेतु सरकार ने एक कम्पनी आरडब्ल्यूई को 1978 में अधिकार दे दिया था, जिसने पिछले 40 वर्षों में कोयला निकालने के लिए करीब 80 प्रतिशत जंगल काट डाले हैं। शेष बचे जंगल को बचाने की खातिर वहां के ग्रामीणों ने कम्पनी के विरूद्ध वर्ष 2012 से संघर्ष प्रारंभ किया था, जिसने 2018 तक विशाल रूप ले लिया। जंगल बचाने के हेतु डेढ़ से दो सौ लोग पिछले कुछ वर्षों से पेड़ों पर ही घर बनाकर रह रहे हैं। 9 सितंबर 2018 को जब पुलिस ने इस लोगों को पेड़ों से हटाने का प्रयास किया तो इसका भारी विरोध हुआ। हजारों लोग वहां पहुंचे और प्रतिकार में पेड़ों पर अपना आशियाना बनाया। भारी विरोध देखकर न्यायालय ने भी पेड़ों को काटकर कोयला निकलने पर अस्थायी रोक लगाने के आदेश जारी किये। लंदन में जर्मन दूतावास के सामने ग्रीन-पीस संस्था के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन कर कम्पनी का अनुबंध निरस्त करने की मांग की।

कम्बोडिया के रोवेग क्षेत्र के बेग वन्यजीव-अभयारण्य में लकड़ी के तस्करों ने पिछले कुछ वर्षों में 33 प्रतिशत जंगल काटकर समाप्त कर दिये हैं। सरकार जब इन तस्कारों के विरूद्ध कोई ठोस कार्यवाही नहीं कर पायी तो वहां के गांववासी जंगल को बचाने हेतु आगे आये। गांववासियों ने एक सेना बनाकर जंगल में कई स्थानों पर चौकियां कायम की और वहां रहकर निगरानी का कार्य किया। घूम-फिर कर निगरानी करने हेतु एक पेट्रोलिंग - टीम भी बनाई गई। गांव के लोगों के इन प्रयासों से डरकर तस्करों ने हाथ पीछे खींच लिए। इस पूरे कार्य में कहीं कोई संघर्ष नहीं हुआ।

मंगोलिया में इसी तरह घास के मैदान बचाए गए। पिछले कुछ वर्षों में घास के मैदानों के आसपास रहने वाले चरवाहे तथा घुमंतू जाति के लोग रोजगार के लिए शहरों में जाकर बस गये थे। पिछले वर्ष सरकार ने इन लोगों को वापस बुलाकर घास के मैदानों में पुनः बसाने का कार्यक्रम तैयार किया। इन लोगों को टेंट, जानवर और दूसरी सुविधाएं प्रदान की

गईं ताकि वे पहले की तरह जीवन-यापन कर सकें। इन लोगों की वापसी से घास मैदान सुधरने लगे एवं पर्यटकों की संख्या भी बढ़ने लगी। सरकार आगामी वर्षों में 20 लाख लोगों को वापस लाने की योजना पर काम कर रही है।

जंगलों को बढ़ाने हेतु पौधारोपण का एक सघन प्रयास कनाडा में किया गया है जहां चार करोड़ हैक्टेयर में फैले जंगल समाप्त हो गये थे। यहां देश के 6000 लोगों ने पिछले वर्ष 50 करोड़ पौधे रोपे जिनमें युवाओं की भागीदारी ज्यादा थी। पौधरोपण के लिए अनुकूल मौसम में जंगलों में शिविर लगाये जाते हैं। सरकार एक पौधा लगाने पर 10 सेंट देती है। एक सक्रिय युवा एक दिन में पांच से छह हजार पौधे रोप देता है। कई युवाओं ने पौधारोपण से प्राप्त राशि से अपनी पढ़ाई का ऋण तक चुका दिया। कनाडा सरकार ने 90 प्रतिशत जंगलों की देखभाल की जिम्मेदारी भी जनता को सौंप रखी है, जिसे जनता भी ईमानदारी से निभाती है।

दुबई के फैजल-मोहम्मद-अल-शिमारो ने कोई सघन पौधरोपण नहीं किया परंतु नार्वे के एक वैज्ञानिक की विधि से रेगिस्तान में टमाटर एवं भिन्डी की फसल तैयार की। इस विधि में 50 प्रतिशत पानी कम लगता है। समुद्री जल साफ करने एवं जल प्रदूषण रोकने के दो प्रयास भी उल्लेखनीय है। न्यूयार्क में समुद्र के किनारे रोजाना एक दर्जन से ज्यादा संस्थाओं के सदस्य डेढ़-दो फीट गहरे पानी में जाकर सीप छोड़ते हैं। इसका कारण यह है कि सीप केवल जैविक रत्न मोती ही नहीं बनाती, अपितु पानी को साफ एवं कीटाणु मुक्त भी रखती है। अभी तक इस तरह करीब तीन करोड़ सीप डाली जा चुकी हैं एवं वर्ष 2035 तक एक अरब सीप डालने का लक्ष्य रखा गया है। न्यूयार्क निवासी सीप डालकर पानी साफ कर रहे हैं तो दूसरी ओर नार्वे की एक जहाज कम्पनी हर्टिगुटन मरी हुई मछलियों से जहाज चलाने हेतु प्रयासरत है। मृत मछलियों से पैदा मीथेन गैस का उपयोग इस कार्य में किया जायेगा। जहाजों में जीवाश्म ईंधन के प्रयोग से प्रदूषण होता है एवं जलीय जीवों पर विपरीत प्रभाव। कम्पनी ने कहा है कि वर्ष 2019 में मृत मछलियों से चलने वाला पहला जहाज तैयार हो जायेगा।

यूरोप के प्रदूषित शहरों में 13वां स्थान पाने वाले पेरिस में 2018 में कारों की बिक्री लगभग 10 प्रतिशत घट गई है और वर्ष 2024 तक डीजल वाहनों को यातायात से हटाने की प्रक्रिया भी प्रारंभ कर दी गई है। नम्बरों की ऑड-ईवन व्यवस्था के साथ हर माह का पहला रविवार कारों से मुक्त किया गया है। पैदल एवं साइकिल को बढ़ावा देने के लिए कई क्षेत्रों में प्रातः 10 से शाम 6 बजे तक कारों का प्रवेश रोका गया है। जर्मनी में सार्वजनिक परिवहन में यात्रा करने पर कोई टिकिट नहीं लिया जाता। इससे लोग निजी वाहन छोड़कर ट्रेनों, बसों में ज्यादा यात्रा

मंगोलिया में इसी तरह घास के मैदान बचाए गए। पिछले कुछ वर्षों में घास के मैदानों के आसपास रहने वाले चरवाहे तथा घुमंतू जाति के लोग रोजगार के लिए शहरों में जाकर बस गये थे। पिछले वर्ष सरकार ने इन लोगों को वापस बुलाकर घास के मैदानों में पुनः बसाने का कार्यक्रम तैयार किया।

कर रहे हैं ताकि वायु प्रदूषण कम होने के साथ-साथ यातायात भी सुधर जाए। इटली के बोलोग्ना शहर में साईकिल चलाने वालों को मुफ्त में सिनेमा के टिकट, आइसक्रीम तथा बीयर दी जा रही है। यह सारा कार्य एक एप की मदद से अभी फिलहाल अप्रैल से सितंबर तक किया गया, जिसका लाभ हजारों लोगों ने लिया। बिल गेट्स फाउंडेशन की 40 करोड़ की सहायता से कनाड़ा की कार्बन इंजीनियरिंग संस्था ने नौ वर्षों में 70 करोड़ रूपये से वेंकुवर शहर के पास एक ऐसा संयंत्र तैयार किया है जो वायुमंडल से कार्बनडाई-ऑक्साइड सोखकर ईंधन में बदल देता है। एक टन कार्बनडाई-ऑक्साइड से ईंधन बनाने का खर्च महज 6500 रूपये होता है।

प्लास्टिक प्रदूषण कम या समाप्त करने के विश्व पर्यावरण दिवस पर किये गये वादये को मानकर कई देशों ने इस ओर कदम बढ़ाये हैं। एक बार उपयोग के बाद फेंकी जाने वाली प्लास्टिक की वस्तुओं की रोकथाम पर ज्यादा ध्यान दिया गया है। यूरोपीय संघ के 28 देशों में एक बार उपयोग में आने वाली प्लास्टिक की वस्तुओं के उपयोग में आने वाली प्लास्टिक की वस्तुओं के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने की संसद के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की गई हैं। ताईवान की होटलों में भी इसी प्रकार के नियम लागू किये गय हैं। ब्रिटेन में डिस्पोजेबल कप पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया गया है। वहां की संसदीय समिति ने सुझाव दिया है कि प्रत्येक कप पर 0.5 पेस (22 रूपये) का कर लगाया जाए एवं इससे प्राप्त राशि ज्यादा से ज्यादा पुनर्चक्रण पर खर्च की जाए। नीदरलैंड की राजधानी एम्सटर्डम में एक सुपर मार्केट (इकोप्लाजा) ने अपनी एक शाखा प्लास्टिक रहित बनाई है। यहां 700 प्रकार के खाद्य पदार्थों का बगैर प्लास्टिक के पैकिंग किया जाता है। इस मार्केट के देश में 74 स्टोर्स हैं जहां यह प्रयोग अपनाया जाएगा। चीन ने प्रदूषण की रोकथाम हेतु ना सिर्फ 19 हजार करोड़ की योजना बनाई है अपितु पर्यावरण के मानकों का उलंघन करने पर 528 करोड़ का जुर्माना भी लगाया है। प्रदूषण के प्रति लापरवाही के अपराध में लगाया है। प्रदूषण के प्रति लापरवाही के अपराधमें चार हजार अधिकारियों को जेल की सजा दी गई है। जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए नवम्बर में लंदन में हजारों लोगों ने प्रदर्शन किया। इन प्रदर्शनों से लंदन के पांच बड़े पुलों पर यातायात अवरूद्ध हुआ एवं सेंट्रल लंदन में भी घंटों जाम की स्थिति रही। कुल मिलाकर वर्ष 2018 में विदेशों में पर्यावरण संरक्षण के लिए किये गये सराहनीय, अनुकरणीय रहे। ■

खेती के लिए किसानों को ऋण लेना ही न पड़े

ऐसी स्थिति बनाइये

देश में राजनीतिक दलों ने सत्ता पाने का एक शॉर्टकट रास्ता खोज लिया है। जब भी चुनाव आये किसानों को उनके ऋण माफी की घोषणा करक उनके वोट लेकर चुनाव जीत जाओ। पिछले कुछ वर्षों से यही देखने को मिल रहा है। हाल ही में सम्पन्न हुये पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस हिन्दी भाषी क्षेत्र के तीन महत्वपूर्ण राज्य मध्य प्रदेश, राजस्थान व छत्तीसगढ़ में अपनी सरकार बनाने में कामयाब रही है। कांग्रेस की कामयाबी का मुख्य कारण कांग्रेस द्वारा किसानों के कर्ज माफ करने की घोषणा को माना जा रहा है। देश में किसान आये दिन आत्महत्या कर अपनी जान गंवा रहा है जिसका मुख्य कारण उनका कर्जदार होना है। देश के सभी क्षेत्रों के किसान आज कर्ज के बोझ से दबे हुये हैं। किसानों को उनकी उपज का सही दाम नहीं मिलना, प्राकृतिक कारणों से किसानों की फसल खराब हो जाना, खराब हुयी फसल का बीमा कम्पनियों द्वारा समुचित मुआवजा नहीं दिया जाना, किसानों को मिलने वाला बीज, खाद का नकली होने कुछ ऐसे कारण रहे हैं जिन्होंने किसानों को लगातार कर्जदार बनाये रखा है।

रमेश सर्राफ धमोरा

देश में राजनीतिक दलों ने सत्ता पाने का एक शॉर्टकट रास्ता खोज लिया है। जब भी चुनाव आये किसानों को उनके ऋण माफी की घोषणा करक उनके वोट लेकर चुनाव जीत जाओ। पिछले कुछ वर्षों से यही देखने को मिल रहा है। 2014 में भाजपा ने किसानों की आय दोगुनी करने का वादा कर केन्द्र की सत्ता हासिल की थी तो कांग्रेस ने पंजाब व कर्नाटक का चुनाव भी कर्ज माफी के नाम पर ही जीता था। सरकार बनने पर कुछ किसानों का थोड़ा बहुत ऋण माफ कर उनको उनके पूर्ववर्ती हाल पर छोड़ दिया जाता हैं। धीरे-धीरे किसान पुनः बैंकों से ऋण लेकर ऋणी हो कर पूर्ववत स्थिति में आ जाता है। ऐसे में सरकार किसानों की बार-बार कर्ज माफ करने के स्थान पर ऐसा कोई अन्य उपाय क्यों नहीं करती जिससे किसानों को बार-बार कर्जदार ना होना पड़े। देश के कई प्रदेशों में किसान आन्दोलन की सुगबुगाहट इस बात का द्योतक है कि देश के किसानों में अपनी लगातार बिगड़ती जा रही आर्थिक दशा को लेकर अन्दर ही अन्दर भयंकर आक्रोश व्याप्त हो रहा है।

हाल ही में तीन राज्यों में सरकार बनाने वाली कांग्रेस पार्टी के लोन माफी के वादे के उपरान्त गत एक सप्ताह में राजस्थान में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद कर्ज से परेशान राजसंद, झालावाड, श्रीगंगानगर, जोधपुर में चार किसानों ने आत्महत्या कर ली है। मध्य प्रदेश में दो किसानों ने आत्महत्या कर सरकार की ढुलमुल ऋण माफी नीति के मुंह पर करारा तमाचा मारा है। सरकारें घोषणा तो फटाफट कर देती हैं मगर उन पर अमल करते समय कानूनी-नियमों का ऐसा मकड़जाल बुना जाता है जिसमें अनपढ़ किसान फंस कर रह जाता है। कांग्रेस के गठबंधन से कर्नाटक में चल रही सरकार ने भी किसानों के ऋण माफी के बड़े-बड़े वादे किये थे मगर वहां सरकार बनने के बाद अब तक 250 किसानों ने कर्ज से परेशान होकर पिछले 6 महीने में आत्महत्या की है। हालांकि वहां के कृषि विभाग के सूत्रों का कहना है कि ये बता पाना मुश्किल है कि ये आत्महत्याएं कर्ज के कारण हुई हैं या किसी और कारण से, लेकिन असलियत तो ये है कि कांग्रेस और जेडी (एस) की सरकार किसानों की आत्महत्या रोक पाने में असमर्थ है। एक समय पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने जय जवान, जय किसान का नारा दिया था। शास्त्री जी इस नारे के जरिये समाज में वह एक संदेश पहुंचाना चाहते थे कि किसान और जवान देश की दशा और दिशा तय करते हैं, अगर ये नहीं होंगे तो देश की दुर्दशा हो जाएगी। जहां जवान देश की रक्षा करता है, वहीं किसान खेती के जरिये देश को अनाज देता है। अगर किसान नहीं होगा तो देश में अन्न के टोटे पड़ जायेंगे। आज हम जब जय किसान का नारा सुनते हैं तो कुछ अजीब-सा लगता है। आज किसान की जय नहीं बल्कि पराजय हो रही है। किसान भूखा और कमजोर हो रहा है। फसल बर्बाद होने की वजह से किसान आत्महत्या कर रहे हैं। कृषि और किसान भारतीय परम्परा के वाहक हैं। जब परम्परा मरती है तो देश मरता है। किसानों की खुशहाली से ही देश व सम्पूर्ण मानवता खुशहाल होगी। किसान खुशहाल नहीं होंगे तो देश को दुःखी होने से कोई नहीं रोक पायेगा। हमारे देश में किसानों की आत्महत्या एक राष्ट्रीय समस्या का रूप धारण कर चुकी है। आये दिन देश के

> देश का किसान अपनी फसल उपजाने के लिये मेहनत करने में कोई कमी नहीं छोड़ता है मगर उसके उपरान्त भी उसकी माली हालत कभी सुधर नहीं पाती है। कर्ज से परेशान होकर किसानों का आत्महत्या करना देश, प्रदेश की सरकारों पर कलंक है। जिस देश में किसान आत्महत्या करने को मजबूर होते हों वहां की सरकारों को शासन करने का हक नहीं होना चाहिये। लेकिन किसानों की आत्महत्या की घटनाओं से आंखें मूंदे बैठी सरकारों की सेहत पर कोई असर नहीं होता है। देश की सरकार ऐसा कोई समुचित उपाय कर पाने में नाकाम रही है जिससे किसानों की बढ़ती आत्महत्याओं की घटनाओं को रोका जा सके।

किसी ना किसी हिस्से से किसानों के आत्महत्या करने की खबरें मिलती रहती हैं। देश की प्रगति एवं विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के बाद भी किसानों को जिन्दगी से निराश होकर ऐसे कदम उठाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। यह निश्चित रूप से गंभीर चिंता का विषय है। देश में किसानों द्वारा आत्महत्या करने के मामलों में अप्रत्याशित तौर पर काफी वृद्धि हुई है।

भारतीय कृषि बहुत हद तक मानसून पर निर्भर है तथा मानसून की असफलता के कारण नकदी फसलें नष्ट होना किसानों द्वारा की गई आत्महत्याओं का मुख्य कारण माना जाता रहा है। मानसून की विफलता, सूखा, कीमतों में वृद्धि, ऋण का अत्यधिक बोझ आदि परिस्तिथियां समस्याओं के एक चक्र की शुरूआत करती हैं। बैंकों, महाजनों, बिचौलियों आदि के चक्र में फंसकर भारत के विभिन्न हिस्सों के किसानों ने आत्महत्याएं की हैं। भारत में किसान आत्महत्या 1990 के बाद पैदा हुई स्थिति है जिसमें प्रतिवर्ष दस हजार से अधिक किसानों के द्वारा आत्महत्या की रपटें दर्ज की गई हैं। चाहे सत्ता में कोई भी दल रहे मगर किसानों के लिए कोई भी दल गंभीर नहीं है। 2022 तक किसान की आमदनी को दो गुना करने के अपने सपने को साझा करते हैं। इस पर किसानों का कहना है कि ये नेता सिर्फ घड़ियाली आंसू बहाते हैं। ना पिछली यूपीए सरकार गंभीर थी और ना ही वर्तमान मोदी सरकार। यानी किसान अब सच्चाई समझने लगे हैं और शायद बड़े सपने देखने से कतराने भी लगे हैं। किसानों की आत्महत्या किसी भी समाज के लिए एक बेहद शर्मनाक स्थिति है। आखिर वो कौन सी परिस्थितियां हो सकती हैं जिसकी वजह से किसान जो सबके लिए अनाज उपजाता है वो आत्महत्या करने को मजबूर हो जाता है। भारत में अभी हाल के दिनों में किसानों के आत्महत्या करने के आंकड़ों में वृद्धि दर्ज की गयी है जो वाकई चिंता का विषय है और इस ओर अगर वक्त रहते ध्यान नहीं दिया गया तो ये हालात और भी बिगड़ सकते हैं। सरकार को किसानों की आत्महत्या जैसे ज्वलंत मुद्दे को समझने और उन कारणों, जिनकी वजह से किसान इतना बड़ा कदम उठाने पर मजबूर हो जाते हैं, का समाधान सोचने की आवश्यकता है। भारत जैसे एक कृषि प्रधान देश में किसानों की आत्महत्या बेहद चिंताजनक स्थिति है। कृषि क्षेत्र में निरंतर मौत का तांडव दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों का नतीजा है। दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों के चलते कृषि धीरे-धीरे घाटे का सौदा बन गई है, जिसके कारण किसान कर्ज के दुष्चक्र में फंस गए हैं। पिछले एक दशक में कृषि ऋणग्रस्तता में 22 गुना बढ़ोतरी हुई है। अतः सरकार को किसानों के लिये प्रभावी नीतियों का निर्माण करना होगा। सबसे बढ़कर इन नीतियों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना होगा। किसानों की स्थिति बेहतर बनाने और उन्हें आत्महत्या करने से रोका नहीं गया तो यह स्थिति और भी भयावह रूप धारण कर सकती है। उनके लिए फसल बीमा, फसलों का उच्च समर्थन मूल्य एवं आसान ऋण की उपलब्धता सरकार को सुनिश्चित करनी होगी तभी किसानों की स्थिति सुधरेगी और उन्हें आत्महत्या करने से रोका जा सकेगा। किसानों की बेहतरी के लिए सरकारों ने अभी तक कई समितियां बनाईं। इन समितियों ने अच्छी सिफारिशें भी प्रस्तावित कीं, फिर भी किसानों की हालात में कोई सुधार नहीं आया है। जमीनी स्तर पर आज किसानों की हालत बेहद खराब है। उन्हें तमाम परेशानियों से जूझना पड़ रहा है। किसानों की खुदकुशी रोकने के लिये यदि सरकार वाकई संजीदा है, तो वह जल्द से जल्द एक ऐसी योजना बनाए जिसमें किसानों के हितों का खास खयाल रखा जाए। किसानों के सामने ऐसी नौबत ही न आए कि वे खुदकुशी की सोचें। आज देश में किसानों की बेहतरी के लिये उनके ऋण को माफ करने की बजाय ऐसी योजना बनाकर उनको राहत प्रदान की जाये जिससे उनको खेती के लिये ऋण लेने की जरूरत ही ना पड़े। किसानों को उनकी उपज की लागत का वास्तविक मूल्य मिलने लगे तो उनकी अधिकांश समस्यायें ही समाप्त की जा सकती हैं। ■

शरीर के अलग-अलग हिस्सों में दर्द जाहिर सी बात है। अगर व्यक्ति ज्यादा काम कर लें या तनाव ले ले तो उसे दर्द होने लगता है। शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की थकान इंसान को परेशान करती है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि हर दर्द में दवा का सेवन नहीं करना चाहिए। क्योंकि कई बार दर्द का वास्तविक संबंध हमारे मस्तिष्क से भी होता है। किसी भी शारीरिक तकलीफ का मन से भी बहुत करीबी रिश्ता है। इसी वजह से जब व्यक्ति बहुत व्यस्त होता है तो चोट लगने पर भी उसे दर्द का एहसास नहीं होता। दर्द प्रबंधन में मनोविज्ञान की क्या भूमिका हो सकती है आइए जानते हैं। शरीर के अलग अलग हिस्सों में दर्द जाहिर सी बात है। अगर व्यक्ति ज्यादा काम कर लें या तनाव ले ले तो उसे दर्द होने लगता है। शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की थकान इंसान को परेशान करती है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि हर दर्द में दवा का सेवन नहीं करना चाहिए। क्योंकि कई बार दर्द का वास्तविक संबंध हमारे मस्तिष्क से भी होता है। किसी भी शारीरिक तकलीफ का मन से भी बहुत करीबी रिश्ता है। इसी वजह से जब व्यक्ति बहुत व्यस्त होता है तो चोट लगने पर भी उसे दर्द का एहसास नहीं होता। दर्द प्रबंधन में मनोविज्ञान की क्या भूमिका हो सकती है आइए जानते हैं।

सिर्फ इन 03 तरह के दर्द में ही लें पेन किलर्स

नहीं तो फायदे की जगह होगा नुकसान

युवक एडिटोरियल टीम

इन बातों का रखें ध्यान

- हमेशा सक्रिय रहें और रोजमर्रा के अधिकतर काम खुद करने की कोशिश करें।
- सक्रियता के साथ अपनी शारीरिक क्षमता की सीमाओं को पहचानना भी बहुत ज़रूरी है। अपने लिए पेन मैनेजमेंट की योजना बनाएं। फिर उस सीमा से बाहर जाकर कोई भी कार्य न करें।
- सामाजिक संबंध बढ़ाएं, जरूरत पड़ने पर अपनों से मदद मांगने में संकोच न करें।
- जब दर्द महसूस हो तो उस दौरान ध्यान बंटाने के लिए अपनी रूचि से जुड़े किसी कार्य में व्यस्त हो जाएं। इससे दर्द का एहसास कम होगा।
- डॉक्टर द्वारा दिए गए सभी निर्देशों का पूरी तरह पालन करें।
- नियमित दिनचर्या अपनाएं और पर्याप्त नींद लें। इससे आपके लिए पेन मैनेजमेंट करना आसान हो जाएगा।
- शरीर के विभिन्न हिस्सों में होने वाले दर्द का सामना सभी को करना पड़ता है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययनों के मुताबिक आज विश्व भर में लगभग 100 मिलियन लोग आंशिक रूप से किसी न किसी प्रकार के दर्द से पीड़ित होते हैं और इसी वजह से पेन किलर्स पर लोगों की निर्भरता बढ़ती जा रही है।

दर्द का मनोवैज्ञानिक पहलू

हर तरह के दर्द का प्रबंधन जनरल फिजिशियन और पेन किलर्स से नहीं किया जा सकता। कई बार कुछ मनोवैज्ञानिक कारणों से भी व्यक्ति को स्थायी दर्द की समस्या होती है, ऐसी में मनोचिकित्सक से सलाह लेना फायदेमंद साबित होता है। कई बार ब्रेन की किसी गड़बड़ी के कारण भी दर्द हो सकता है। यह एक जटिल अवस्था होती है, जिसमें शारीरिक रोग के लक्षण नजर आते हैं पर उसका संबंध मस्तिष्क से होता है। मसलन डिप्रेशन या एंग्जाइटी की वजह से भी ऐसा दर्द हो सकता है। ऐसे में मनोचिकित्सक से सलाह लेना फायदेमंद होता है।

तनाव है मूल वजह

लंबे समय तक होने वाले हलके दर्द के लिए प्रायः तनाव ही जिम्मेदार होता है। ऐसी स्थिति में मनोचिकित्सक मल्टीडिसिप्लिनरी तरीका अपनाकर स्थायी दर्द के इलाज का बेहतरीन विकल्प ढूंढते हैं। फाइब्रोमाइल्जिया या फाइब्रोसाइटिस भी एक ऐसी शारीरिक अवस्था है, जिसका कोई इलाज नहीं है। इसके लक्षण मांसपेशियों में दर्द का संचार करते हैं। इसमें बदहवासी, नींद या याददाश्त में कमी और मूड स्विंग जैसे लक्षण नजर आते हैं। भारतीय आबादी के बड़े हिस्से, खासतौर पर स्त्रियों में इन दोनों समस्याओं के लक्षण देखने को मिलते हैं। कई लोगों में वर्षों तक या आजीवन इसके लक्षण बने रहते हैं। कई बार व्यायाम की कमी, आनुवंशिकता, पोस्ट ट्रॉमेटिक डिसॉर्डर (किसी भी तरह की मानसिक या शारीरिक प्रताड़ना झेलने से होने वाली मनोवैज्ञानिक समस्या) के बाद भी व्यक्ति के शरीर में ऐसे लक्षण नजर आ सकते हैं। आमतौर पर ऐसी समस्या के उपचार के लिए दर्द निवारक दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है लेकिन

> कई बार दर्द का वास्तविक संबंध हमारे मस्तिष्क से भी होता है।

> मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि हर दर्द में दवा का सेवन नहीं करना चाहिए।

> हमेशा सक्रिय रहें और रोजमर्रा के अधिकतर काम खुद करने की कोशिश करें।

तनाव कम करने के लिए मसल्स स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज, मॉर्निंग वॉक जैसी एक्टिविटीज भी फायदेमंद साबित होती हैं। एक्सरसाइज करने से मांसपेशियों में मजबूती आती है। साथ ही शरीर में एंडॉर्फिन नामक हॉर्मोन का संचार बढ़ता है, जो दर्द और तनाव से लड़ने के साथ अच्छी नींद दिलाने में भी मददगार होता है। मालिश जैसी कॉम्प्लिमेंट्री थेरेपी से भी तनाव से संबंधित दर्द को दूर किया जा सकता है। योग, स्विमिंग और पिलेटीज एक्सरसाइज जैसी इंपैक्ट ऐक्टिविटीज भी दर्द निवारक दवाओं का बेहतर विकल्प साबित हो सकती हैं। फाइब्रोमाइल्जिया से पीड़ित लोगों को कुछ ही सेशन के बाद यह महसूस होने लगता है कि अब वे अपने दर्द का बेहतर प्रबंधन कर सकते हैं। इसके अलावा जिन्हें डिप्रेशन या डीजेनरेटिव मेडिकल कंडीशन यानी सामान्य स्वास्थ्य में गिरावट की समस्या हो, उन्हें भी मनोचिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए। ■

05

खतरनाक साइड इफेक्ट्स

1. कई बार ऐसा होता है की पेन किलर खाने से दर्द तो कम हो जाता है पर इससे एसिडिटी, उल्टी, डायरिया और पेट दर्द जैसी कई समस्याएं हो जाती हैं।
2. बहुत से लोगों की आदत होती है छोटी-छोटी समस्याओं में पेन किलर का सेवन करने की ,पर हम आपको बता दें की ऐसा करना आपकी सेहत के लिए बहुत नुकसानदायक साबित हो सकता है। अगर आप अधिक मात्रा में इन दर्द निवारक गोलियों का सेवन करते है तो इससे आपकी किडनी पर बहुत बुरा असर पड़ता है और साथ ही अधिक मात्रा में इन दवाओं के सेवन से किडनी के फेल होने का भी खतरा हो सकता है।
3. इन दर्द निवारक दवाओं को खाने से आपको थोड़ी देर के लिए तो दर्द से आराम मिल जाता है पर इनके सेवन से आपको हाई ब्लड प्रैशर जैसी समस्या हो सकती है।
4. कुछ लोग गठिया की समस्या में भी पेनकिलर का सेवन करते है,पर इन दवाओं के सेवन से आपकी हड्डियों को भी नुकसान पहुँचता है,और आपकी हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। पेनकिलर दवाओं का सेवन आपकी रीढ़ की हड्डी पर भी बुरा डाल सकती है।
5. प्रॉसीडिंग्स ऑफ दि रॉयल सोसाइटी बी में प्रकाशित एक अध्ययन के मुताबिक, फ्लू फीवर को ठीक करने के लिए पेनकिलर खाने से स्थिति और खराब हो सकती है। पेनकिलर फ्लू के बढ़ने के 5% चांस और बढ़ा देती हैं।

ये हो सकते हैं साइड एफेक्ट्स

- कॉन्सटपिशन या लूज मोशन्स।
- गैस्ट्रो-इन्टेस्टाइनिल समस्याएं।
- पेट में अल्सर या ब्लीडिंग।
- मानसिक समस्याएं जैसे अनिद्रा, ध्यान न लगना आदि।
- श्वास संबंधी दिक्कतें।
- त्वचा पर चकते और खुजली या जलन।
- लंबे समय तक पेन किलर के इस्तेमाल से लिवर और किडनी तक के खराब होने का खतरा हो सकता है।

वेब सीरीज में बनाएं शानदार करियर

पूरी दुनिया में नेटफ्लिक्स द्वारा वेब पर फिल्में रिलीज करने और तेजी से बढ़ती उनकी लोकप्रियता को देखते हुए बॉलीवुड के तमाम निर्माता और स्टार भी वेब सीरीज में रुचि ले रहे हैं। यहां नये चेहरों को भी अपनी अदाकारी से अलग पहचान मिल रही है। टेलीकॉम कंपनियों की ओर से सस्ता इंटरनेट डाटा मिलने से ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब मिल रहे हैं। ऐसे में अगर आपके पास भी कोई आइडिया है और थोड़ी-सी फिल्म मेकिंग की समझ, तो इन शॉर्ट फिल्मों में एक्टिंग, डायरेक्शन करके अच्छी कमाई कर सकते हैं...

ये रहेगी सैलरी

फिल्म मेकिंग में कमाई आपके टैलेंट पर निर्भर करती है। शुरुआत में इस फील्ड में भले ही कम पैसे मिलते हैं, लेकिन 4-5 साल का अनुभव हो जाने के बाद आगे बढ़ने की कोई सीमा नहीं है। फिर कमाई की भी कोई सीमा नहीं है। अगर आपने फिल्म मेकिंग में टेक्निकल पढ़ाई की है, तो शुरू में सैलरी 15 से 20 हजार रुपये आसानी से मिल जाती है। इसी तरह फिल्म, टीवी शोज, सीरियल्स और कॉमर्शियल्स में काम करके एक्टर और डायरेक्टर करोड़ों रुपये तक की फीस ले रहे हैं।

युवक एडिटोरियल टीम

पिछले एक-दो सालों से वेब सीरीज फिल्मों की लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है। अपने आसपा ही मेट्रो में, बसों में या फिर ट्रेनों में स्मार्टफोन पर इन फिल्मों में तल्लीन लोग देखे जा सकते हैं। घरों में भी फुरसत के समय में लोग इन फिल्मों को देखना काफी पसंद कर रहे हैं। अमेजन प्राइम, नेटफ्लिक्स और हाटस्टार जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर आजकल ऐसी फिल्मों की भरमार है। यूट्यूब पर भी इस तरह की फिल्में देखी जा रही हैं। युवा इस तरह की फिल्मों के सबसे अधिक दर्शक हैं। इसकी वजह यह है कि फिल्मों की जो कहानियां अब तक टैबू होने के चलते बड़े परदे पर नहीं दिखाई जाती थीं या फिर फिल्मकार जिन कहानियों को कहने से हिचकते थे, वे भी अब वेब सीरीज में देखी जा सकती हैं। कुल मिलाकर, वेब सीरीज ने अपने नए कंटेंट से दर्शकों के सामने मनोरंजन का एक नया विकल्प पेश किया है। इसके साथ ही वेब सीरीज फिल्मों के निर्माण में ऐसे कुशल युवाओं के लिए संभावनाएं भी लगातार बढ़ रही हैं, जो अपनी अलग सोच और क्रिएटिविटी से फिल्म मेकिंग, एक्टिंग, डायरेक्शन और पटकथा लेखन में पहचान बनाना चाहते हैं।

क्या है वेब सीरीज?

वेब सीरीज यानी स्क्रिप्टेड वीडियोज की सीरीज, जो अलग-अलग विषयों पर आधारित होती हैं। हाल के वर्षों में लोग फिल्मों और टीवी सीरियल्स के साथ-साथ वेब सीरीज की ओर भी तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। इन फिल्मों की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इन्हें देखने के लिए आपको किसी सिनेमाघर, मल्टीप्लेक्स या थिएटर में जाने की जरूरत नहीं है। इन्हें घर बैठे या चलते-फिरते यात्रा के दौरान अपने मोबाइल, टैबलेट और लैपटॉप पर ही देखा जा सकता है। दूसरे, फिल्मों और टीवी सीरियल की तरह यह बहुत लंबी अवधि का नहीं होता है यानी यह सिर्फ 15 से 45 मिनट की होती हैं और इसलिए ये दर्शकों को बोर नहीं करतीं। आमतौर पर किसी भी वेब सीरीज में 8-10 एपिसोड होते हैं, जिनमें अलग-अलग कहानियां होती हैं। कई बार डिजिटल प्लेटफॉर्म पर इन वेब सीरीज के सारे एपिसोड एक साथ लॉन्च कर दिए जाते हैं, तो कई बार हर हफ्ते इनका एक एपिसोड लॉन्च होता है। आजकल हिंदी और अंग्रेजी में तमाम नई-नई वेब सीरीज फिल्में यूट्यूब के अलावा नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम वीडियो जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध हैं, जहां से इन्हें आसानी से देखा जा सकता है।

कोर्स एवं योग्यता

देश के कई संस्थानों में फिल्म मेकिंग में डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्सेज ऑफर हो रहे हैं। ये कोर्सेज एक्टिंग, फिल्म ऐंड टीवी प्रोडक्शन, डायरेक्शन, सिनेमैटोग्रॉफी, फिल्म एडिटिंग, साउंड रिकॉर्डिंग, विजुअल मिक्सिंग तथा स्क्रिप्ट राइटिंग के रूप में उपलब्ध हैं। टेक्निकल कोर्स आप 12वीं के बाद कर सकते हैं, लेकिन यदि पीजी लेवल का कोई क्रिएटिव कोर्स करना चाहते हैं, तो इसके लिए किसी भी स्ट्रीम में ग्रेजुएशन होना जरूरी है। ■

बहुआयामी करियर

फिल्म एवं एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री बहुत बड़ा क्षेत्र है, जहां फिल्मों और टीवी सीरियल्स के निर्माण में प्रतिभाशाली युवाओं के लिए हमेशा काफी स्कोप रहा है। यह ऐसा फील्ड रहा है, जहां पैसा और शोहरत भी खूब है। आप एक्टिंग, डायरेक्शन, पटकथा लेखन, डायलॉग लेखन आदि के जरिए रातोंरात स्टार बन सकते हैं। सबसे अच्छी बात है कि इस फील्ड में हर तरह के युवाओं के लिए स्कोप लगातार बढ़ रहे हैं। जहां एक ओर वेब सीरीज जैसी शॉर्ट फिल्मों का चलन बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर रोज नए-नए चैनल्स आ रहे हैं। नए-नए सीरियल्स बन रहे हैं। कई भाषाओं में फिल्में बन रही हैं, जिसके लिए ज्यादा से ज्यादा नए डायरेक्टर्स, एक्टर्स और स्क्रिप्ट राइटर की जरूरत देखी जा रही है। इसके अलावा, ऐसे प्रशिक्षित प्रोफेशनल्स की जरूरत एड कंपनियों और कॉरपोरेट कंपनियों को भी है, जो टीवी और पत्र-पत्रिकाओं के लिए विज्ञापन और उसकी पंचलाइन लिखते हैं। इन्हीं बढ़ती संभावनाओं को देखते हुए आज भी फिल्म मेकिंग और एक्टिंग को एक उभरते हुए करियर के तौर पर देखा जाता है। इसमें अपने मनपसंद क्षेत्र में समुचित प्रशिक्षण हासिल करके आप भी फिल्मों के अलावा वेब सीरीज में एक्टर, डायरेक्टर, प्रोड्यूसर,कंपोजर, सिनेमैटोग्राफर,फोटोग्राफी डायरेक्टर, स्क्रिप्ट राइटर, साउंड एडिटर, फिल्म एडिटर आदि के रूप में एक शानदार करियर बना सकते हैं। यह कोर्स करके आप फिल्म मेकिंग के अलावा कॉरपोरेट कंपनियों और एनजीओज में प्रमोशनल फिल्म्स या डॉक्यूमेंट्र फिल्म्स बनाकर भी अपनी पहचान बना सकते हैं।

प्रमुख संस्थान

- फिल्म ऐंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे
- सत्यजीत रे फिल्म ऐंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट, कोलकाता
- भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली
- एनआरएआइ स्कूल, दिल्ली
- व्हीसलिंग वुड्स इंटरनेशनल, मुंबई

अब बच्चा प्राप्त करने के लिए यदि स्त्री अपने पति के अलावा किसी अन्य से सम्बन्ध बनाये तो उसे पाप की श्रेणी में रखने वाले कम नहीं हैं, पर क्या वास्तव में यह पाप है?

मेरे पापा सिर्फ आप हैं

आशीष बेतरह उदास था। मां की तस्वीर के आगे चुपचाप सिर झुकाए बैठा था। बार-बार आंखें आंसुओं से छलछला उठती थीं। बाइस साल के इकलौते बेटे को डॉक्टर बनाने का सपना पाले मां ने अचानक ही आंखें मूंद ली थीं। उनके जाने का किसी को यकीन ही नहीं हो रहा था। न आशीष को, न उसके पापा संजीव को और न ही परिवार के अन्य सदस्यों को। आज मां की तेरहवीं थी। बैठक के कमरे में सोफे हटा कर जमीन पर गद्दे डाल सफेद चांदनी बिछा दी गयी थी। सामने एक छोटी मेज पर मां फोटो में मुस्कुरा रही थी। पापा बार-बार उसके आसपास अगरबत्तियां लगा रहे थे। दरअसल इस बहाने से वो अपने आंसुओं को दूसरों की नजरों से छिपा रहे थे।

नसीम अंसारी कोचर

अभी कल तक तो भली-चंगी थी। कभी ब्लडप्रेशर तक चेक कराने की जरूरत नहीं पड़ी, और अचानक ही ऐसा कार्डिएक अटैक पड़ा कि डॉक्टर तक बुलाने की फुर्सत नहीं दी उसने। खड़े-खड़े अचानक ही संजीव की बाहों में झूल गयी। संजीव चीखते रह गये, रागिनी, रागिनी आंखें खोलो क्या हुआ आंखें खोलो रागिनी मगर रागिनी होती तब तो आंखें खोलती वह तो एक झटके में अनन्त यात्रा के लिए प्रस्थान कर चुकी थी। पापा की चीखें सुन कर आशीष अपने कमरे से बदहवास सा भागा आया पापा मां को तब तक जमीन पर लिटा चुके थे। आशीष ने भी मां को झकझोरा, मगर मां जा चुकी थी। जिसने भी सुना आश्चर्यचकित रह गया। कितनी भली महिला थी। हर वक्त हंसती-मुस्कुराती रहती थी। कभी किसी ने रागिनी को ऊंची आवाज में बात करते नहीं सुना था। मधुर वाणी, शालीन व्यवहार वाली रागिनी हरेक की मदद के लिए हर वक्त तैयार रहती थी। घर को तो उसने स्वर्ग बना कर रखा था। पति संजीव और बेटे आशीष पर उसका स्नेह हर वक्त बरसता था। दोनों ही उसके प्रेम की डोर में बंधे जीवन-आनन्द में डूबे थे कि अचानक ही यह डोर टूट गयी।

बैठक में काफी लोग जमा थे। सभी के चेहरों पर उदासी थी। बड़े-बूढ़े बारी-बारी से आकर आशीष के सिर पर हाथ फेर कर उसे सांत्वना देने की कोशिश कर रहे थे। अचानक एक हाथ आशीष के सिर पर काफी देर तक रुका रहा। आशीष ने सिर उठा कर पास खड़े सज्जन का चेहरा देखा तो एकटक देखता ही रह गया। वो हू-ब-हू उसकी ही तरह दिख रहे थे, बल्कि यूं कहें कि आशीष हू-ब-हू उनकी तरह था जैसे उनकी कार्बन कॉपी। बैठक में बाकी लोग भी आश्चर्यचकित से इस आगन्तुक को देख रहे थे। इससे पहले तो इन्हें कभी इस घर में नहीं देखा गया। कौन थे ये? और आशीष से इनका चेहरा और कदकाठी इसकदर कैसे मिलती है, बिल्कुल जैसे उसके बड़े भाई हों। आशीष का चेहरा-मोहरा न तो उसकी मां से मिलता था और न ही उसके पापा संजीव की कोई झलक उसमें थी, मगर इस आगन्तुक से वह इतना ज्यादा रिजेम्बल कैसे कर रहा है? हरेक की आंखों में यही सवाल था। आशीष और संजीव की आंखों में भी कि झ आप कौन हैं?

आगन्तुक ने आगे बढ़कर रागिनी की फोटो पर फूल चढ़ाये और हाथ जोड़कर वहीं संजीव के निकट ही बैठ गया। उसने धीरे से संजीव के कानों के पास मुंह ले जाकर कुछ कहा। फिर दोनों के बीच खामोशी पसर गयी। काफी देर तक वह आगन्तुक वहीं संजीव के पास ही बैठा रहा। बीच में धीरे-धीरे दो-चार बातें भी कीं। करीब आधे घंटे बाद वह उठे और संजीव व आशीष से विदा लेकर चले गये। गमगीन माहौल था, लिहाजा लोगों ने उस वक्त आगन्तुक के विषय में कोई सवाल नहीं किया, मगर लोगों के बीच फुसफुसाहट जरूर होती रही। शाम तक सभी लोग जा चुके थे। बैठक खाली हो गयी थी। बस संजीव और आशीष ही रागिनी की तस्वीर के साथ रह गये थे। तभी आशीष ने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा, पापा, वो अंकल कौन थे, जो बिल्कुल मेरी तरह दिख रहे थे? संजीव ने गहरी नजरों से आशीष

> **संजीव के दिल में यह शंका धुंधली पड़ गयी थी कि आशीष उनका नहीं, बल्कि किसी और का बेटा था। उन्होंने कभी यह शक रागिनी के सामने जाहिर नहीं किया। आशीष को उन्होंने बेइन्तहा प्यार दिया।**

के चेहरे की ओर देखा और बोले, वो वो तुम्हारी मम्मी के कॉलेज टाइम के दोस्त हैं। अभय अभय नाम है उनका। मैं भी आज पहली बार ही मिला हूं उनसे वो कल फिर आएंगे।

क्यों? उन्हें कुछ बात करनी है। कैसी बात? मम्मी ने तो कभी अपने इस दोस्त के बारे में नहीं बताया क्या आप भी इन्हें नहीं जानते थे? नहीं कल आएंगे तब पता चलेगा कि क्या बात करनी है उन्हें। कह कर संजीव उठे और अपने कमरे की ओर चल दिये। आशीष वहीं बैठा रहा। आगन्तुक, जिनका नाम पापा ने अभय बताया था, के बारे में सोचता रहा। कौन हैं, कहां से आये, कहां रहते हैं, क्या बात करनी है उन्हें, पहले कभी क्यों नहीं आये, मां ने उनके बारे में कभी कुछ क्यों नहीं बताया, मुझसे इतने क्यों मिलते हैं बहुतेरे सवाल उसके दिमाग में चक्कर काट रहे थे।

उधर संजीव के जेहन में भी बाइस बरस पहले की बातें चल रही थीं। इस आगन्तुक से मिलने के बाद जैसे उनकी पूरी जिन्दगी फ्लैशबैक में चलने लगी। रागिनी से उनकी शादी के पांच बरस बीत चुके थे और रागिनी की गोद सूनी की सूनी थी। पहले दो साल तो बेख्याली में गुजर गये, मगर तीसरा साल लगते-लगते संजीव की मां ने और रिश्तेदारों ने बहू को टोकना शुरू कर दिया था। मां को पोते का मुंह देखने की जल्दी मची थी। आये-दिन रागिनी को लेकर कभी इस पंडित के पास तो कभी उस ओझा के पास पहुंच जाती थी। तमाम टोने-टोटके करा लिये, अनेक डॉक्टरों से दवा-इलाज करवा लिया, मगर नतीजा कुछ नहीं निकला। कभी-कभी खिसिया कर रागिनी को कोसने भी लग जाती थी, बांझ है बांझ मेरे बेटे की तो तकदीर ही फूट गयी हाय, अब मेरा वंश कैसे बढ़ेगा इसकी तो कोख ही नहीं फल रही। मां की बातों से रागिनी बहुत आहत होती थी, कमरे में खुद को कैद करके फूट-फूट कर रोया करती थी। तब संजीव उसे बहुत दिलासा देते थे। कहते थे, रागिनी हमारी किस्मत में बच्चा होगा तो जरूर मिलेगा। अभी कौन सी हमारी उम्र निकल गयी है? तुम मां की बातों को दिल पर मत लिया करो। वो बूढ़ी हो गयी हैं। कुछ काम-धाम नहीं है तो तुम्हारे पीछे पड़ी रहती हैं। मगर रागिनी को संजीव की बातों से राहत नहीं मिलती थी। वह खुद बच्चे के लिए बड़ी परेशान रहती थी। उसकी सभी सहेलियों की गोद में बच्चे खेल रहे थे, बस वही थी जो बांझ होने का कलंक लिये घूम रही थी। यह कलंक वह किसी भी कीमत पर हटाना चाहती थी।

उन्हीं दिनों की बात है जब संजीव ने रागिनी को बताये बिना एक जान-पहचान के डॉक्टर से अपना भी चेकअप करवाया था। रिपोर्ट आयी तो पता चला कि बच्चा न होने का कारण वह खुद ही है। कमी संजीव में ही थी। उसके सीमन में शुक्राणु न के बराबर थे। रिपोर्ट देखकर डॉक्टर ने साफ कह दिया था कि वह कभी पिता नहीं बन सकता। हालांकि उन्होंने संजीव को कुछ दवाएं दी थीं, मगर दो महीने के सेवन के बाद भी शुक्राणुओं की संख्या में कोई वृद्धि नहीं दिखी।

संजीव अपना इलाज करवा रहे हैं, यह बात उन्होंने रागिनी को कभी नहीं बतायी और न ही कभी रागिनी के समक्ष यह स्वीकार कर पाने की उनकी हिम्मत हुई कि वह उसे बच्चा देने लायक नहीं हैं। वह डरते थे कि बात खुली तो उनके माथे पर नपुंसक, नामर्द जैसे कलंक चमकने लगेंगे। वह कैसे अपनी कमजोरी रागिनी के सामने स्वीकार करें? कैसे बतायें कि कमी रागिनी में नहीं, बल्कि खुद उनके अन्दर है? यह सच बताने के बाद वह कैसे रागिनी का सामना कर पाएंगे, जो उनकी मां के ताने सुन-सुन कर आधी हो चुकी है। मोहल्ले की औरतों के बीच बांझ के नाम से पुकारी जाने लगी है। वह अपने इलाज के बारे में चुप्पी साध गये। उनमें सच को कह पाने की हिम्मत ही नहीं थी। फिर एक दिन अचानक रागिनी ने घर में खुशियों का बम फोड़ दिया। शाम को संजीव ऑफिस से लौटे तो घर में औरतों का जमावड़ा लगा था। ढोल बज रहा था, गाने गाये जा रहे थे। चारों ओर चहचहाटें, रौनकें, हंसी-ठिठोली, किलकारियों के पटाखे छूट रहे थे।

संजीव के लिए बधाइयों का तांता लग गया। अपनी मां के चेहरे की खुशी देखकर तो वह दंग रह गये। इससे पहले उन्होंने अपनी मां को कभी इतना खुश नहीं देखा था। खुशी से उसका चेहरा दमक रहा था। मां ने उनके मुंह में लड्डू ठूंसते हुए कहा झ पांव भारी हैं बहू के देखना पहला तो पोता ही होगा। शमार्यी-लजायी रागिनी ने मुस्कुरा कर कमरे में संजीव का स्वागत किया। उसने संजीव को अपनी बाहों में जकड़ कर पूछा, तुम खुश हो न?

संजीव ने हौले से जवाब दिया, बहुत। उस दिन संजीव की बाहों में लिपटी रागिनी के चेहरे पर दर्द और टीस की जगह खुशी, शान्ति और सुख का नूर था, मगर संजीव के दिमाग में हलचल मची थी। वह जानते थे कि यह बच्चा उनकी देन नहीं है। फिर कौन है जिसने रागिनी को यह खुशी दी है? कब और कैसे वह रागिनी के सम्पर्क में आया? रागिनी उनसे छिप कर किसी और से मिलती थी? रागिनी ने उन्हें धोखा दिया? दम्भी पुरुष प्रवृत्ति उन पर हावी होने लगी। मगर साथ-साथ वह इस आशंका से भी भर गये कि कहीं डॉक्टर की दवाएं तो असर नहीं कर गयीं उन पर।। हो सकता है उनके सीमन में शुक्राणुओं की संख्या बढ़ गयी हो शायद वही इस बच्चे के बाप हों।। शायद विज्ञान का चमत्कार हो ही गया हो शायद शायद रात भर सैकड़ों सवाल उन्हें परेशान किये रहे, मगर सुबह तक वह एक फैसले पर पहुंच चुके थे। यह फैसला था आने वाले के स्वागत का।

रागिनी के पांव भारी होते ही वह जैसे पूरे घर की महारानी बन गयी। संजीव की मां जो हर वक्त उसको कोसती रहती थी, अब हर वक्त उसकी सेवा-टहल में लगी रहती थीं। उसको घर का एक काम नहीं करने देती। सुबह से शाम तक उसके खाने-पीने का ध्यान रखती। अपने हाथ से काजू-बादाम की खीर बना-बना कर खिलाती। तमाम तरह के जूस और सूप पिलाती। उसके लिए अपने हाथों से सूखे मेवे और सूजी के लड्डू बना-बना कर जार में रखतीं। रागिनी को बड़ा अटपटा लगता था कि इस बुढ़ापे में वह इतनी मेहनत कर रही हैं, मगर पोते का सुख पाने के लालच में मां की ममता उछाले मार रही थी, उसे रोक पाना न संजीव के बस में था और न रागिनी के। नौ महीने तो पंख लगाकर उड़ गये और वह घड़ी आ पहुंची जब मां की बरसों की साध पूरी हो गयी। संजीव का घर-आंगन नन्हें आशीष की किलकारियों से गूंज उठा। दादी को खेलने के लिए खिलौना मिल गया। रागिनी की जिम्मेदारियां बढ़ गयीं और संजीव को जीवन का लक्ष्य प्राप्त हो गया। आशीष ने सबका जीवन खुशियों से भर दिया था। पूरा घर बस उसके इर्द-गिर्द ही घूमता रहता था।

संजीव के दिल में यह शंका धुंधली पड़ गयी थी कि आशीष उनका नहीं, बल्कि किसी और का बेटा था। उन्होंने कभी यह शक रागिनी के सामने जाहिर नहीं किया। आशीष को उन्होंने बेइन्तहा प्यार दिया। उसकी छोटी से छोटी ख्वाहिश को पूरा किया। उसको कभी हल्का सा बुखार भी आ जाता तो संजीव पूरी रात जाग कर उसकी देखभाल करते थे। जान से ज्यादा प्यार करते थे संजीव अपने बेटे से। उन्होंने आशीष को बहुत अच्छे संस्कार दिये। उसके लिए अच्छी से अच्छी शिक्षा का इंतजाम किया। शहर के सबसे अच्छे और मंहगे स्कूल में उसका एडमिशन करवाया। आशीष पढ़ाई में हमेशा अच्छा रहा। हर कक्षा में कभी फर्स्ट, कभी सेकेन्ड आता रहा। यही नहीं मेडिकल की पढ़ाई के लिए वह पहले ही अटेम्प में सिलेक्ट हो गया। डॉक्टरी की पढ़ाई का यह उसका तीसरा साल चल रहा था। संजीव और रागिनी को अपने होनहार बेटे पर नाज था।

आशीष जब पन्द्रह बरस का था, तो उसकी प्यारी दादी उसे छोड़ कर हमेशा के लिए चली गयी। बुढ़ापा था। उम्र हो चुकी थी। मगर जाते वक्त तक खुश थी दादी। हर वक्त पोते के प्यार में डूबती-उतराती रहती थी। अन्तिम वक्त में भी उसकी ही गोद में सिर रख कर चिरनिद्रा में सो गयी थी। तब आशीष बहुत रोया था। दादी का लाडला था। कई दिन तक उदास रहा। उदास तो रागिनी और संजीव भी बहुत थे, मगर यह तो प्रकृति का नियम है, जो आया है एक दिन जाएगा। आज प्रकृति का वही नियम एक बार फिर संजीव के सामने आ खड़ा हुआ था। उसकी प्यारी रागिनी चली गयी। फर्क इतना था कि यह उसकी जाने की उम्र नहीं थी। अभी तो बहुत सारे सपने साथ देखने थे, साथ पूरे करने थे। आशीष को दूल्हा बनाना था, ब्याह रचाना था, उसका घर बसाना था, उसके बच्चे खिलाने थे कितने सारे काम बचे हुए थे और रागिनी वह सारे काम संजीव के कंधे पर डालकर चल दी। रात भर संजीव की आंखों के आगे बीते साल चलचित्र की भांति गुजरते रहे। सुबह आशीष ने आकर जब चाय का प्याला उन्हें थमाया, तो उनकी लाल-सुर्ख आंखें देखकर उसकी भी आंखें भर आयीं। बाप-बेटा बड़ी देर तक एक दूसरे के गले लग कर सिसकते रहे। दोपहर बाद घर की घंटी बजी तो अनजान आशंका से संजीव का दिल धड़क उठा। आशीष अपने कमरे में सो रहा था। वह उठे, दरवाजा खोला तो सामने वही आगन्तुक खड़ा था, जिसने अपना नाम कल अभय बताया था। संजीव ने उससे हाथ मिलाया और अन्दर आने का रास्ता दे दिया। अभय शालीनता से भीतर आया और सोफे पर बैठते हुए पूछा, आशीष नहीं है? सो रहा है। संजीव ने संक्षिप्त सा जवाब दिया और पास वाले सोफे पर बैठ गया। मन आशंकाग्रस्त था पता नहीं यह क्यों आया है? कहां से आया है? क्या बात करनी है?

जी, कल आपने पूरा परिचय नहीं दिया था। आप रागिनी को कैसे जानते हैं? आपके बारे में रागिनी ने कभी नहीं बताया? संजीव ने एकसाथ ही कई सवाल दाग दिये। संजीव जी, रागिनी मेरे साथ कॉलेज में पढ़ती थी। बस तीन साल का साथ था हमारा। हम सिर्फ दोस्त थे और कुछ नहीं। फिर मैं मेडिकल की पढ़ाई के लिए अपनी बड़ी बहन के पास अमेरिका चला गया। वहां से लौटकर मैंने पुराने शहर में अपना हॉस्पिटल बनाया। आरोग्य नर्सिंग होम। ये तो बहुत विख्यात नर्सिंग होम है। मेरी मां रागिनी को लेकर वहां जाती थी इलाज के लिए। संजीव अचानक याद करके बोल उठे।

जी तभी रागिनी से दोबारा मुलाकात हुई थी। उन दिनों वह बहुत परेशान थी। उसकी हालत देख कर तो मैं उसे पहचान भी नहीं पाया था। आपकी मां के सामने हमने जाहिर नहीं किया था कि हम एकदूसरे को जानते हैं। रागिनी मां बनना चाहती थी, किसी भी कीमत पर। तब मैंने उसके सारे टेस्ट करवाये थे। वह मां बनने के लिए पूर्णतः काबिल थी। एक दिन जब वह मेरे पास अकेले आयी तो मैंने उससे कहा कि वह आपका टेस्ट करवाये। क्योंकि मुझे शक था कि कमी आप में है। मगर उसने मना कर दिया। उसने साफ कह दिया कि वह अपने पति को खुशी देना चाहती है, कमी होने का अहसास कराके दुखी नहीं करना चाहती। वह कई दिन तक मेरे पास आती रही, मैं उसे समझाता रहा कि तुम्हें दवाइयां खाने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि तुम पूरी तरह मां बनने के काबिल हो। अचानक एक दिन उसने मेरे सामने एक मांग रख दी। उसने कहा कि उसे मुझसे एक बच्चा चाहिए। मैं उसको अपने शुक्राणु देने को तैयार था, मगर वह आर्टिफिशल तरीके से गर्भ धारण नहीं करना चाहती थी। फिर हमारे बीच सहमति से रिश्ता कायम हुआ। कई बार। वह दवा के बहाने से मेरे नर्सिंग होम में आती थी। प्रेग्नेंट होने के बाद वह बहुत खुश थी।

कमरे में सन्नाटा पसर गया। संजीव सिर झुकाये बिस्तर पर बैठे थे और आशीष के कदम जैसे बाथरूम के दरवाजे पर ही चिपक गये थे। अचानक आशीष ने आगे बढ़कर पापा का सिर अपने सीने में भींच लिया और थरथराती आवाज में बोला, मेरे पापा सिर्फ आप हैं सिर्फ आप आंसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा और संजीव की सारी शंकाएं इस सैलाब में बह गयीं।

उसने मेरा बहुत आभार जताया था, मगर मुझसे यह भी साफ कह दिया था कि बच्चा सिर्फ उसका है, उस पर मेरा कोई हक नहीं है और न मैं कभी भविष्य में उस पर अपना हक जताने की कोशिश करूं। इसके बदले में उसने मुझे पैसे देने की भी पेशकश की थी, मगर मैंने मना कर दिया था। मेरे लिए उसकी खुशी ही सबकुछ थी। उसके बाद मैं रागिनी से कभी नहीं मिला। हां, एकाध बार फोन पर जरूर बात हुई थी। अभय क्षण भर को रुके तो संजीव अधीरता से बोल पड़े, फिर इतने सालों बाद आप क्यों आये हैं? संजीव का मन अनजान आशंका से कांप रहा था।

अखबार में रागिनी की तेरहवीं का विज्ञापन देखा था। खुद को रोक नहीं पाया। कई सालों से मन छटपटा रहा था अपने बेटे को देखने के लिए। रागिनी ने फोन पर बताया था कि बेटा हुआ है, कहा था झ्र मेरा बेटा हुआ है, तुम्हारा धन्यवाद मुझे और मेरे परिवार को यह खुशी देने के लिए। जब मैंने उसे देखने का इसरार किया तो उसने मना कर दिया। बोली, मुझे शर्मिंदगी महसूस होगी। जब मर जाऊं तब देख लेना कभी उसे। रागिनी के मन में इस बात की गिल्टी थी कि उसने तुमको धोखा दिया, मगर संजीव, यह उसने तुम्हारी खुशी के लिए किया था। वह तुमको इस बात का अहसास भी नहीं होने देना चाहती थी कि तुममें कोई कमी है। वह तुमसे बहुत प्यार करती थी। फिर अब आप क्यों आये हैं? आप क्यों यह बातें मुझे बता रहे हैं? क्या आप आशीष को वापस पाना चाहते हैं? या उसे यह सब बता देना चाहते हैं? प्लीज ऐसा मत करिएगा संजीव की आवाज थरथराने लगी।

डॉ. अभय तुरन्त उठ कर उनके पास आये और उसके कन्धे पर हाथ रख कर वहीं सोफे पर बैठ गये, बोले, अरे, नहीं, नहीं आप मुझे गलत समझ रहे हैं। मैं सिर्फ अपने दिल के हाथों विवश होकर कल रागिनी की तेरहवीं में आया था। मन में यह इच्छा भी थी कि इस बहाने से एक नजर अपने बेटे को देख सकूं। सो देख लिया। मेरा उस पर कोई अधिकार नहीं है, आपने उसको पाला है, उसे प्यार दिया है, उसका भविष्य बनाया है, वह आपका ही है और हमेशा रहेगा। मैं तो बस एक चाह लेकर आया था आपके पास कैसी चाह? संजीव ने जल्दी से पूछा। संजीव, मैंने शादी नहीं की है और न ही मेरी सम्पत्ति का भारत में कोई वारिस है। पुराने शहर में मेरा जो अस्पताल और घर है, वह मैं आशीष के नाम करना चाहता हूं। आशीष डॉक्टर बनने वाला है, यह मैं जानता हूं। मुझे उम्मीद है तुम इसके लिए न नहीं कहोगे। मैं अपनी विल बनाकर तुमको दे जाऊंगा। तीन साल बाद मैं अमेरिका अपनी बड़ी बहन के पास शिफ्ट हो जाऊंगा। मैं वहां एक मेडिकल कॉलेज में पढ़ाने की इच्छा रखता हूं। अब यह तुम्हारे ऊपर है कि तुम कब और कैसे आशीष को इस विल के बारे में बताओ। संजीव यह सब सुन कर सन्न बैठे थे। उनको समझ में ही नहीं आ रहा था कि इस औफर को वह सौगात समझें या मुसीबत। वह क्या कहेंगे आशीष से कि अभय उसका कौन है? क्यों वह अपनी करोड़ों की प्रॉपर्टी आशीष को दे रहा है? क्या आशीष यह सब जान कर सहज रह पाएगा? कहीं वह मुझसे दूर तो नहीं हो जाएगा? कहीं वह अपने असली पिता के साथ रहने की जिद तो नहीं कर बैठेगा? अगर ऐसा हुआ तो मेरा क्या होगा? बुढ़ापे में मैं बिल्कुल अकेला हो जाऊंगा यह सब सोच कर संजीव कांप उठे। बोले, मैं मैं आपको सोच कर जवाब दूंगा डॉ। अभय ने ठंडी सांस ली और उठ खड़े हुए। जेब से अपना विजिटिंग कार्ड निकाल कर उन्होंने संजीव के हाथ पर रखा और बोले, उम्मीद है आप मुझे गलत नहीं समझेंगे। आप सोच लें तो मुझे फोन कर लीजिएगा। मुझे आपके जवाब का इन्तजार रहेगा। मेरे यहां आने का आशय आपको या आशीष को दुख पहुंचाने का हरगिज नहीं था। आशीष भले मेरा खून है, मगर उसके पिता आप हैं। वह सिर्फ आपका ही है। मैं तो बस उसे एक नजर देखना भर चाहता था। कहकर डॉ। अभय ने हाथ जोड़ दिये। संजीव ने उनके जुड़े हुए हाथ थाम लिये। आंखें आंसुओं से भीग गयीं। डॉ। अभय चले गये। संजीव के दिमाग में विचारों की आंधी चल रही थी। आशीष को क्या बताएं? कैसे बताएं? बताएं कि न बताएं? वह किसी फैसले पर नहीं पहुंच पा रहे थे। शाम हो गयी थी। आशीष भी उठ गया था। संजीव उसके कमरे में पहुंचे तो वह पुराने एल्बम में खोया हुआ था। संजीव ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और पलंग पर उसकी बगल में बैठ गये। एल्बम में आशीष के बचपन से लेकर ग्रेजुएशन तक की फोटोज थीं। दो चार पन्ने पलटने के बाद संजीव अचानक एक फोटो को गौर से देखने लगे। उस फोटो में सब लोग ड्राइंग रूम में टीवी के सामने बैठे थे। नन्हा आशीष रागिनी की गोद में था, बगल में मां और संजीव बैठे हंस रहे थे। उस फोटो पर हाथ फेरते हुए संजीव बोले, बेटा, जब तुम्हारी मां से मेरी शादी हुई थी तब पहली बार हमारे घर पर रंगीन टीवी आया था। यह वही टीवी है। तुम्हारे नानाजी ने दिया था। उन दिनों महाभारत सीरियल आया करता था। हम सब बड़े शौक से देखते थे। इसी टीवी से मुझे महाभारत की कथाओं का ज्ञान मिला था। तुम्हें पता है धृतराष्ट्र और पांडु अपने पिता विचित्रवीर्य के पुत्र नहीं थे, बल्कि उनके बड़े भाई वेद व्यास के पुत्र थे, जो संन्यासी हो चुके थे। विचित्रवीर्य की मृत्यु के बाद उनकी माता सत्यवती ने उनके बड़े भाई वेद व्यास से आग्रह किया था कि वह उनकी दोनों बहुओं को गर्भवती करें। अपनी मां के कहने पर वेद व्यास ने उनकी दोनों बहुओं को गर्भवती किया था। वास्तव में धृतराष्ट्र और पांडु वेद व्यास के पुत्र थे, मगर माने गये विचित्रवीर्य के। इसी तरह पांडु के पांचों बेटे भी उनके अपने पुत्र नहीं थे, बल्कि पांच अलग-अलग शक्तियों के संसर्ग से उत्पन्न हुए थे। मगर माने गये पांडु के ही बेटे

हां, मुझे यह कहानी पता है पापा। हमारे देश का इतिहास, हमारे धर्मग्रन्थ बताते हैं कि पहले के जमाने में इन बातों को पाप नहीं माना जाता था, इस तरह के सम्बन्ध समाज में पूरी तरह स्वीकार्य थे। जरूरी नहीं था कि किसी बच्चे का पिता वही हो, जिससे उसकी मां ने शादी की हो। आज भी ऐसी प्रथाएं कई समाजों में हैं। बच्चा पाने के लिए शादीशुदा स्त्री दूसरे पुरुष से सम्बन्ध बनाने के लिए आजाद है। कई समाजों में तो शादी से पहले शारीरिक सम्बन्ध बनाना और बच्चे पैदा करना आवश्यक है। उसके बिना वे शादी ही नहीं करते। धरती पर जीवन को चलते रहने के लिए बच्चों का पैदा होना जरूरी है। अब आप देखिये आईवीएफ पद्धति के अन्तर्गत हम कभी-कभी दूसरे पुरुष का वीर्य लेकर औरत को गर्भवती बनाते हैं। इसमें कोई अपराध नहीं है। हर इन्सान चाहता है कि उसके घर में बच्चे हों, खुशियां आयें। हां, पर! संजीव कुछ कहते-कहते रुक गये। पर क्या पापा? आशीष ने पूछा। जब बच्चे को पता चलता होगा कि उसका असली पिता कौन है, तब उसका दिल बंट जाता होगा। संजीव मायूसी से बोले। अरे पापा, ऐसा कुछ नहीं होता है। पैदा करना कोई बड़ा काम नहीं है। बच्चे को पालने वाला, उसे प्यार देने वाला,उसका भविष्य बनाने वाला ही उसका पिता होता है। यह जानते हुए भी कि बच्चे में उसका डीएनए नहीं है, फिर भी उसे दिल से लगा कर रखना बड़ी बात है। उस प्यार के आगे दुनिया की हर नियामत छोटी है। तुम ऐसा मानते हो बेटा? संजीव ने उत्सुकता से पूछा। हां पापा बिल्कुल। आखिर भगवान कृष्ण भी तो बाबा नन्द और मां यशोदा को ही अपना माता-पिता मानते थे, भले उनके असली पिता वासुदेव और मां देवकी थे। पैदा करने वाले से पालने वाला बड़ा होता है। कहते हुए आशीष बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। बाथरूम के दरवाजे की ओर बढ़ते हुए अचानक पलट कर बोला, पापा, वो जो कल अंकल आये थे, वह आज आने के लिए कह रहे थे न? हां, वो आये थे, जब तुम सो रहे थे। संजीव ने संक्षिप्त सा जवाब दिया। अच्छा! वो कुछ बताना चाहते थे न पापा? आशीष ने जिज्ञासा प्रकट की। हां क्या बताना चाहते थे? यही कि वह तुम्हारे पिता हैं कमरे में सन्नाटा पसर गया। संजीव सिर झुकाये बिस्तर पर बैठे थे और आशीष के कदम जैसे बाथरूम के दरवाजे पर ही चिपक गये थे। अचानक आशीष ने आगे बढ़कर पापा का सिर अपने सीने में भींच लिया और थरथराती आवाज में बोला, मेरे पापा सिर्फ आप हैं सिर्फ आप आंसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा और संजीव की सारी शंकाएं इस सैलाब में बह गयीं। ■

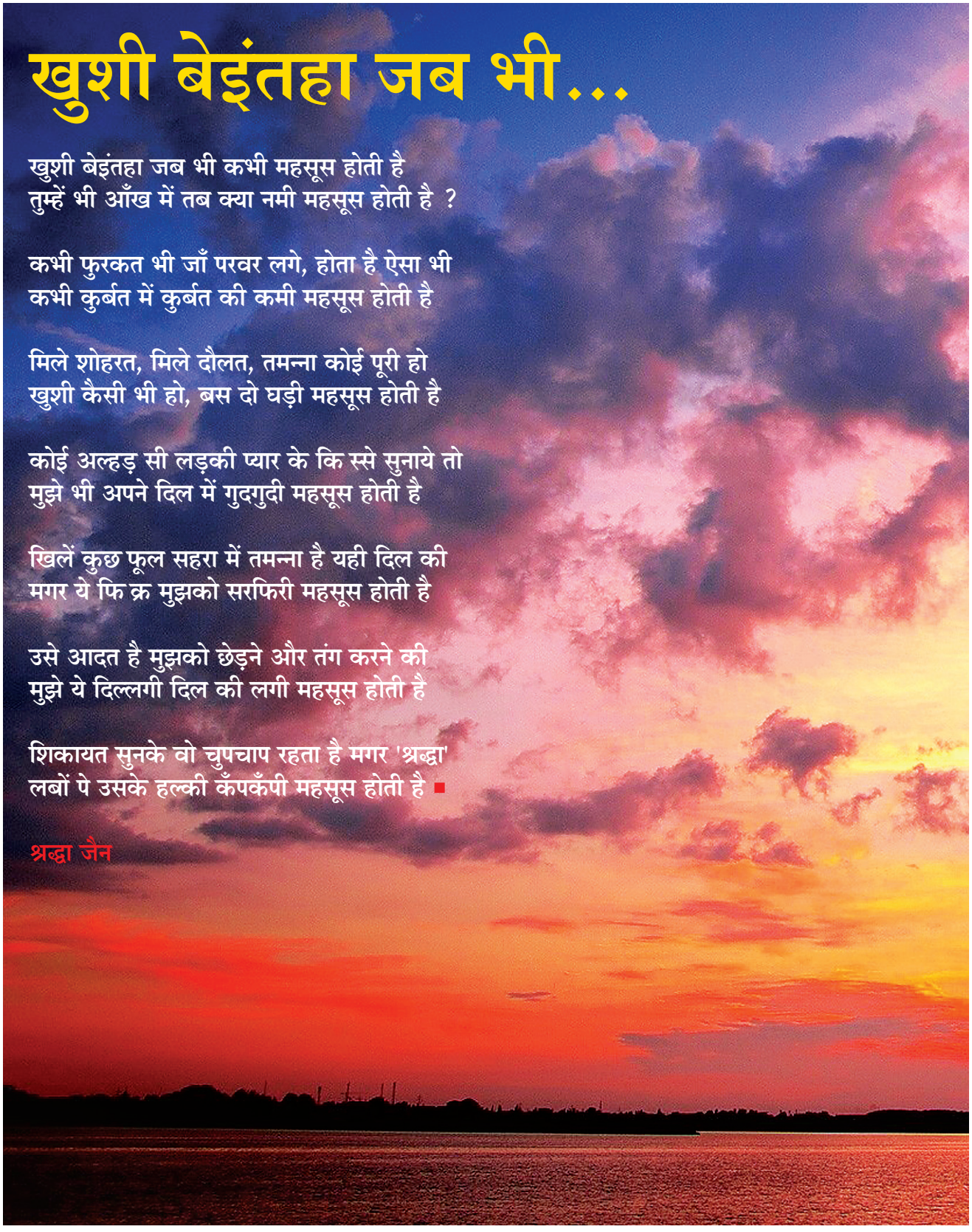

खुशी बेइंतहा जब भी...

खुशी बेइंतहा जब भी कभी महसूस होती है
तुम्हें भी आँख में तब क्या नमी महसूस होती है ?

कभी फुरकत भी जाँ परवर लगे, होता है ऐसा भी
कभी कुर्बत में कुर्बत की कमी महसूस होती है

मिले शोहरत, मिले दौलत, तमन्ना कोई पूरी हो
खुशी कैसी भी हो, बस दो घड़ी महसूस होती है

कोई अल्हड़ सी लड़की प्यार के कि स्से सुनाये तो
मुझे भी अपने दिल में गुदगुदी महसूस होती है

खिलें कुछ फूल सहरा में तमन्ना है यही दिल की
मगर ये फि क्र मुझको सरफिरी महसूस होती है

उसे आदत है मुझको छेड़ने और तंग करने की
मुझे ये दिल्लगी दिल की लगी महसूस होती है

शिकायत सुनके वो चुपचाप रहता है मगर 'श्रद्धा'
लबों पे उसके हल्की कँपकँपी महसूस होती है ■

श्रद्धा जैन